

Vol. II
No. 17



Monday
5th October, 1953

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS	PAGES
Business of the House	843—844
Petition regarding the increase in Salaries and Grades of Process Servers etc.—referred to Petition Committee	844—845
L. A. Bill No. XV of 1953, the Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill, 1953—1st reading not concluded	845—856
Motion for the grant of 1 crore of rupees	857
L. A. Bill No. XV of 1953, the Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill, 1953—1st reading not concluded	857—883
Half an Hour Debate	883—892

Note:—In this part, a star at the beginning of the speech denotes confirmation not received.

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

MONDAY, 5TH OCTOBER, 1953

The House met at Half Past Two of the Clock

[*Mr. Speaker in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS

(*See Part I*)

Business of the House

Mr. Speaker : We shall now take up Short-Notice question.

Shri V. D. Deshpande (Ippaguda): If I remember right, it was decided in the Business Advisory Committee that questions of Saturday would be taken up on Monday.

Mr. Speaker : We have not got the questions of Saturday with us. We have only got the questions of 1st October.

Shri V. D. Deshpande : Yes, 1st October.... (*Laughter*)

Shri M. Buchiah (Sirpur): But if there are questions which have been given notice of for Saturday.....

Mr. Speaker : Let *Shri Ch. Venkatrama Rao* put the Short Notice Question.

شری بی۔ ہنمنت راؤ (ملک)۔ فرسٹ اکتوبر کو تعطیل دیکھی تھی کیونکہ ہاؤز کے سامنے بزنس نہیں تھا اسلئے اوس دن کے سوالات آج لئے جائیں تو اچھا ہوگا۔

مسٹر اسپیکر۔ آپ اسٹرکشنس (Instructions) (پڑھ لیجئے۔
اون کے تحت ایسے سوالات ان اسٹارڈ (Unstarred) ہو جاتے ہیں۔

Shri Ch. Venkat Rama Rao (Karimnagar): Whether it is a fact that the Congress President, *Shri Swami Ramanand Tirth* reported to the Government about the situation on his return from Sirpur on 13-7-1953?

If so, what are the details of the report and whether the hon. Minister will place it on the table of the House ?

Is it not a fact that the police is still continuing its terror and framing false cases against the Trade Unions ? If so, why ?

Mr. Speaker : It appears that this question is wrongly addressed. It should be addressed to the Chief Minister.

Now, there is one petition to be presented by Shri Ch. Venkat Rama Rao.

Shri V. D. Deshpande : The Chief Minister is always very active to reply. He can reply now. [Laughter]

On a point of information, Sir.

اگر کوئی سوال کسی دوسرے منسٹر کے نام پر غلطی سے اڈریس (Address) کیا جائے تو کیا یہ لازمی ہوتا ہے کہ وہ سوال ممبر کو واپس بھیج دیا جائے ؟ کیا ایسا نہیں ہو سکتا کہ سکرٹری کے آفس سے اس میں چینج (Change) کر کے متعلقہ منسٹر کے پاس وہ روانہ کر دیا جائے ۔

مسٹر اسپیکر - بات یہ ہے کہ اگر آفس سے کرکشن (Correction) ہو تو ممکن ہے کہ سوال کرنے والے کا جو منشا ہے وہ فوت ہو جائے۔ اسلئے یہ احتیاط کرنی پڑتی ہے ۔
شری وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے - اس خاص کوئسچن کے متعلق یہ جواب ملا تھا کہ آج اسکو رکھا گیا ہے۔ رکھنے کے بعد یہ کہا جا رہا ہے کہ وہ اس منسٹر سے متعلق نہیں ہے۔

مسٹر اسپیکر - ایسے بہت سے سوالات جو رائگلی اڈریس (Wrongly address) کئے جاتے ہیں وہ نامعلوم کئے جاتے ہیں ۔

Petition re: the increase in Salaries and Grades of Process servers

شری سی۔ ایچ۔ وینکٹ رام راؤ - میں حسب ذیل پیشین ہاؤز میں پیش کرتا ہوں جس کے دستخط کنندگان مسرس راجو، عبد الرحیم - عبد الحکیم اور دیگر دس اشخاص ہیں۔ اپنے منتہلی پیمٹ اور وظائف وغیرہ کے سلسلہ میں درخواست پیش کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ ” یہ بد نصیب عملہ طلبانہ جو رات اور دن بلا لحاظ موسم پیدل دوڑ دھوپ، کوسوں کی منزلیں ہر ماہ طے کرتا ہے جسکا گریڈ درج ذیل ہے اور اسکا نفاذ سنہ ۱۹۶۰ء سے ہوا ہے۔ یلیف ۲۰ تا ۳۰ الونس گرائی ۱۲ - جوانان طلبانہ تنخواہ ۱۰ تا ۲۰ الونس گرائی ۱۲

روپیہ - ڈریس طلبانہ چنکو رات اور دن ہر موسم میں کوسوں کی منرلیں طے کرتے ہوئے دیہات میں جا کر زمین پر سونا پڑتا ہے عملہ طلبانہ کو ہر سال فی کس ایک چھتری اور ایک پیانگ دیا جانا چاہئے - تاکہ سمن وغیرہ محفوظ رکھ کر بارش میں خراب نہ ہوئے دیں -

ملازمین ادنی علاقہ دیوانی قواعد رخصت و وظیفہ سے مستفید ہوا کرتے ہیں لیکن یہ مظلوم طبقہ عملہ طلبانہ اس سے ہمیشہ کیلئے محروم رہا ہے - ایسی مثال کسی اور سرشتہ کے ملازمین ادنی میں نہیں مل سکتی - اس عمل کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ عملہ طلبانہ کے ہاتھ و پیر میں جب تک قوت باقی رہے وہ ملازمت کر سکتا ہے - یلیفی کی خدمت نہ صرف اہل قلم کی ہے بلکہ ایک اہم ذمہ دارانہ خدمت ہے لیکن اسکی خدمت کو درجہ ادنی قرار دیا گیا ہے - حالانکہ یہ لاکھوں روپیہ کے مالیت ضبطی کے کاروبار سخت خطرہ کی حالت میں انجام دیتا ہے - عملہ طلبانہ کی ملازمت عاملانہ دورہ کی ہے - اسلئے قواعد دورہ کے تحت انکو سفر خرچ عطا فرمایا جائے - یلیف کے لئے فی ماہ ۲۰ روپیہ اور جوانان طلبانہ کے لئے فی ماہ ۱۰ روپیہ الونس سواری مستقلانہ منظور فرمایا جائے - ملازمین ادنی علاقہ دیوانی کو سال سنہ ۲۰ ف سے جو مراعات اس وقت تک عطا فرمائے گئے ہیں عملہ طلبانہ کو بھی اسی سال سے صدر مراعات عطا فرمائے جا کر بقایا منظور و سرفراز فرمایا جائے

Mr. Speaker : This petition is referred to the Committee on Petitions.

L. A. Bill No. XV of 1953, The Hyderabad Agricultural Debtors' Relief Bill

Mr. Speaker : Now, we shall take up item No. 3 : First reading of L. A. Bill No. XV of 1953.

شری گوپی ڈی - گنگاریڈی (نرمل - عام) - اس بل کا ترجمہ کر کے نہیں دیا گیا -

مسٹر اسپیکر - ترجمہ تقسیم کیا گیا ہے -

Minister for Education and Rural Reconstruction (Shri Devi Singh Chauhan) : Mr. Speaker, Sir, I beg to move :

"That L. A. Bill No. XV of 1953, a Bill to consolidate and amend the law for the relief of Agricultural Debtors in the State of Hyderabad, be read a first time."

Mr. Speaker : Motion moved.

श्री. देवेशग चौहान :—अध्यक्ष महोदय, हैदराबाद अग्रिकल्चरल डेब्टर्स रिलीफ बिल (Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill) आज आप के सामने रखा जा रहा है। उसका मकसद यह है कि हमारे मुक्त में जो अग्रिकल्चरिस्ट (Agriculturist) हैं उनके ऊपर कर्ज का बोझ बहुत बड़ा हुआ है; और उसको कंट्रोल करने की जरूरत है। कुछ जमाने से इसके बारे में तशव्वर सोंचे जा रहे हैं। इसकी इतना बहुत पुरानी रहें है। हमारे स्टेट में इसके बारे में कई कानून बनाये गये हैं। जबसे हिंदुस्थान में अंग्रेजों की हुकूमत कायम हुई और जब पीस अँड ट्रैन्क्विलिटी (Peace and Tranquility) कायम हुई तब से, अग्रिकल्चरल अिनडेब्टेडनेस (Agricultural indebtedness) का काम करने की कोशिश हो रही है। ब्रिटिश इंडिया में सबसे पहले इस तरह की कोशिश हुई। खास तौर पर १८५७ के बाद इस तरह की कोशिश की गई। सबसे पहले १८७९ में डेक्कन अग्रिकल्चरिस्ट रिलीफ अँक्ट (Deccan Agriculturist Relief Act) आया। उसके बाद अलग अलग सूबों में अलग अलग कानून बनाये गये। लेकिन हमारे स्टेट में इस तरह का कानून १९३९ में बनाया गया वह बहुत ही माइल्ड (Mild) था। हैदराबाद स्टेट में रूरल अग्रिकल्चरल इंडेब्टेडनेस (Rural Agricultural indebtedness) के बारे में कुछ इनवेस्टिगेशन (Investigation) किया गया था। १८७० में यह पहले पहल औरंगाबाद में फरदून जी जमशेटजी ने किया था। १८७० में ६४ फीसद काश्तकार मकरूज थे। लेकिन यहां पर कोई ऐसा कानून तयार नहीं हुआ।

१९३६ में श्री. भरूचा को जो रेव्यू न्यू डिपार्टमेंट में अफसर थे, उन्हें इसकी जांच के लिये कहा गया था। और उन्हें यह हिदायत दी गई थी कि अग्रिकल्चरिस्ट इंडेब्टेडनेस के बारे में तहकीकात करें, और एक रिपोर्ट पेश करें। उन्होंने जो रिपोर्ट पेश की उसकी बिना पर १९३९ में एक दस्तुल अमल बनाया गया जो कि कनसिलियेशन (Conciliation Debt) के बारे में था वह कानून जो कर्ज की हद तक था श्री. भरूचा का जो रिपोर्ट पेश हो गया था उसमें उन्होंने ३९० सवाजियात का इनवेस्टिगेशन (Investigation) किया था। इसमें उन्होंने ५ हजार फॅमिलीज (Families) का लिविंग (Living) देखा। उसके ज्यादा तफसील में मैं नहीं जाना चाहता, लेकिन इतना कहना चाहता हूँ कि श्री. भरूचा ने जो इनवेस्टिगेशन किया था, उसमें कुल ९ करोड़ रुपये का कर्जा है ऐसा मालूम होता है। ऊपर से यदि हर फॅमिली का अवेरज (Average) कर्जा निकाला जाय, तो कुछ १९० रुपये फी फॅमिली कर्जा आता है। अगर यह कर्जा फी फॅमिली निकाला जाय तो तकरीबन ३० रुपये फी बादमी आता है। इस कर्ज का हिसाब जमीन पर किया जाय तो हर एकर (Acre) के लिये १० रुपये कर्ज का बंसाव मालूम हुआ। इन्हीं बाक्यात की बिनापर, भरूचा की रिपोर्ट की बिना पर हमारे यहां दो कानून बनाये गये। उसमें से एक हैदराबाद डेब्ट्स कनसिलियेशन अँक्ट (Hyderabad Debts Conciliation Act) था और दूसरा हैदराबाद मनीलेंडर्स अँक्ट (Hyderabad Money Lender's Act) था। डेब्ट्स कनसिलियेशन अँक्ट का मनशा यह था कि डेब्टर (Debtor) और क्रेडिटर (Creditor) दोनों को एक जगह बुलाया जाय और दोनों के बीच बीच मुझहमत की कोशिश की जाय। इस तरह यदि डेब्टर और क्रेडिटर राजी हो जायें तो फिर कर्जा कमी करने की कोशिश की जाय। अगर दोनों में मसालिहत हो तो

कर्जा कम किया जा सकता था। लेकिन यह देखा गया कि इस तरह मसालिहत से कर्जा कम करने के लिये क्रेडिटर कभी तैयार नहीं होते थे।

इस कानून के तहत जुमला ११,७१२ केसेम डेटर्स कनसिलियेशन बोर्ड (Debtors' Conciliation Board) के सामने आई थी। उन मुकद्मात में अलग अलग मेकशन के तहत कुल ११४ लाख की रकूमात के कर्ज थे। उसमें से २२६६ केसेम में कनसिलियेशन (Conciliation) किया गया। इस में ११ लाख ९८ हजार रुपये की रकम कम की गई। इस पर से यह दिखता है कि इस कनसिलियेशन बोर्ड से बहुत ही कम फायदा हुआ। गोया कर्ज में एक फीसद भी कमी नहीं हुई। जुमला ९० करोड़ में से सिर्फ तकरीबन १२ लाख रुपये की ही रकम कम की जा सकी थी। फायदा इस बोर्ड के जरिये से हुआ था।

जो बिल आज यहां लाया जा रहा है यह बहुत देरी से लाया जा रहा है। दूसरे स्टेटों में तो इस तरह का कानून इसके पहले ही आ गया था। बंबई और मद्रास में १९१४-१८ के जंग के बाद जो बड़ा स्लंप (Slump) आया था, उस वक्त यह कानून लाया गया था, और डेट्स कनसिलियेशन ऐक्ट (Debts Conciliation Act.) सन् १९३६-३७ में नाफिज किया गया था। लेकिन उनको पांच सात सालों के अनुभव से मालूम हुआ कि ऐसे कानून से कास्तकारोंको जितना फायदा पहुंचना चाहिये उतना नहीं पहुंचता है। इसके बाद १९३६-३७ में स्टेटों में कॉंग्रेस मिनिस्टरी आई। डेटर्स कनसिलियेशन ऐक्ट रिपील (Repeal) करके डेटर्स रिलीफ ऐक्ट्स (Debtors, Relief Acts) कायम किये गये। और कर्जदहंदा और कर्ज लेनेवाले दोनों को सुश रखने की कोशिश की गई। हमारे यहां इस तरह का कोई कानून अभी तक नहीं बना, यह कानून तो यहां बहुत पहले से ओव्हरड्यू (Overdue) है। और केशव अयंगर ने इसके सिलसिले में जो इनव्हेस्टिगेशन्स (Investigations) किये थे उनमें ६ मवाजियात शामिल थे। इस तहकीकात में ८९६ फॅमिलीज (Families) आई थीं। और उनका टोटल डेट्स ५ लाख हजार रुपये था। याने तकरीबन ५०० फॅमिली में ५ लाख ११ हजार का कर्जा था। इसका यदि फी कस हिसाब लगाया जाय तो २९ रुपये निकलता है, और भरूचा रिपोर्ट में जो हिसाब लगाया गया था वह ३० रुपये था। दोनों के इनव्हेस्टिगेशन में कुछ ज्यादा फरक नहीं आया है।

मैंने जो यह आदाद अर्ज किये, वैसे ही फिगर्स दूसरे प्रांतों में जो इनव्हेस्टिगेशन हुआ था उनमें भी पाये गये हैं। ऐसा एक इनव्हेस्टिगेशन मद्रास में १९४५ में किया गया था। उसके कुछ कंपैरेटिव्ह फिगरस (Comparative figures) मैं आप के सामने रखना चाहता हूं।

यह जो इनव्हेस्टिगेशन किया गया है वह पांच अक़्ताम में किया गया था। (१) बड़े जमीनदार, (२) मीडियम लैंड होल्डर्स (Medium Landholders), (३) छोटे लैंड होल्डर्स, (४) टेनंट्स (Tenants), (५) लैंड लेबरर्स (Land labourers)

मालूम हुआ कि १९३९ में जो बड़े जमीनदारों का कर्जा ३४.४ फीसद था, वह १९४५ में १०.८ फीसद हुआ। मीडियम लैंड होल्डर्स का कर्जा १९३९ में ४५.५ फीसद था, वह १९४५ में

४१ फीसद हुआ। स्मॉल होल्डर्स (Small holders) का कर्जा १९३९ में ३५.३ फीसद था, वह १९४५ में ३८.७ फीसद हुआ। टेनंट्स (Tenants) का कर्जा १९३९ में ५.४ फीसद था, वह १९४५ में ७ फीसद हुआ। लैंड लेबरर्स (Land labourers) थे। उनका कर्जा १९३९ में १.४ फीसद था। वह १९४५ में २.५ फीसद हुआ। इससे मालूम होता है कि टेनंट और लैंड लेबरर्स के कर्जों की फीसदी बढ़ी हुयी है।

केशव अयंगर ने जो इनव्हेस्टिगेशन (Investigation) किया है उसे देखने से भी मालूम होता है कि नीचे के तबके पर कर्जों का भार ज्यादा बढ़ा है। जो ३०० रुपये की कुंजे का कर्जा था वह ५७१ तक बढ़ा है। फीस जो ३० रुपये था वह २९ रुपये हुआ है।

मद्रास में जो सर्वे (Survey) किया गया है उसे देखने से मालूम होता है कि दूसरी जंग के बाद लैंडलॉर्ड की जमीन की आमदनी बढ़ी है, और उनके कर्जों में थोड़ा-सा कमी हुई है। लेकिन छोटे छोटे कास्तकार के कर्जों में इजाफा हुआ है। टेनंट्स और लैंड लेबरर्स के कर्जों में इजाफा हुआ है। यह हालात हमारे सामने हैं। हमारे यहां भी जो बड़े बड़े जमीनदार हैं उनके कर्जों में कुछ कमी हुई है, लेकिन जो छोटे छोटे कास्तकार हैं, या जो टेनंट्स और जिरायती मजदूर हैं, उनके कर्जों में इजाफा ही हुआ है। हमारे यहां थोड़ा-सा सर्वे (Survey) का काम हुआ है उससे भी यही मालूम होता है।

यह बात सही है कि यह कानून इसके पहले ही जाना चाहिये था। यह एक अहम कानून है, और देरी से भी क्यों न हो आज यह असेम्बली के सामने आया है। तो मैं उमीद करता हूँ कि हाउस के सब मॅम्बर्स इसका स्वागत करेंगे और उसको पास करेंगे।

अब मैं इस कानून में जो बलग बलग दफात हैं, उनके बारे में कुछ बजाहृत करना चाहता हूँ। जो डेट्स कन्सिलियेशन (Debts conciliation) का कानून था, याने कर्जों के मसालिहत का जो कानून था, उसमें क्रेडिटर (Creditor) और डेब्टर (Debtor) की रायची सूची से कर्जों में कमी हो सकती थी। लेकिन अब यह जो कानून लाया जा रहा है, उसमें ऐसी बात नहीं है। इस कानून के लिहाज से कर्जों में कमी करने के लिये कोई मसालिहत नहीं होगी। क्रेडिटर यदि नहीं भी चाहे लेकिन अगर कर्जदार कास्तकार है तो उसका कर्जा कानून कम होगा।

• इस कानून में कास्तकारी की तारीफ की गई है। कास्तकार से मुराद वह आदमी है जो अग्रिकल्चरलिस्ट (Agriculturist) हो, और जिसकी नॉन-अग्रिकल्चरल आमदनी वार्षिकी फीसद से ज्यादा न हो, या उसका अन्नुअल इनकम (Annual income) ५०० रुपये से ज्यादा न हो। अगर जोइंट हिंदू फॅमिली (Joint Hindu Family) है तो नॉन-अग्रिकल्चरल इनकम (Non-agricultural income) ४० फीसद से या १५०० रुपये से ज्यादा नहीं होना चाहिये। इस कानून के तहत कर्जों में कमी करने की भी मुंजायश रखी गई है।

क्लॉज २२ में यह बताया गया है कि १ जनवरी, १९३५ के पहले जो कर्जदार थे उनके बारे में कोर्ट अकाउंट्स (Accounts) मंगायेगा और उनके इंटरेस्ट (Interest) में कमी करेगा। सिंपल इंटरेस्ट (Simple interest) लगाया जायेगा, और जो कर्जा तथा इंटरेस्ट है उसमें ४० फीसद कमी की जायेगी। कानून से ही १९३६ के पहले का जो कर्जा है उसमें एकदम से ४० फीसद की कमी कर दी गई है। १९३६ के बाद और १९४५ के पहले का जो कर्जा है उसमें और उसके इंटरेस्ट में ३० फीसद कमी करने का भी प्रावधान रखा गया है।

रेट आफ इंटरेस्ट (Rate of interest) के बारे में भी हुदूद लगाये गये हैं। १९३६ के पहले का जो कर्जा है उसका शेर सूद दोनों पार्टिज आपस में तय कर सकती हैं। यदि ऐसा तय न हो तो फिर यहां के मनीलेंडर्स अक्ट (Money Lenders Act) में जो शरेहसूद बताया गया है उस लिहाज से सूद लिया जायेगा। इन दोनों में से जो कम हो वह शरेहसूद रहेगा। यदि कोई कर्जा १९३६ के बाद का किंतु १९४५ के पहले का है तो उसकी बाबत भी इस कानून में यह रखा गया है कि दोनों पार्टिज इमको तय करें, या फिर जो शरेहसूद कानून से तय होगा वह ९ फीसद से ज्यादा न होगा। इन दोनों में से जो कम शरेहसूद होगा वही लिया जायेगा।

यदि कोई कर्जा १९४५ के बाद का होगा तो उस पर ज्यादा से ज्यादा ६ परसेंट सूद लिया जा सकता है। खास केसेस में अदालत ६ फीसद भी सूद रख सकती है। जो मुकद्मात अदालत के सामने पेश होंगे उनमें डेब्टर्स (Debtors) की माली हालत अदालत देखेगी, और उसकी पेइंग कैपैसिटी (Paying capacity) क्या है यह भी देखा जायेगा। उसकी जायदाद देखी जायेगी। डेटर की जायदाद का व्हैल्युएशन (Valuation) कोर्ट की तरफ से किया जायेगा। सिविल प्रोसिजर कोड (Civil Procedure Code) के तहत जो जो असेट्स (Assets) या जायदाद आती है उसको व्हैल्युएशन में नहीं लिया जायेगी। इसको छोड़कर बाक़ों का व्हैल्युएशन किया जायेगा और उसमें ४० फीसदी की कमी की जायेगी। क्लॉज ३० डेटर की पेइंग कैपैसिटी (Paying capacity) के बारे में है। उसकी पेइंग कैपैसिटी देखकर उसे ६० फीसद तक कम किया जायगा।

क्लॉज ३० में डेटर की पेइंग कैपैसिटी देखकर कर्जा ६० फीसद तक कम कर दिया गया है। कम किया हुआ कर्जा यदि ६० फीसद से कम है तो कर्ज में और भी कमी करने की गुंजायश रखी गई है। इस कानून के मुख्य प्रावधान्स आपके सामने रख दिये गये हैं।

[Mr. Dupty Speaker in the Chair]

लाजमी तौर पर कर्ज में कमी करने की गुंजायश इस बिल में रखी गयी है। हम ऑग्रिकल्चरल (Agricultural) कर्ज में कमी करना चाहते हैं। सिर्फ मसालि-हूत से या कनसिलियेशन से यह काम नहीं होने वाला है। माहिरीन की राय भी यही है। यदि हमें खेतका उत्पादन को बढ़ाना है और यदि हम ऑग्रिकल्चर का बढ़ावा देना चाहते हैं, तो कानूनकारों के कर्ज को हमें कम करना चाहिये। आज बोझा बढ़ा हुआ है, उसे कम करने के बारे में हमें सोचना

चाहिये और इसी मकसद से ऐवान के सामने यह बिल लाया गया है। मैं उमीद करता हूँ कि आप इस बिल की हिमायत करेंगे, और इसे पास करेंगे।

श्री. ए. राज रेड्डी :—पॉइंट ऑफ इनफरमेशन सर, ऑनरेबल मिनिस्टर साहब यदि क्लॉज ११ के बारे में वजाहत फरमायेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री. देवीसिंग चौहान :—इस कानून का जो दफा ११ है, वह मैं आप को पढ़ कर सुनाता हूँ।

“No application under Section 4 or 8 shall be entertained by the Court on behalf of or in respect of any debtor, unless the total amount of debts due from him on the date of the application is not more than Rs. 15,000.”

इस क्लॉज ११ का मतलब यह है कि जिस व्यक्ति का कर्ज १५,००० रुपये से ज्यादा है उसको काइतकार नहीं समझा जायेगा, और उसका यदि अप्लीकेशन कोर्ट के पास आता है तो उसे कोर्ट्स स्वीकार नहीं करेंगे।

* श्री بی۔ ڈی۔ ڈیشمکھ (بھوکردن - عام) - مسٹر اسپیکر سر - آج ہاؤس کے سامنے جو بل آیا ہے واقعی وہ بہت اہم اور ضروری بل ہے۔ آنریبل مسٹر نے خود اپنی ابتدائی اسپچ میں یہ بتلایا ہے کہ ملک کے حالات کے لحاظ سے اس قانون کی ملک کو کس قدر شدید ضرورت ہے۔ لیکن اس قانون کے لانے میں جو تاخیر کی گئی ہے اس کے لحاظ سے میں نہیں سمجھتا کہ آنریبل ممبر آف دی بل کسی تعریف کے مستحق ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ یہ لائق تعریف ضرور ہے لیکن یہ قانون حیدرآباد میں سنہ ۱۹۳۹ء میں آنا چاہئے تھا۔ مختلف کمیٹیوں نے اس بارے میں رپورٹس پیش کی ہیں۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ہندوستان کے دوسرے علاقوں میں سنہ ۱۹۳۵ء ۱۹۳۷ء میں یہ قانون آیا۔ بمبئی میں سنہ ۱۹۳۷ء میں آیا جہاں سے حیدرآباد کیلئے یہ قانون لایا جا رہا ہے۔ لیکن اس کے لئے بھی اتنی تاخیر کی گئی۔ مادھو راؤ کمیٹی نے بھی اس سلسلے میں اعداد و شمار دئے ہیں۔ جس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہمارے ملک میں کسانوں کی مقروضیت بڑھی ہوئی ہے اور فی کس ۳۰ سے ۵۰ تک قرض کی مقدار پہنچ گئی ہے۔ ایسی حالت میں جو ڈبٹ رلیف ایکٹ لایا جا رہا ہے وہ محض تکمیل ضابطہ نظر آتا ہے۔ ہمیں دیکھنا تو یہ ہے کہ ہمارے ملک کے کسانوں کو کس طرح قرض سے نجات دلانی جائے۔ یہ حکومت کی پالیسی کا اہم سوال ہونا چاہئے۔ محض اس طرح کا قانون پاس کر دینے سے یہ مسئلہ حل نہیں ہو جاتا۔ دیکھنا یہ ہے کہ آخر اس کسان کے اس طرح مقروض ہوجانے کی کیا وجہ ہوئی ہے۔ اسپچ حکومت کو سوجنا پڑیگا۔ کانگریس اگر برین رپورٹ جوشائع ہوئی ہے اس سے بھی یہ واضح ہوگا کہ بمبئی میں سنہ ۱۹۳۷ء میں یہ قانون پاس ہوا۔ اس سے پہلے اس نے مختلف صورتیں اختیار کیں۔ پھر بھی یہ معلوم ہوا کہ ہندوستان کے کسان کی مقروضیت کم ہوئی۔ برسواتھار جاعت یو پی - مدراس اور ساہی ہندوستان میں اس بات کو ملحوظ

کرچکی۔ اس قسم کا قانون لانے کے باوجود کسانوں کی مقروضیت بڑھتی ہی جا رہی ہے۔ یہ چیز پلاننگ کمیشن کے سامنے بھی آچکی ہے۔ ایسی صورت میں ہرگز یہ نہیں سمجھنا کہ یہ قانون کسانوں کی مقروضیت کو حل کرنے کا واحد ذریعہ ثابت ہوگا۔ میں تو یہ کہوں گا کہ یہ قانون ۲۰-۲۱ سال پہلے لایا جانا چاہیے تھا۔ لیکن حکومت کی لاپرواہی کی وجہ سے یہ نہوسکا۔ یہاں یہ سوال زیر بحث نہیں ہے کہ آیا یہ قانون متصلہ صوبات کے قوانین سے بہتر ہے یا کیا ہے۔ لیکن بمبئی میں سنہ ۱۹۴۷ء میں جو قانون بنایا گیا دیکھنا یہ ہے کہ اس قانون کے تجربہ کے لحاظ سے آیا ہمارے موجودہ قانون کو مدون کیا گیا ہے یا نہیں۔ بمبئی کے ایکٹ کی خرابیاں یا خامیاں اس قانون میں دور کی گئی ہیں یا نہیں۔ لیکن اس قانون میں ایسی کوئی خاص کوشش نظر نہیں آتی۔ ”مقروض“ کی جو تعریف رکھی گئی ہے میں سمجھتا ہوں وہ ناسکمل ہے۔ اس میں انہوں نے یہ معیار مقرر کیا ہے کہ ایسے کاشتکار بھی اس میں آسکیں گے جنکی زراعت کے علاوہ ۲۳ فیصد آمدنی ہو۔ اس قانون کے ذریعہ جن حدود کے اندر ریف دینے کا طریقہ رکھا گیا ہے اس سے مقروض قرض کے بوجھ سے نجات پانے والا نہیں ہے۔ آخر کسان کیوں مقروض ہوتا ہے ہمیں اس بنیادی مسئلہ پر سوچنا ہے۔ دوسری جنگ کے بعد باوجود زرعی پیداوار کی قیمتوں میں اضافہ ہوا لیکن چھوٹے کسان اپنے زرعی اخراجات اس اضافہ سے بھی پورے نہ کرسکے۔ اسکی ضروریات زندگی کی قیمتوں میں بھی اضافہ ہوتا گیا۔ بڑے لینڈ لارڈس کا بوجھ تو ہلکا ہوا، انہیں فائدہ پہنچا لیکن متوسط اور چھوٹا کسان اس تبدیلی سے مستفید نہوسکا۔ اسکی معیشت نہ بدل سکی۔ اسکے قرض میں اضافہ ہی ہوتا گیا۔ میں یہ واضح کردینا چاہتا ہوں کہ کسان جاہل ہونے سے یا پہلے ہی سے مقروض ہونے کی وجہ سے اسکا قرض بڑھتا نہیں گیا بلکہ قیمتوں میں اضافہ کے ساتھ جو گیارٹی اسکو ملنی چاہیے تھی نہ ملی۔ ہمارے ملک میں ایک ایسا طبقہ بھی ہے جو کسان سے اس کی ساری پیداوار خرید لیتا ہے۔ اور کافی عرصہ تک اس پیداوار کو اپنے پاس رکھکر گران قیمتوں پر بیچتا ہے۔ اور کنزیومرس سے بھی زیادہ رقم وصول کر کے قلع خوری کرتا ہے۔ ایک اور امر یہ ہے کہ حالات کے لحاظ سے زراعت کی ترقی کیلئے حکومت کو کسانوں کی جو مدد کرنی چاہیے تھی اس نے نہیں کی۔ اس طرح کسان ترقی نہ کرسکے۔ چھوٹے کسانوں کی زراعت میں کوئی اضافہ نہوسکا۔ ایک اور وجہ یہ ہے کہ چھوٹے چھوٹے قطعات پر کاشت کرنے والے کسانوں کو اپنی زمین میں ایک فصل کی بجائے جو دو تین فصلیں کاشت کرنا چاہیے تھا وہ اپنی زراعت کو دو فصلہ یا سہ فصلہ نہ بناسکے۔ علاوہ ازیں حکومت نے اوریگیشن کا مسئلہ بھی حل نہیں کیا۔ پراڈکٹیوٹی بڑھنے کیلئے اور پرانے طریقوں میں اصلاح کیلئے حکومت کو جو کوشش کرنی چاہیے تھی وہ نہیں کی گئی۔ دوسرے مالک زراعت کو ترقی کیلئے جس طرح سوچتے ہیں اور عمل کرتے ہیں ہندوستان کی حکومت نے ویسا نہیں کیا۔ ہم اپنی زراعت کی پراڈکٹیوٹی نہ بڑھاسکے۔ ان حالات میں دوسری جنگ کے بعد اجناس کی قیمتوں میں اضافہ کے باوجود کسان کے قرض کا بوجھ ہلکا نہیں ہوا۔ اسی ماحول میں خیدر آباد اور ہندوستان میں مٹی لندرس کا

ایک طبقہ پیدا ہو گیا۔ یہ طبقہ جو ۲۵ سے ۵۰ فیصد تک سود لیتا ہے اسکو روکنے کیلئے حکومت کو سوچنا چاہئے تھا۔ کوآپریٹو سوسائٹیز اور قرضہ بینکس قائم کر کے جس طرح کام کیا جانا چاہئے تھا نہیں کیا گیا۔ اسکا نتیجہ یہ ہوا کہ سوسائٹی کی خرابیوں کو حکومت محسوس کرتے ہوئے بھی ان منی لینڈرس (Money lenders) کو ختم کرنے پر عملاً حکومت آمادہ نہیں ہے۔ حالانکہ وہ یہ چاہتی ہے کہ انکو ختم کرے لیکن ختم کرنا ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اسکے امکان میں نہیں ہے۔ وجہ یہ ہے کہ متوازی طریقہ حکومت نے اختیار نہیں کیا ہے۔ جب تک کوئی متوازی طریقہ اختیار نہ کیا جائے یہ چیز ختم نہیں ہو سکتی کیونکہ ضرورت مند تو بہر حال ان کا متلاشی رہتا ہے۔ جو کوئی اسکو پیسہ دے وہ اسکے پاس جائیگا چاہے اسکے لئے جو بھی شرائط اسکو منظور کرنے پڑیں۔ یہاں کوآپریٹو کے بارے میں بہت کچھ کہا جاتا ہے۔ اسکو فائیو ایر پلان (Five-Year Plan) میں بھی رکھا گیا ہے۔ ٹینسی بل میں بھی کوآپریٹو یسٹس پر دوسرے کاروبار کو چلانے کے بارے میں کہا جاتا رہا ہے لیکن اس چیز کی جانب جیسی توجہ دینی چاہئے تھی نہیں دی گئی ہے۔ آج بھی دیہات میں جا کر آپ دیکھئے تو معلوم ہوگا کہ منی لینڈرس کا طبقہ کس طرح غریب کسانوں کا خون چوس رہا ہے۔ قانون قرض دھندگان کی وجہ سے ممکن ہے کچھ پابندیاں عائد ہو گئی ہوں لیکن وہ قانون بھی تشنہ ہے اور جیسا چاہئے ضرورت کو پورا نہیں کرتا۔ اور یہ قانون بھی جو لایا گیا ہے وہ ایسا نہیں ہے کہ کسانوں کو قرض دھندوں سے نجات دلا سکے اس سے تو یہ ہوگا کہ منی لینڈرس زمینات کو ہضم کر جائینگے اور کسان کو کہیں کا بھی نہیں رکھینگے۔ اور ان واقعات کی تحقیقات کرنا عدالت کے بس کی بات نہیں ہے۔ نہ ہی یہ کمیٹیوں کے بس میں ہے۔ بادی النظر میں جو لوگ خلاف ورزی کرتے ہیں وہ اور اکثر منی لینڈرس اب بھی کھلے طور پر عدالت میں نہیں آتے کیونکہ قانون قرض دھندگان کے نفاذ کے بعد انہوں نے اپنے کاروبار کے بچ کو بدل دیا ہے اب وہ دوسرے طریقے سے اپنے کاروبار کر رہے ہیں۔ اپنے دستاویزات میں قرض کا ذکر نہیں کرتے۔ بلا رجسٹری شدہ یعنامہ جات مرتب کر لیتے ہیں۔ یا رهن نامے مرتب کر لیتے ہیں اس قسم کے یسوں دوسرے طریقے اختیار کر کے انہوں نے ایسے حالات پیدا کر لئے ہیں کہ کسانوں کا طبقہ برباد ہوتا رہے میں سمجھتا ہوں کہ اتنی بربادی پچھلے زمانے میں نہیں ہوئی جتنی کہ اب ہو رہی ہے۔ ہاؤز کے سامنے میں اس چیز کو رکھونگا کہ یہ قانون برباد شدہ کسانوں کی کس حد تک مدد کر سکتا ہے۔ میں نہیں سمجھتا کہ اس قانون کے نفاذ کے بعد بھی اس قسم کے قرضہ جات کو حکومت ختم کر سکی ہے جو آج رائج ہیں۔ تاوقتیکہ حکومت ان کاروبار کو بند کرنے کیلئے خود ہلکے شرح سود پر ضرورت مند کسانوں کو قرضہ دینے کا انتظام نہ کرے محض اس قانون کے لئے سے یہ بند ہونے والی چیز نہیں ہے۔ ظاہر ہے کہ کسانوں کو زرعی کاروبار کے انجام دینے کیلئے پیسہ کی ضرورت ہوتی ہے۔ اسکی ضرورت کو پورا کرنے کا کیا طریقہ ہو سکتا ہے اس پر جب تک ہم غور نہیں کرتے مقصد پورا نہیں ہو سکتا۔ امید ہے کہ موراثہ دی

بل اس پر غور کریں گے۔ اور اس قانون میں سنگینیت پیدا کرنے کی بجائے وہ کسانوں کی بھلائی اور بہبودی کے طریقے اختیار کریں گے۔ کسانوں کے اشیاء کی قیمتوں پر کنٹرول کرنا بھی ازحد ضروری ہے۔ یہ وہ مسائل ہیں جن پر ہمدردی کے ساتھ غور کرنا چاہئے۔ اس قسم کے قرضہ جات کو کم کرنے کیلئے جو تدابیر اختیار کئے جانے چاہئیں وہ اختیار کرنا چاہئے اور اسکے لئے قانون میں جو پروویژن ہونے چاہئیں وہ اسمیں لانا ضروری ہے۔

شری کٹہ رام ریڈی (نلگنڈہ - عام) - مسٹراسپیکر سر - یہ کہا جاسکتا ہے کہ ایک مکمل قانون ہاؤز میں لایا گیا ہے لیکن "موت کے بعد ڈاکٹر" کا جو مقولہ ہے وہ یہاں صادق آتا ہے۔ یہ قانون اوس وقت لایا جانا چاہئے تھا جب کہ قرض دھندگان مقروض کسانوں سے اپنے قرضہ کے ضمن میں اراضیات کھینچ لیتے تھے - انکو اراضیات سے بیدخل کر کے خود قابض ہو جاتے تھے - جبکہ یہ کہا جاتا تھا کہ یہ جاگیردارانہ نظام ہے - سنہ ۱۸۵۸ء کے بعد کافی وقت تھا لیکن یہ قانون نہیں لایا گیا - اسکا انتظار کیا گیا - اور لاپروائی برقی گئی - چاہئے تھا کہ اب جو قانون پیش کیا گیا ہے اوسکے نتائج پر آئریبل موور آف دی بل پہلے خود غور کر لیتے - انہیں غور کرنا چاہئے تھا کہ آیا اس کے نفاذ کے بعد حیدر آباد کے اگریکلچرسٹ کو کچھ مدد ملیگی - کچھ رلیف ملیگی یا نہیں - کیونکہ جب اسکو اگریکلچرسٹ رلیف بل کہا جا رہا ہے تو اس میں وہ خصوصیت سے دیکھنا چاہئے - ہم ایک طرف تو ڈیٹ رلیف (Debtors' Relief) کرنے کی کوشش کر رہے ہیں لیکن ہمارے پاس کوئی کنسٹرکٹیو پروگرام نہیں ہے کہ آیا کسان کو اسکی ضروریات کے وقت کچھ روپیہ بھی فراہم کیا جاسکتا ہے یا نہیں - یہ تو کہہ دینا بہت آسان ہے کہ ہم نے کسان کے فائدہ کیلئے قانون بنایا ہے لیکن کیا اس میں اسکی واقعی ضرورت کا خیال رکھا گیا ہے کہ کشتکار کو اسکی ضرورت کے وقت روپیہ مہیا ہو سکے - اسکے متعلق مادھو راؤ کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں کہا ہے کہ ایسی سوسائٹیز ہمارے پاس نہیں ہیں کہ جن سے کم شرح سود پر قرض کسانوں کو مل سکے - دوسری چیز یہ ہے کہ اس وقت جو قانون ہمارے سامنے لایا گیا ہے اس میں کسان کی جو تعریف کی گئی ہے اس کے تعلق سے یہ تعین نہیں کیا گیا ہے کہ کسان کس کو سمجھا جائیگا - کس قدر آمدنی والے کو کسان سمجھا جائیگا - کیا پانچ سو روپیہ کمانے والا یعنی جسکی زرعی آمدنی پانچ سو روپیہ ہو وہ کسان ہے - کیا ایسے کسان کو وہ فائدہ حاصل ہوگا جو آپ اگریکلچرسٹ کو پہنچانا چاہتے ہیں یا صرف بڑے بڑے زمینداروں کو ہی اس سے فائدہ ہوگا - آج آپ کو ایسی مثال نہیں ملیگی کہ کوئی کشتکار پندرہ بیس ہزار روپیہ کا قرض دار ہے - کون اس کو اتنا زیادہ قرض دیگا - کو آپریٹو سوسائٹیز جب قائم ہوئے اور اس وقت زمینداروں نے اپنی اراضیات کو مکفول کر کے قرض حاصل کیا اوس وقت البتہ دس پندرہ ہزار روپیہ قرض مل جایا کرتا تھا لیکن اوں ہی لوگوں کو ملتا تھا جن کا اثر و رسوخ تھا - ویسے ہی لوگوں نے قرضہ حاصل کیا اور ویسے ہی لوگوں نے ادا بھی نہیں کیا - ڈیر ٹرس رلیف ایکٹ پر غور کرتے وقت اگریکلچرسٹ کی حالت پر بھی غور کرنا چاہئے کہ

دیہات کا معاشی ڈھانچہ کیسا ہے۔ کوئی زراعت کرنے والا ہے دو چار ہزار روپیہ رکھنے والا ہے کسی کی حیدرآباد میں بلڈنگ ہے تو آیا اس کو آپ زراعت پیشہ کی تعریف میں لینگے یا کیا؟ اگر حقیقت میں زراعتی کاروبار کرنے والے کے فائدے کے لئے یہ قانون لارہے ہیں تو اس میں یہ صراحت ہونی چاہیئے کہ آخر آپ اگریکلچرسٹ کس کو سمجھتے ہیں۔ اگر زراعت پر گزر بسر کرنے والے کو سمجھتے ہیں تو پھر یہ چیز قانون میں آتی چاہیئے۔ چونکہ یہ بمبئی میں نافذ ہے اس لئے یہاں بھی لائے ہیں چاہے محل سے ہوا ہو چاہے موقع پر ہو یا نہ تو اور بات ہے۔ ہمیں دیکھنا چاہیئے کہ یہ موقع و محل کے لحاظ سے صحیح ہے یا نہیں۔۔۔۔۔۔

شری دیوی سنگھ چوہان - اسی لئے تو آپ کے سامنے پیش کر رہے ہیں۔

شری کٹھرام ریڈی - اگریکلچرسٹ کی کیا تعریف ہے اور قرضہ کتنا ہو اس کا معیار مقرر کرنا چاہیئے۔ یہاں اس کا خیال نہیں رکھا گیا ہے۔ ٹینسی بل میں تین یا ساڑھے چار فیملی ہولڈر کو بھی کشتکار قرار دیا گیا ہے۔ اسی طرح اس میں بھی تعین ہونا چاہیئے کہ آخر کاشتکار کی تعریف میں کس معیار کا کاشتکار داخل ہے۔ اور اس کو کس حد تک رلیف دیجانی چاہیئے۔

اس بل میں دوسرا نقص یہ ہے کہ اس ایکٹ کے نفاذ کے تین سہینے کے اندر درخواست پیش ہونی چاہیئے۔ کیا آج کے ہمارے اسٹیٹ کے حالات کے لحاظ سے ہمارے عوام کے عام معلومات کے لحاظ سے ہم اپنے تجربہ کی بنا پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ یہاں کی تعلیمی حالت اس قابل ہے کہ وہ جو احکام نافذ ہوں اون سے فوراً واقفیت حاصل کرلیں۔ ایسی حالت میں جبکہ نافذہ احکام سے تعلیم یافتہ افراد خود فوری واقف نہیں ہوتے عوام سے جن کی اکثریت غیر تعلیم یافتہ ہے کیسے توقع کی جاسکتی ہے کہ وہ ان احکام سے فوری واقفیت حاصل کرلیں گے۔ اس لئے میں کہوں گا کہ یہ ناممکن سی بات ہے۔ اس طرح اگریکلچرسٹ کو پابند کرنا میں سمجھتا ہوں کہ ایک غلط طریقہ کار ہے۔ نیز یہ کہ جہاں تک مجھے کوآپریٹو ڈپارٹمنٹ کے حالات معلوم ہیں ان کی بنا پر میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ عوام اس طریقہ کار میں بھی دقت محسوس کرتے ہیں۔

کوآپریٹو سوسائٹیز کی کریڈٹ (Credit) پر عوام کو اعتدال نہیں ہے۔ سکشن ۳ میں سیو (Save) کرنے کی کوشش کی گئی ہے لیکن سیو کرنے کا کل لاز (۲۲-۲۶) دیکھیں تو معلوم ہوا کہ اگر کوئی ڈبٹر (Debtor) درخواست پیش کرے تو وہ چھوٹ نہیں سکتا۔ کریڈٹ سوسائٹیز سے غریب کسان جو قرضات حاصل کیا تھا (خاص طور پر میں تلنگانہ نے کے تعلق سے کہوں گا) اس میں زیادہ تر قرضات پٹیل اور بٹواروں نے حاصل کئے ہیں لیکن آج تک ان لوگوں نے ایک جہ سے ادا نہیں کیا۔ اور جن جلد ادوں کو مکفول کیا گیا تھا وہ بڑی تعداد میں روپیہ میں باو آئے

فروخت کردی گئی ہیں۔ سنہ ۵۸ ف کے بعد وہ اس فکر میں ہوئے کہ کوئی موقع آئے تو اپنے اپنے قرضہ کی بابتہ سو کو پچاس اور پچاس کو چالیس ادا کر کے بے باقی کر لیں گے۔ اس میں شک نہیں کہ اگر کوئی اگریکلچرسٹ نادار ہے تو ہم معاف کر سکتے ہیں لیکن ایسے لوگوں کے ذمہ قرضہ باقی رکھا جائے جو استطاعت رکھتے ہیں اور ادا کر سکتے ہیں تو میں کہوں گا کہ اس کے معنی یہ ہوئے کہ کو آپریٹو سوسائٹیز کا دیوالیہ نکالنا مقصود ہے۔ اگر یہ منظور ہے تو اور بات ہے۔ اس سلسلے میں بنکس کا بھی حوالہ دیا گیا لیکن میں کہوں گا کہ بنکس کا طریقہ کار دوسرا ہوتا ہے بنکس میں اصل و سود اعلحدہ علحدہ کالم میں لکھے جاتے ہیں بیس سال میں اصل سے سود بڑھ جاتا ہے۔ اگر کمپاؤنڈ انٹرسٹ نہ بھی ہو اور سمپل انٹرسٹ ہو تو تیس تا چالیس سال میں اصل سے بہت بڑھ جاتا ہے۔ اس کو ملحوظ رکھنا چاہیئے کہ اصل سے ڈبل سود نہ ہو۔ آخر میں یہ رکھا گیا ہے کہ اقساط سے نٹ انکم تیس چالیس فیصد ہوگی۔

اگریکلچرسٹ کی تعریف اس طرح کئے ہیں کہ جتنے بڑے بڑے زمیندار ہیں وہ اس کے تحت آتے ہیں۔ اقساط کے متعلق کہا جاتا ہے کہ ۴۰ پرسنٹ ڈسکاؤنٹ ہو تو (۱۲) سال میں ادا کرنا ہوگا۔ تلنگانہ کی حد تک میں کہوں گا کہ (۷۵) پرسنٹ بنکس دیوالیہ نکالینگے۔ یا موقع دیکھ کر لوگوں کو ڈیوائسنگے۔ اب بھی سو میں سے دس فیصد غریب کا شتکار ہیں اس لئے اس کو ڈپارٹمنٹلی طریقہ پر حل کیا جانا چاہیئے۔ خاص طور پر کریڈیٹ سوسائٹیز کو ہم کو خاص نظر سے دیکھنا چاہیئے۔ کلاز (۳۲) اور (۲۶) دیکھنے سے معلوم ہوگا کہ سوسائٹیز اس طرح ہو سکتی ہیں۔ اس پر بھی غور کرنا چاہیئے کہ کسی کاشت کار کی تعریف کا تعین کس طرح کیا جائے۔ کس قسم کے کاشتکار کو ریلیف دینی چاہیئے۔ اس کا تعین ہو جائے تو اس کے بعد دیکھنا پڑیگا کہ قرضہ کا کیا معیار رکھا جاسکتا ہے۔ (۱۵) ہزار کا کوئی کاشتکار قرضدار نہیں ہو سکتا بلکہ زمیندار ہی ہو سکتا ہے۔ اور خصوصاً کو آپریٹو سوسائٹیز کا جو قرضہ ہے جتنے مختلف ایکٹ میں نے دیکھا ہے ہر نوبت پر کسی نہ کسی طرح پبلک کا پیسہ ڈیوانا چاہتے ہیں۔ میں نے دو تین سال سے دیکھا ہے کوئی کریڈیٹ کی کسی عہدہ دار نے سفارش نہیں کی۔ نہ ان غریبوں کا سود معاف کیا لیکن بڑے لوگ اپنے حاشیہ کے لوگوں کو لیکر معافی کے لئے آتے ہیں۔ میں کہوں گا کہ یہ بل اس وقت تک کامیاب نہیں ہو سکتا کہ جب تک کہ ضرورت پر کاشتکار کو مسنے سود پر وقت پر قرضہ نہ ملے۔ ورنہ آپ کا ایکٹ ایکٹ ہی رہیگا اور وہ لوگ اپنا دھنہ جاری رکھینگے ایک اور چیز جو غور کرنے کے لئے وہ یہ ہے کہ سنہ ۳۶ یا ۴۰ ع سے پہلے بھی کریڈیٹ سوسائٹیز زندہ حیثیت سے تھے کیا آنریبل ممبرس کہہ سکتے ہیں کتنے ایسے مینیجرس ہیں جو سالہا سال سے ایک کاشتکار پر قرضہ رکھتے ہوئے آ رہے ہیں۔ اگر حکومت یہ سمجھتی ہے تو وہ میں سمجھتا ہوں کہ وہ غلط فہمی میں ہے۔ کوئی ساہوکار سنہ ۳۶ ع سے سالواری قرضہ نہیں دے رہا ہے۔ ساہوکار یہ کوشش کرتے ہیں کہ ہر سال قرضہ معہ سود کے وصول کر کے

نیا قرضہ دیا جائے۔ اس لئے اس ایکٹ کو بنانے وقت مینی لینڈرس ایکٹ کو دیکھنا ضروری تھا۔ جس میں یہ کہا گیا ہے کہ کوئی شخص بغیر لیسنس کے قرضہ دے تو دعویٰ نہیں کر سکیگا۔ لیکن ہائی کورٹ میں مختلف طور پر مختلف اوقات میں یہ طے کیا گیا کہ دعویٰ کرنے وقت اگر اس کے پاس لیسنس رہے تو دعویٰ ہو سکتا ہے۔ سنہ ۱۹۶۴ء میں قانون قرض دہندگان نافذ ہوا اور مینی لینڈرس بزنس کا پروفیشن ختم ہو گیا اور اوسط طبقہ کے اثاثات و رسوخ کے تحت ہی قرضہ دیا جاتا ہے۔ اور پھر ادائیگی نہیں ہوتی ہے تو بیل یا افاج وغیرہ لیا جاتا ہے۔ پریکٹیکللی اس ایکٹ کے نافذ ہونے کے بعد اکچولی کشتکار کو کوئی ریلیف نہیں مل سکتی۔ اگر ریلیف ملیگی تو جھگڑا ہوگا اور غریب لوگوں کی حد تک ایک دو کا فرق رہیگا۔ آج کل دیہاتوں میں حالت ایسی ہے کہ ہر مینی لینڈر غریب کاشتکار کو قرضہ نہیں دیتا سونا وغیرہ لیکر قرضہ دیتا ہے۔ یا اوسط درجہ کے کاشتکار جن کے پاس سرپلس غلہ ہو اون کو دیتا ہے۔ اس لئے اس ایکٹ کے نافذ ہونے کے بعد معمولی طبقات میں کشمکش ہو گی۔ ہم اس کو کس طرح سے دور کر سکتے ہیں اس پر غور کرنا چاہیئے۔ ایک اور چیز ہے خصوصاً اس ایکٹ میں پلیڈرس کو ممنوع کیا گیا ہے میرا مقصد یہ نہیں کہ وکیلوں کو اس سے بہت فائدہ ہوتا ہے۔ یہ بات نہیں۔ آج کل کے اسٹرکچر کے لحاظ سے دیکھنا چاہیئے۔ اگر حکومت یہ سمجھتی ہے کہ ہر کاشتکار نمونہ کا فارم بھر کر درخواست دیدے تو کافی ہوگا اس سنس میں دیکھنا میں سمجھتا ہوں غلط ہے۔ یہاں جو رسٹرکشنس عائد کئے گئے ہیں کہ پلیڈرس کو الاؤ نہیں کیا جائیگا وہ غلط ہے۔ کیونکہ خود بعض وکلا صاحبان کو قانون سمجھنے میں بعض وقت دشواری ہوتی ہے چنانچہ دفعہ (۱۱) کے متعلق کہا گیا وہ پیچیدہ ہے تو پھر غریب کاشتکار قانون کو کیسے سمجھیں گے۔ اس کے لئے البتہ یہ پروویژن رکھا گیا ہے ”اگر امسر اجازت دے تو..... وغیرہ۔ اس کا مطلب یہ ہوگا ہر چیز میں جاہلوں کو پڑیکا کہ درخواست کر کے یہ کیا جاسکیگا۔ یہ رسٹرکشن رکھنے سے مجھے یہ خشہ ہے کہ آیا اس ایکٹ کو کوئی انٹیلیجنشیا آج سمجھ سکیگا۔ مجھے تو یہ تشویش ہو رہی ہے کہ جو لوگ ہزاروں روپیہ ڈوبائے ہیں اون کے لئے ہی یہ قانون بنایا گیا ہے۔

مسٹر ڈیٹس، اسیکر۔ کیا آپ اور وقت لینگے؟

شری کٹھ رام ریڈی۔ میں تھوڑا سا وقت اور لونگا۔

We now adjourn till 5-10 p.m.

مسٹر ڈی. اسیکو - تو پھر ہم اب الجرن کر کے ۱۰۰ کو ملینگے۔

The House then adjourned for recess till Ten Minutes past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Ten Minutes Past Five of the Clock.

[Mr. Speaker in the Chair]

Motion for Grant of 1 Crore Rupees

Mr. Speaker : Dr. Melkote.

The Minister for Finance and Statistics (Dr. G. S. Melkote) :
Sir, I beg to move :

“That a sum not exceeding I.G. Rs. 1 crore be granted to the Rajpramukh to be transferred from the Consolidated Fund of the State to the Contingency Fund during the year ending 31st March, 1953, in pursuance of the Hyderabad Contingency Fund Act, 1952. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

Mr. Speaker : Motion moved. We shall take it up for discussion at some other day.

L. A. Bill No. XV of 1953, the Hyderabad Agricultural Debtors' Relief Bill

Mr. Speaker : I want to know whether the First reading of the Hyderabad Agricultural Debtors Relief Bill can be completed today or not, because to-day.....

بات یہ ہے کہ ہاف این اور ڈیٹ (Half an hour debate)
ہوگی۔ اور ساڑھے سات بجے سے اس کو لیا جائیگا۔ ایسی صورت میں ہاؤس سے یہ دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ آیا اس کی فیسٹ ریڈنگ آج ہم ختم کر لیں یا کیا۔ اگر ختم کر لیں تو پھر مجھے اسی طریقہ سے ریگولیٹ (Regulate) کرنا پڑیگا۔ یا اگر ہاؤس کی خواہش آج کی بجائے کل اس کو ختم کرنے کی ہو تو کل آفٹرنون (Afternoon) یعنی اس وقت تک یا اس کے بعد بھی رکھا جاسکتا ہے اور اسی لحاظ سے ٹائم ریگولیٹ (Regulate) کیا جاسکتا ہے۔

شری کشن رام ریڈی۔ یہ ایک مکمل بل ہے اور بہت امپارٹنٹ بل (Important Bill) ہے۔ اس کی فیسٹ ریڈنگ ادھورے طریقہ سے ختم کرنا مناسب نہ ہوگا۔ اس لئے کل شام تک.....

شری وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے - میرا بھی یہی کہنا ہے کہ اس بل کی فسٹ ریڈنگ پر کافی ڈسکشن ہونا مناسب ہوگا۔ کل اس کی فسٹ ریڈنگ ختم ہو سکتی ہے۔

مسٹر اسپیکر - مگر کل کب تک؟ کیا کل شام تک ہم اس کو رکھیں۔ میں یہ نہیں چاہتا کہ اگر یکلچرل ڈیٹرس بل پر ڈسکشن نہ ہو لیکن ڈسکشن کو آخر کہیں نہ کہیں ختم کرنا پڑتا ہے۔ اگر ہاؤس کی خواہش ہو تو کل شام کے آٹھ بجے تک اس کو کنٹینو (Continue) کریں گے۔ اور اسی طریقہ سے تصفیہ کیا جائیگا۔ یا یہ بھی ہو سکتا ہے کہ بزنس کمیٹی (Business Committee) بلا لیں اور اس کا تصفیہ کر لیں۔ خیر آج تو ہم اس کو ختم نہیں کریں گے۔

شری وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے - ٹینٹیولی (Tentatively) ہم کرسکتے ہیں یا اگر بزنس کمیٹی بلا رہے ہیں تو

مسٹر اسپیکر - آج ساڑھے سات بجے تک فسٹ ریڈنگ جاری رکھی جائیگی اور اس کے بعد ہاف این اور ڈیٹ (Half an hour debate) ہوگی۔

شری کٹھرام ریڈی - اس بل میں بعض قرضہ جات کو پریفرنس (Preference) دیا گیا ہے۔ اس میں سیزنل فینانس (Seasonal finance) کی جو تعریف کی گئی ہے اس کو دیکھنا ضروری ہے۔ سیزنل فینانس کس قسم کے ہیں یہ دیکھنا چاہیئے۔ ریزرو بینک آف انڈیا جو سیزنل فینانس ہیں ایک سال میں ادائی کے لئے اگر یکلچرل آپریشنس کے لئے دئے جاتے ہیں۔ اور جب کسی انڈیویچول کاشتکار کو سیزنل طور پر دیتے ہیں اس کے متعلق جانچ کر لی جاتی ہے خصوصاً موسمی حالات کے لحاظ سے کاشتکار جو رقم حاصل کرتا ہے اوس میں انٹرسٹ غلہ کی صورت میں زیادہ لیتے ہیں۔ اس میں سیزنل فینانس کی یہ تعریف کی گئی ہے وہ قرضہ جو سیزن کے لئے دیا جائے۔ لیکن ہم کو اس پر غور کرنا چاہیئے کہ جو پیداوار وہ پیدا کرتا ہے اور جو خرچہ کرتا ہے اس میں ہر سال اس کو بھرتی کرنا پڑتا ہے۔ اس واسطے سیزنل فینانس جو ریزرو بینک آف انڈیا کے ہیں وہ بہت کم سود پر دئے جاتے ہیں یہاں جو سیزنل فینانس کی تعریف کی گئی ہے وہ ریزرو بینک آف انڈیا کی تعریف کی طرح نہیں بلکہ شیلولڈ بینکس لکھا گیا ہے کلاز (۳) اور سب کلاز (۲) میں جو لکھا گیا ہے میں سمجھتا ہوں وہ ریزرو بینک آف انڈیا کی تعریف کے مطابق ہونا چاہیئے۔ اس واسطے ہم کو اس کی جانچ کرنا ضروری ہے۔ سنہ ۱۹۴۷ء میں مادھوراؤ اگریوین ریفارمس کمیٹی نے بتایا تھا کہ برہیڈ (۳۰) ہے یا پریملی (۹۰) ہے اس لحاظ سے بھی ہم کو دیکھنا چاہیئے۔ اس کے علاوہ موجودہ حالات میں مارکٹ والیو کے لحاظ سے جبکہ قیمتیں بڑھ گئی ہیں اور ممکن ہے کہ اور بھی آگے بڑھیں یہ دیکھنا چاہیئے کہ کیا ہم اس کو ایسمن ہٹا سکتے ہیں۔ یا اس کو بڑھاسکتے ہیں یا اضافہ کرسکتے ہیں۔ اس پر غور کرنے کے بعد ہی ہم اگر یکلچرل ڈیٹرس کی صحیح خدمت کرسکتے ہیں یا اوس کی صحیح

ضروریات کی تکمیل کر سکتے ہیں۔ ورنہ موجودہ تعریف کے لحاظ سے ہارے اوسط درجہ کے کاشتکاروں کو اس کا فائدہ نہیں ہوگا۔ ایک اور چیز جو مجھے کہنا ہے وہ یہ ہے کہ موجودہ اڈمنسٹریشن کے لحاظ سے سیزنل فنانس جو ریزروبنک آف انڈیا سے ملتے ہیں اون کے کاشتکار کے ہاتھ میں آنے کی گنجائش نہیں نظر آتی۔ اس کا ثبوت یہ ہے کہ کو آریٹھو سوسائٹیز جو رقمات دیتی ہیں وہ درخواست دینے کے دو مہینے کے بعد ملتی ہیں۔ یہ سیزنل فنانس نہیں ہیں۔ جب ضرورت ہو تب اس کو ملنا چاہیئے۔ جب وقت برقیہ نہیں ملتی تو کاشتکار مجبور ہو جاتا ہے کہ دوسروں کے پاس ہاتھ بھیلے۔ اور زیادہ انٹرسٹ ادا کرے۔

اگر اس بل کے مقصد کو کامیاب بنانا ہے۔ اور ہم اس کو اسی وقت کامیاب کہہ سکتے ہیں۔ جبکہ کاشتکاروں کے لئے بروقت فراہمی رقم کا معقول اور مناسب انتظام کیا جائے۔ ورنہ جیسا کہ چیف منسٹر صاحب نے فرمایا کہ ہارے پاس بہت سے بیکر ہتیار بھی رہتے ہیں و بسا ہی یہ قانون بھی بیکر ہتیار کی طرح بڑا رہے گا۔ جیسا کہ میں نے تشویش ظاہر کی ہے اس ایک کا اثر جلد ہی کریڈٹ سوسائٹیز پر پڑنے والا ہے۔ اس پر آئریبل ممبر خاص توجہ دیں تو مناسب ہے۔ ورنہ یہ ہوگا کہ آج کل کے حالات کے لحاظ سے سنٹرل بینکس اور کریڈٹ سوسائٹیز بھی اس ضرورت کی تکمیل نہیں کر سکیں۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ چیز پہلے سے بڑے بڑے زمینداروں کے ہاتھ میں تھی۔ آج ہوتا ہے کہ حکومت تعقدار کو لکھتی ہے۔ تعقدار تحصیلدار کو لکھتا ہے وغیرہ وغیرہ لیکن نتیجہ کچھ نہیں نکلتا۔ اس طرح ہندو برس سال گزر جاتے ہیں۔ ہارے پاس ایسی مثالیں موجود ہیں کہ کریڈٹ سوسائٹیز سے لیا گیتا تھا۔ اس کے بعد زمینات فروخت کردی گئیں لیکن سوسائٹیز کا بتایا ادا نہ کیا گیا۔

آج ہم یہ بل کاشتکاروں کے فائدے کے لئے بنا رہے ہیں تو اس میں انڈیو بیل کو بجائے سیزنل (Seasonal) کی تعریف ہونی چاہیئے۔ اس بل کا اصل مقصد و منشا صرف یہ ہے کہ اگر ایک لچرسٹ کس کو کہنا چاہیئے اور ریلیف کس شخص کو دیا جانا چاہیئے۔ اس کے سوا کوئی اور چیز نہیں ہے۔ میں نے یہ بات پہلے ہی کہی ہے کہ یہ تصور نہ کرنا چاہیئے کہ اس بل سے بہت زیادہ فائدہ ہونے والا ہے کیونکہ وہ وقت گزر چکا ہے۔ کوئی ساہوکار اگر قرض دیتا ہے تو وہ کھانا پر جائداد وغیرہ دیکھ کر ہی دیتا ہے۔ غریب کاشتکار جس کی کوئی جائداد نہیں ہونی اسے قرض بھی نہیں مل سکتا۔ اس لئے میرا یہ سنجش ہے کہ اگر ایک لچرسٹ کی تعریف میں ایوریج انکم والے کو بھی شریک کرنا چاہیئے جس طرح کہ مادھوراؤ کمیٹی رپورٹ میں بتلایا گیا ہے۔ ہمارا بھی یہ تجربہ ہے کہ دیڑھ دو ہزار روپیہ سالانہ جو شخص کاتا ہے اس کو سالانہ ایک سو روپیہ آمدنی والے کے مقابلہ میں زیادہ قرض ملتا ہے۔ یہ نہیں ہو سکتا کہ ایک سو روپیہ والے کو بھی اتنا ہی قرض ملتا ہے یہ تو ایک ہنسی کی بات ہو گی۔ یہ ایک بے منی چیز ہو گی کہ کہ قرضہ دینے والا بھی اس کی حیثیت۔ اس کی آمدنی۔ اس کی جائداد وغیرہ دیکھ کر ہی دیتا ہے۔ اس لئے اگر ایک لچرسٹ کو زیادہ سے زیادہ ریلیف دینا ہے اور کسی اور کو فائدہ پہنچانا نہیں ہے تو یہ

امونٹ تین ہزار سے نہ بڑھنا چاہیئے۔ اگر ایک سو روپیہ آمدنی والوں کا حساب لگایا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ ۹۰ فیصد ایسے ہیں جو دوسو - تین سو - چار سو - پانچ سو تک آتے ہیں۔ اس لئے جو میگزیم یہاں رکھا گیا ہے وہ غیر مدبرانہ ہے کیونکہ اس سے سرمایہ داروں کی مدد ہوگی۔ لہذا اگر اس ایکٹ کا مقصد غریب کاشتکار کو کریڈٹ فسیلیز دینا ہے جو دوسو تا بانسو کے اندر ہوں تو انہیں ریف دیا جاسکتا ہے ورنہ بصورت دیگر اس سے مضر اثرات پڑنے والے ہیں جن کی وجہ سے ہم کریڈٹ سوسائٹیز نہیں چلا سکتے۔

یہ چند الفاظ کہتے ہوئے میں آنریبل ممبران سے درخواست کرتا ہوں کہ وہ اس بل پر کاشتکار کے نقطہ نظر سے غور کریں۔ سرمایہ دار یا لینڈ لارڈ کے نقطہ نظر سے غور نہ کریں ورنہ اس عوامی حکومت کا اس بل کے معنی جو تاثر ہے وہ ختم ہو جاتا ہے۔

شری. رخصتراجی ڈوڈیبا پاتیل (اڑی):—میسٹر سپیکر سر، شتکرنیآچے کرجاموळे हणारे नुकसान रोकण्यासाठी आणि त्याचे जीवन सुधारण्यासाठी हे जे बिल आपल्या समोर आणले गेले आहे त्याचे मां मनःपूर्वक स्वागत करतो.

श्री. के. रामरेड्डी:—उर्दू में बोलिये ।

श्री. रक्षमाजी डोडीबा पाटील:—पूर्वी हिंदुस्थानांत अग्रज येण्याच्या सुमारास आणि ते येण्याच्या अगोदर सुद्धा सावकाराच्या पंजात सांपडलेल्या शेतकऱ्यांनी या सावकारीच्या विरुद्ध आवाज उठविलेला होता. जुदाहरणच द्यावयाचे झाल्यास त्या काळांतील “रोखे फाडी चळवळीचे” घेतां प्रश्नील. त्या वेळी ही चळवळ प्रत्येक खेड्यापर्यंत पोचली होती व सावकारांचे कर्ज नष्ट करण्यांतर्गत सरकारला विनंती करण्याचा कार्यक्रम शेतकऱ्यांनी हाती घेतला होता. पण त्या वेळी अग्रज सरकारने ही चळवळ दडपून टाकली.

परंतु ही शेतकऱ्यांची चळवळ येथेच थांबली नाही तर त्यानंतरहि सावकारीविरुद्ध आवाज निघव राहिला, आणि परिणामस्वरूप “शेतकरी कर्ज विमोचन” या नांवाचा कायदा तयार झाला. त्यांत अेक कक्रम १५-व सावकारांच्या कमी फायद्याच्या दृष्टीने ठेवण्यांत आले होते. हा शेतकरी कर्ज विमोचन कायदा आमच्या हैदराबाद स्टेटमध्ये नव्हता. याचा परिणाम असा झाला की अग्रजो राज्यांत राहणारे कांही सावकार हैदराबाद स्टेटमध्ये आले व सावकारी करूं लागले. व शेतकऱ्यांकडून खरेदी खत, गहाण खत वगैरे करून घेवून त्यांनी त्यांच्या जमीनी लुबाडल्या व ते मोठमोठे जमीनदार झाले.

ह्या सावकारांमुळे ते सावकार जमीनदार झाले व त्यांच्या जवळ मोठमोठ्या रकमाहि शिल्लक पडल्या. हे सर्व त्यांना गरीब शेतकऱ्यांच्या कष्टावर केले आहे, म्हणून मला सरकारला अशी विनंती करावयाची आहे की, ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी खरेदी खतामुळे किंवा गहाणखता मुळे सावकारांच्या ताब्यांत गेल्या असतील त्यांच्या जमीनी या कायद्यान्वये त्यांना परत मिळाव्या. तेव्हां या बिलामध्ये अतो प्रोव्हिजन (Provision) करावयास पाहिजे की २५ वर्षांपूर्वी ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी सावकारांच्या घरांत गेल्या त्यावर फेरविचार करण्याचा अधिकार ट्रिब्यूनल (Tribunal) ला बसावा आणि अशा रीतीने या बिलाला येणाऱ्या सुधारणा

स्वीकारून किंवा सिलेक्ट कमेटी (Select Committee) कडे पाठवून, शेतकऱ्यांच्या दृष्टीने जास्तीत जास्त उपयुक्त बनवावे अशी माझी विनंती आहे .

आज सावकारीविरोध देशामध्ये कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, काँग्रेस वगैरे पक्ष चळवळ करीत आहेत ते चांगलेच आहे, पण सरकारनेहि शेतकऱ्यांसाठी निरनिराळें चांगले कायदे करून त्यांना फायदा पोचविला पाहिजे . मला पुन्हा असे सांगावयाचे आहे कीं गहाण खत किंवा त्यावरून खरेदी खत करून ज्यांच्या जमीनी घेतल्या आहेत, त्या त्यांना परत मिळण्याची, या कायद्याने सोय केली पाहिजे.

तेव्हां माझी आनरेबल मुन्हर साहेबांना अशी विनंती आहे की, त्यांनी हा कायदा जास्तीत जास्त शेतकऱ्यांच्या फायद्याचा करावा आणि शेतकऱ्याला योग्य न्याय मिळेल अशा यांत सुधारणा कराव्यात . त्यांनी हे बिल आणल्याबद्दल त्यांना धन्यवाद देऊन मी आपले भाषण संपवितो ।

شری گوپال راؤ (پاکھال) - مسٹر اسپیکر سر - جو قانون ایوان کے سامنے آیا ہے وہ زرعی قرضہ جات کو کم کرنے کیلئے لایا گیا ہے - اب ایوان کو یہ دیکھنا ہے کہ آیا اس سے ہماری موجودہ ضروریات پوری ہوسکتی ہیں یا نہیں - اسکے علاوہ ساھوکاروں کو جو متی (سود) دیجاتی ہے وہ کتنی دیجاسکتی ہے یا کاشتکار کہاں تک دے سکتے ہیں یا ہم اس سے کہاں تک دلاسکتے ہیں یہ بھی اس سلسلہ میں دیکھنا ہے - ابھی آنریبل مسٹر فرمارے تھے کہ بھروچہ رپورٹ کے مطابق نوڈ (۹۰) کروڑ کا زرعی قرضہ ہے - اور آئینگار رپورٹ کے مطابق لگ بھگ دیڑھ سو (۱۵۰) کروڑ کا حیدرآباد میں قرضہ ہے - گویا دوسرے معنوں میں یہ رقم حیدرآباد کے تین سال کے بیٹ کے برابر ہوتی ہے - اگر تین سال تک ساھوکاروں کی ادائی اس رقم سے کیجائے تو اس صورت میں قرضہ جات پورے طور پر ادا ہوسکتے ہیں - چونکہ یہ کاشتکار کا معاملہ ہے اسلئے مالگزاری کے حساب سے دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ یہ ۳۸ سال کے زر مالگزاری کی آمدنی کے برابر ہے - گویا جو قانون ایوان کے سامنے ہے اس میں یہ دیکھنا ہے کہ ۱۵۰ کروڑ روپیہ کا قرض کس طرح ادا کیا جانا چاہئیے - اس میں کتنی کمی کرنی چاہئیے یا آیا وہ بڑا ادا ہو بھی سکتا ہے یا نہیں -

اس قانون میں کوئی نمایاں فرق نہیں ہے اور اگر میں یہ کہوں تو بیجا ہوگا کہ سوائے چند تعریفات کے بمبئی ایکٹ کی نقل کر کے بل کی شکل میں اسکو ایوان میں پیش کیا گیا ہے - بمبئی میں یہ ایکٹ پاس ہو کر چھ سال کا عرصہ ہوتا ہے - بمبئی کے کاشتکاروں کو اس سے فائدہ پہنچایا ہے اس پر دھیان دینا ہے - اور اگر حیدرآباد میں دیڑھ سو کروڑ کا قرضہ ہے تو ریاست بمبئی میں ۳۰۰ کروڑ کا قرضہ ہوسکتا ہے - اس قانون کے ذریعہ بمبئی اسٹیٹ میں اس قرضہ میں کتنی کمی ہوئی ہے یا اور یہاں اس میں کتنی کمی ہوسکتی ہے یہ دیکھنا ہے - اسکے اسٹائنکس اپنے پاس نہیں ہیں - حیدرآباد میں جتنا قرضہ ہے اسکے بھی کوئی اسٹائنکس نہیں ہیں - یہ اندازہ ہے کہ دیڑھ سو کروڑ روپیہ کا قرض ہے - اس سے یہ جو دیڑھ سو کروڑ قرض کاشتکار دنیا ہے اس میں اصل کتنا ہے اور سود

کتے ہیں یہ معلوم کرنا مشکل ہے۔ یہ اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ کم سے کم اصل سے سود ۱۰۔ یا ۱۲ گنا زیادہ ہو سکتا ہے۔ یعنی اس دیڑھ سو کروڑ میں زیادہ سے زیادہ ۲۰ کروڑ اصل ہو سکتا ہے جسکی متی اب تک اتنی ہو گئی ہے۔ میرا یہ اندازہ ہے آئریبل منسٹر اسکی توضیح کریں تو مناسب ہے۔ میرے پاس کے اعداد و شمار کے لحاظ سے اس بل کے دفعہ ۲۲ کے تحت جو کمی کی کوشش کی گئی ہے میں اسکی وضاحت کرتا ہوں اس قانون میں دو چیزیں ہیں۔ ایک تو اصل کتنا ہوگا۔ دوسرے سود کتنا ہوگا۔ کیا دیڑھ سو کروڑ حیدر آباد کے کاشتکار دے سکتے ہیں۔ اس میں کتنا معاف کرنا چاہئے۔ دوسری چیز یہ کہ ایک۔ اہوکار قرضہ دیتا ہے تو اسکو کتنی متی دینا چاہئے۔ اصل سے دو گنی۔ تگنی یا چار گنی۔ دراصل یہ طے کرنا ہے۔ ایک زمانہ سے عوامی اداروں کا یہ مطالبہ رہا ہے کہ کاشتکار کا برانا قرض معاف کیا جائے۔ لیکن اس قانون کے تحت بھی وہ مطالبہ پورا نہیں ہو رہا ہے۔ اس قانون کے لحاظ سے سنہ ۱۹۱۵ء کے پہلے کے حسابات جوں کے توں رہیں گے۔ ان پر اندھا دھند عمل ہوگا۔ گویا اس طرح عوام کا جو مطالبہ رہا کہ برانا قرض معاف ہونا چاہئے اسکے لئے ۱۹۰۰ یا ۱۹۱۵ یا ۱۹۲۰ء کوئی سنہ مقرر کیا جا کر معافی کا تعین نہیں کیا گیا ہے۔ اگر حساب لگایا جائے تو معلوم ہوگا کہ سنہ ۱۹۱۵ء سے ۱۹۵۳ء تک کتنی متی ہوتی ہے۔ تفصیلات تو نہیں بتلاتا اسلئے کہ آئندہ اسکا موقع ہے لیکن مثال کے طور پر عرض کرونگا کہ یہ مدت ۳۸ سال کی ہوتی ہے۔ منی لینڈرس ایکٹ سنہ ۱۹۳۹ء میں آیا اس سے پہلے ۱۲ سے ۱۸ فیصد تک سود کی شرح تھی اور یہ قانون آنے کے بعد شرح پر ۱۲ اور ۹ فیصد کی پابندی لگائی گئی۔ دیہاتوں میں تو ساہوکار ڈھائی تین روپیے متی رکھتا ہے۔ اب حساب لگائیے سنہ ۱۹۱۵ء میں ایک شخص ۱۰۰ روپیے قرض لیتا ہے۔ ۱۹۱۵ سے ۱۹۳۹ء تک ۲۴ سال میں بحساب ۱۸٪ جو منی لینڈرس ایکٹ کے تحت جائز ہے۔ ۳۲ روپیے متی ہوتی ہے۔ ۱۹۳۹ء سے ۱۹۵۳ء تک ۱۴ سال کے لئے بحساب ۱۰٪ ۱۳۸ روپیے متی ہوتی ہے۔ اس طرح جملہ (۵۸۰) روپیے صرف متی کے ہوتے ہیں۔ اس ایکٹ کے تحت یہ رقم ادا کرنی پڑیگی۔ اور پھر کاشتکار سالانہ کم از کم ۱۵ روپیے اسکی بابتہ ہر سال ادا کرتا رہتا ہے۔ جس سے ۵۷۰ روپیے ادا ہو جاتے ہیں۔ یعنی ۱۰۰ روپیے اصل کے بابت ۵۷۰ روپیے ۳۸ سال میں متی میں ادا ہو گئے۔ اس کے بعد بھی ۱۰۰ روپیے اصل باقی رہتا ہے۔ پھر بھی ۱۰ روپیے متی میں باقی رہ جاتے ہیں۔ اس قانون میں یہ بتلایا گیا ہے کہ ۴ فیصد کی کمی کی جائیگی۔ یعنی ۴۰ روپیے اصل میں اور ۴ روپیے متی میں کم ہونگے اس طرح جملہ ۶۳۶ روپیے اصل اور سود دینا پڑیگا۔ اگر وہ ۱۰ روپیے ہر سال دیتا رہا ہوتا تو کچھ اور کمی ہوگی۔ گویا اگر کوئی شخص ۳۰-۳۵ سال قبل ۱۰۰ روپیے قرض لیا ہوتا تو اس کو ۶۳ روپیے یعنی اصل کا چھ ساڑھے چھ گونا لینے کی اجازت اس قانون کے لحاظ سے دی جا رہی ہے۔ یہ بتایا تو گیا ہے کہ ۴ فیصد کی کمی کی جائیگی۔ لیکن اس کمی کے باوجود ۱۰۰ کے ۵۰ دینا پڑتا ہے۔ کیا آج کے حالات میں حیدر آباد کا کسان اس قدر بوجھ برداشت کرنے کی سکت رکھتا ہے۔ اگر برائے حساب سے بھی دیکھا جائے

توفیق کے قرض کو دو گئے پر اور غلے کے قرض کو تگنے پر بے باقی سمجھا جاتا تھا۔ لیکن اس قانون میں تو وہ بھی نہیں رکھا گیا ہے۔ ایک جگہ یہ بتلایا گیا ہے کہ سود اصل سے زائد ہو جائے تو اس میں کمی ہوگی۔ لیکن یہ چالو کنہائے کیلئے ہے۔ پرانے قرض کے لئے نہیں ہے۔ اور عموماً کم سے کم تین سال میں رجوع مقابہ ہوتا ہے۔ اس وقت تک ساھوکار کو جو کچھ بھی پہنچتا ہے وہ متی میں شمار ہوتا ہے۔ اصل میں شمار نہیں ہوتا۔ ایسے حالات میں کیا یہ قانون عوام کے مضامین کو پورا کرتا ہے۔ جہاں تک میرا خیال ہے کہ اس قانون سے کاشتکاروں کو کوئی فائدہ نہیں پہنچ سکتا۔ اس میں یہ صاف طور پر رکھا جانا چاہئے تھا کہ سود چاہئے کتنے ہی عرصہ کا ہو ۱۰ سال کا ہو یا ۱۵ سال کا ہو کسی صورت میں بھی اصل سے نہ بڑھ سکیگا۔ پرانے اصول کے لحاظ سے بھی ڈبل پر ختم کیا جاسکتا ہے۔ آئریبل منسٹر اس پر غور کریں تو مناسب ہے۔ اس میں شک نہیں کہ یہ پہلے کے قانون سے زیادہ پراگریسیو (Progressive) ہے۔ لیکن بمبئی میں اس ایکٹ پر عمل کرنے کا جو تجربہ ہے اگر اسکو سامنے رکھا جاتا تو مناسب ہوتا۔

اس قانون کے دفعہ (۵) میں یہ بھی رکھا گیا ہے کہ قرضدار اپنا قرضہ جن جن ساھوکاروں سے جتنی مدت جس شرح اور جس طریقہ سے ہے وہ مقررہ طریقہ پر عدالت کے سامنے پیش کر دے۔ یہ امر مسلمہ ہے کہ ہمارے پاس کا کاشتکار انپڑا ہے۔ ظاہر ہے کہ وہ حکومت کا پر اسکرائیبلڈ فارم (Prescribed form) جو عموماً ۳۲-۳۸ یا ۵۵ خانوں کا ایک نمونہ ہوتا ہے کس طرح سمجھ کر پر کر سکیگا۔ اسکو یہ بتلانا پڑیگا کہ اس نے کونسی تاریخ پر کس ساھوکار سے قرض حاصل کیا تھا۔ اور کتنا ادا کیا۔ کیسے ادا کیا۔ وغیرہ۔ اگر اتفاقاً وہ اپنے اس رائٹ اسٹیٹمنٹ (Written statement) میں کسی اندراج میں کوئی چیز بھول جائے اور اس سے کوئی سہو ہو جائے تو اس کو سزا دیجائیگی اور قانون کے تحت اس کو جو رعایت ملنے والی تھی اس میں کمی ہو جائیگی۔ آئریبل منسٹر سے میں یہ کہوں گا کہ کسان کی جہالت کے مدنظر کسان کا یہ بتلادینا کافی سمجھا جانا چاہئے کہ اس نے کس سے قرض حاصل کیا ہے۔ کیونکہ دفعہ (۵) کے تحت یہ بھی ہے کہ سب ساھوکار اپنے قرضدار کے جملہ حسابات عدالت میں داخل کریں۔ اور اسکی ایک کاپی مقروض کو بھی دیں۔ بمبئی میں مقروض پر یہ شرط کس لحاظ سے رکھی گئی ہے معلوم نہیں۔ لیکن ہمارا یہ کام نہیں ہے کہ وہاں جیسا ہے اسکو بالکل اسی طرح قبول کر لیں۔

ایک اور چیز یہ ہے کہ آسامی کے دیوالیہ کی نوبت آتی ہے تو ایسی صورت میں بھی گورنمنٹ کو یہ فکس (fix) کرنا چاہئے کہ وہ کاشتکار کو کتنی زمین چھوڑے۔ پہلے ایکٹ میں یہ ہے کہ ۵۰ روپیے کی اراضی رکھے۔ اب یہ بتانا ضروری تھا کہ ٹینسی ایکٹ کے تحت ایک فیملی ہولڈنگ یا ہاف فیملی ہولڈنگ یا ۵۰ روپیے زر مالگزاری ادا کرنے کے قابل زمین کاشتکار کے پاس چھوڑی جائے۔ گورنمنٹ اسکا حساب کتاب کر کے

وقتاً فوقتاً ترمیم کرسکتی ہے۔ عدالت کی رہنمائی کیلئے یہ کرسکتے ہیں کہ ایک فیملی ہولڈنگ چھوڑ کر باقی لئے سکتے ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ اس قانون سے بہت سے عوام اور قرضداروں کو مدد ملیگی۔ لیکن جو بنیادی چیزیں میں نے ہاؤز کے سامنے رکھی ہیں انہیں پیش نظر رکھنا ضروری ہے تاکہ اس سے پورا پورا فائدہ حاصل ہو۔ مجھے امید ہے کہ آئریبل منسٹر اس پر توجہ کریں گے۔ اور اس طرح کسانوں کی کچھ مدد ہوسکیگی۔

श्री. लिबाजी मुक्ताजी पानसंबळ (माजलगांव) :—अध्यक्ष महाराज, आज जो कायदा विचाराकरिता आला आहे तो म्हणजे “शेतकरी कर्ज निवारण बिल” हा होय. वास्तविक पाहता कूळ वहिवाट कायदा जो आहे त्यापूर्वीच हा कायदा यावयाला पाहिजे होता कारण त्या कायद्या-पेक्षा याचे महत्व अधिक आहे. या कायद्याचे महत्व ठरवितांना आपण हे पाहिले पाहिजे की, आपणास कूळ वहिवाट कायदा कां करावा लागला ? याला कारण अंकच आहे आणि ते म्हणजे अंकाच व्यक्तीजवळ अधिक जमीन अंकत्रित होणे. शिवाय शेतीचे उत्पादन वाढावे हाही त्याचा अद्देश आहेच. आणि याकरिता शेतकऱ्याला जमीनीचा मालक बनविण्याचा प्रयत्न त्या कायद्यांत केला गेला. तेव्हा या कायद्याला महत्व असण्याचे कारण म्हणजे हा कायदा शेतकऱ्यांचे कर्जबाजारीपण नष्ट करतो. कर्जबाजारीपणामुळे शेतकरी शेतीचे उत्पादन वरोबर करू शकत नाही हे आज निर्विवाद सिद्ध झाले आहे. शेतकरी कर्जबाजारी असल्यामुळे तो शेतीला बरोबर पैसे लावू शकत नाही, त्यामुळे शेतीचे उत्पादन वाढत नाही अशी ह्या सर्व गोष्टीची साखळी आहे. तसेच मुद्दलव्याज करतां करतां सावकाराने शेतकऱ्यांची जमीन आपल्या ताब्यांत घेतली व अंकाच व्यक्तीकडे जास्त जमीन अंकत्रित झाली. हा कायदा शेतकऱ्यांची आर्थिक परिस्थिति सुधारतो व कूळवहिवाट कायद्याचे जे अद्देश आहेत ते सर्व मुळांतच सुधारतो म्हणून या कायद्याचे कूळवहिवाट कायदा पेक्षा जास्त महत्व आहे. आणि हा कायदा हाबुस समोर आणल्याबद्दल मी मुद्दर साहेबांना धन्यवाद देतो.

या बिलावर बोलताना पूर्वीच्या अंका सन्माननीय सभासदाने सांगितले आहे की, ज्या शेतकऱ्यांच्या जमीनी सावकाराकडे गहाणाच्या रूपाने अथवा कर्जात पण खरेदी खताच्या रूपाने गेल्या आहेत त्या त्यांना वापस मिळण्याची व्यवस्था व्हावी. मला सांगावयाचे आहे की, तशी व्यवस्था या कायद्यामध्ये आहे. ३१ सालापासून गहाणामध्ये किंवा कर्जामध्ये गेलेल्या जमीनीचा विचार करण्याचा अधिकार कोर्टास आहे, पण त्यामध्ये आणखी जास्त सवलती देण्याची मात्र जरूरी आहे.

या कायद्यातील विशेष महत्वाची बाब, म्हणजेच ह्या कायद्याचा अद्देश जो आहे, तो म्हणजे “शेतकऱ्यांचा कर्जबाजारीपणा नष्ट करून त्याला अधिक बाबतीत स्वावलंबी बनविणे” हा आहे. यासाठी हा कायदा शेतकऱ्यांचे कर्ज निवारण्याची व्यवस्था करते आणि सावकारावर निरनिराळी बंधने घालतो. यामुळे कदाचित सावकार लोक कर्ज देणे बंद करतील अशा परिस्थितीत शेतकऱ्यांच्या शेतीस अपयुक्त कर्ज मिळण्याची व्यवस्था झाली पाहिजे. नाही तर त्याला कर्ज मिळणे शक्य होईल. या दृष्टीने या कायद्यामध्ये फायनान्सिंग वॉरंट्स (Financing of crops) आणि सीझनल फायनान्स (Seasonal finance) या दोन गोष्टीकरिता

दिलेल्या कर्जावर सावकाराना बंधन नसल्याने ह्या बाबी करून कर्ज देण्यास सावकार अनमान करणार नाहीत हे योग्य आहे. ही जी शेतकऱ्यांना कर्ज देण्याची सावकारांची प्रवृत्ती कायम ठेवण्याची व्यवस्था आहे ती चांगली आहे पण या बाबतीत महत्वाची अंक गोष्ट आहे ती ही की ह्या बाबीच्या नांवाखाली १९४५ पूर्वीचे ही कर्ज येथील की काय? त्याबद्दल मला ऑनरेबल मुन्टर साहेबांकडून खुलासा पाहिजे आहे तो त्यांनी आपल्या भाषणांत दिला तर बरे होईल, ती बाब म्हणजे, या कायद्यान्वये सावकारांना कर्जाच्या ज्या त्या दोन मक्कती देण्यांत येणार आहेत हा कायदा असलांत येण्यापूर्वीच्या या बाबीकरिता दिलेल्या कर्जाबद्दल ही देण्यांत येणार आहेत काय? ही बाब या कायद्यांत स्पष्ट झालेली नाही.

दुसरा मुद्दा जो विचाराकरिता घेणे आवश्यक आहे तो म्हणजे ह्या कायद्याचा फायदा जास्तीत जास्त शेतकऱ्यांना मिळावा. या दृष्टीने पाहता या कायद्यांत तरतूद अशी आहे की ज्या शेतकऱ्यांचे शेतीशिवाय अितर बाबींचे अल्पतः त्यांच्या सर्व अल्पतःच्या अंकतृतीयांशाहून किंवा ५०० रुपयाहून जास्त नसेल अशा शेतकऱ्यांनाच या कायद्याचा फायदा घेता येईल आणि अितरंगांना याचा फायदा मिळणार नाही. म्हणजे कूळवहिवाट कायद्याचे जे फॅमिली होल्डिंग (Family Holding) होते तीच मर्यादा या कायद्यांत ठेवलेली आहे. या तरतुदीमुळे माझ्या मते जास्त शेतकऱ्यांना फायदा मिळणार नाही. वास्तविक पाहता ज्यांच्या जवळ जास्त जमीन म्हणजे १०, १५ शेत किंवा १००, २०० अंकर जमीन आहे ते शेतकरीहि फार दुःखी आहेत. त्यांचीहि अधिक परिस्थिती फारच खराब आहे, व त्यांच्या वरहि कर्जाचा बोझा फार आहे. म्हणून या कायद्यातील जी अंकतृतीयांश अल्पतः किंवा ५०० रुपयांची जी मर्यादा आहे ती वाढविली पाहिजे. असे बरेचसे शेतकरी आहेत जे शेतीशिवाय अितर घंदे करतात व ज्यांचे अितर घंद्यांचे अल्पतः या कायद्यांत घातलेल्या मर्यादपेक्षा जास्त आहे. बरेचसे शेतकरी रिकामपणाच्या वेळांत गाडीभाड्याची कामे करतात. अशी कामे त्यांना करणे भागच असते. नाही तर त्यांचा बुदरनिवाह चालणे अशक्य होऊन बसते अशा गरीब शेतकऱ्यांनाहि या कायद्यांत वाव मिळणार नाही ते या कायद्याच्या फायद्यापासून वंचित राहणार आहेत. तेव्हां माझे असे म्हणणे आहे की जास्तीत जास्त शेतकऱ्यांना या कायद्याचा फायदा होईल अशा रीतीने यांत सुधारणा केली पाहिजे।

दुसरा मुद्दा म्हणजे ज्या शेतकऱ्यांवर १५,००० रुपयापेक्षा जास्त कर्ज आहे अशा शेतकऱ्यांना या कायद्याचा फायदा मिळणार नाही पण मला असे सांगण्याचे आहे की पंधरा हजार रुपयापेक्षा जास्त कर्ज असणारे असे कितीतरी शेतकरी आहेत की ज्यांनी पंधरा हजार रुपये कर्ज घेतलेले नाही. मूळ कर्ज फक्त तीन चार हजार रुपये आहे पण त्याचे व्याज घेऊन त्यांच्याकडून निरनिराळ्या वेळी सावकाराने कर्ज रोखे लिहून घेतले आहेत व अशा रीतीने त्यांचे कर्ज आज १५,००० रुपयापेक्षा जास्त होत आहे आणि निरनिराळ्या वेळी कर्ज रोखे लिहून घेतलेले असल्यामुळे आज त्या शेतकऱ्याला व्याज कितं व मुद्दल किती हे कोर्टात सिद्ध करणे कठीण होणारे आहे. अशा शेतकऱ्यांना ही या कायद्यापासून फायदा मिळाला पाहिजे. यासाठी १५,००० रुपये मूळकर्ज समजले पाहिजे. तसेच आज बरे शेतकरी दिसतात की, ज्यांचेवर कर्ज पंधरा हजारपेक्षा जास्त आहे पण त्यांची व्हिस्टेट मात्र फारच कमी आहे अशा शेतकऱ्यालाहि या कायद्याची मदत मिळणार नाही. म्हणून अशी अट

घाळतांना हा विचार होणे आवश्यक आहे की १५,००० रुपये कर्ज म्हणजे कसे? मूळ कर्ज की व्याजसह झालेले कर्ज. मला वाटते १५,००० रुपये म्हणजे मूळ कर्ज असावे. व्याजाने झालेले कर्ज नसावे. नाहीतर या कायद्याचे कायदा फारच सोड्या शेतकऱ्यांना मिळेल. म्हणून या कलमात माझ्या मूखवप्रमाणे अन्वेष करणे जरूर आहे असे मला वाटते.

दुसरा महत्वाचा मुद्दा असा आहे की, या कायद्यात कर्जाचे हप्ते पाडतांना शेतकऱ्यांची कर्ज फेडण्याची अपत ठरविरी आहे आणि ती म्हणजे त्याच्या जायदादीच्या किमतीच्या शेकडा मात टक्के आहे. असा अपत ठरवितांना आपल्या बाही गोष्टींचा विचार होणे आवश्यक आहे. समजा असा शेतकऱ्याचे कर्ज १५,००० हजार रुपये आहे व त्याचे बारा हप्ते पाडावयाचे आहे ह्यातून त्याला कायद्याप्रमाणे चाळीस टक्के मूड मिळेल असे घरेलू तर त्याचे कर्ज ९,००० रुपये भुरते. हे बारा वर्षांत फेडावयाचे म्हणजे ३५० रुपयांचा अंक असे बारा हप्ते पडतील. पण नेवडी त्याची वचत आहे काय? ह्या वेळेस त्याच्या अस्टेटाच्या किमतीबरोबरच त्याच्या वार्षिक भुत्पन्नाचाहि विचार करणे आवश्यक आहे व त्यावरून हे पाहिले पाहिजे की, तो हा हप्ता देऊ शकेल की नाही. शेतकऱ्यांचे वार्षिक भुत्पन्न ठरवितांना तीन चार गोष्टी विचारांत घेतल्या पाहिजेत. त्याची जायदाद किती आहे, जायदादीची किंमत किती आहे, त्याचे दरमाल भुत्पन्न किती आहे, त्यातून त्याला स्वतःच्या प्रयत्नाकरिता किती पाहिजे, शिवाय त्याला पुढील वर्षी शेतीला लावावयास किती खर्च लागेल ह्या सर्व गोष्टींचा विचार करून नंतर मग त्याची कर्ज देण्याची अपत ठरविली पाहिजे. या कायद्यात बरील गोष्टींचा विचार केला दिसत नाही. हा विचार जर केला नाही तर हा कायदा केला आणि न केला मारखेच होईल असे माझे मत आहे. कारण त्यावर नवीन कर्ज होण्याचा संभव कायमच आहे. कृषि मंत्रालयातलेल्या गोष्टींचा विचार करून शेतकरी दरवर्षी किती कर्ज फेडू शकतो हे पाहिले पाहिजे आणि काही काळाने कां होईना तो स्वावलंबी होईल याचा विचार केला पाहिजे. या दृष्टीने या कायद्यात हप्त्यांच्या विचारसरणीत बदल करणे जरूर आहे असे मला वाटते.

दुसरे या कायद्यात संयुक्त हिंदू कुटुंबाचा विचार करण्यांत आला आहे. या बाबतीतहि अतिर बाबीप्रमाणे ४० टक्के मूड आणि १५,००० रुपये कर्जाची मर्यादा ठेवलेली दिसते. असे ठरवितांना कळवहिवाट कायद्यातोल फॅमिली होल्डिंग (Family holding) सारखा विचार केलेला दिसत नाही. त्याच तत्वाचा उपयोग येथे हि करण्यांत आला पाहिजे. समजा असा कुटुंबात चार लोक आहेत आणि पुढेमाणे ते वेगळे निघाले तर त्यांच्या चार शाखा पडतील व कर्जाचा बोझ चार लोकांवर पडेल म्हणून संयुक्त हिंदू कुटुंबासाठी ही मर्यादा जास्त ठेवली पाहिजे. नाहीतर योग्य न्याय होणार नाही.

आणखी एक गोष्ट विचारांत घेण्यासारखी आहे. ती म्हणजे व्याजाच्या दराबद्दल होय. या कायद्यात कर्जाचा हिशेब करतांना विशिष्ट कर्जासाठी ६ टक्के व्याजाचा दर आणि काही कर्जासाठी ९ टक्के व्याजाचा दर ठरवण्यांत आला आहे. मला वाटते हा व्याजाचा दर जास्त होतो. कारण हा कर्ज निवारण कायदा आहे व याचा शेतकऱ्यांना जास्तीत जास्त फायदा होईल अशा रीतीने याला तयार केले पाहिजे. १९४५ सालापूर्वी ३० वर्षे म्हणजे हा कायदा १९१५ सालापासून या कर्जांना लागू होईल. शेकडा ६ किंवा ९ टक्के दराने जवळजवळ १६ वर्षांत दामदुप्पट होते. ह्या हिशो-

वाने पाहिले तर या ३० वर्षांच्या काळांत जर ६ टक्के व्याजाचा दर लावला तर शेतकऱ्याला मुद्द-
न्याच्या तीनचार पट रक्कम द्यावी लागेल. केव्हां केव्हां सावकाराने मुद्दल वमूल केलेलेच असने
आणि कर्ज रोखे फक्त व्याजाच्या पैशाचे असनात म्हणजे सावकार व्याजाच्या रूपाने मुद्दल वमूल
करून घेन असतो. तेव्हां हा व्याजाचा दर फार होतो तो कमी केला पाहिजे तेव्हांच शेतकऱ्याला
याचा फायदा होईल. तसेच यांत शेतकऱ्याला जी ४० टक्के सूट देण्याचे ठरविले आहे तीही
फारच कमी आहे. हे सुटीचे प्रमाणहि वाढविण्याची आवश्यकता आहे. आमचा शेतकरी तर म्हणतो
कीं सावकाराला चालत आलेल्या जुन्या कर्जाबद्दल काहीच देण्याची आवश्यकता नाही. कारण त्याने
व्याजाच्या रूपाने मुद्दलापेक्षांहि जास्त रक्कम वसूल केलेली असते. या दृष्टीने व्याजाचा दर कमी
करण्याची आणि सुटीचे प्रमाण वाढविण्याची आवश्यकता आहे. तसेच कर्जाचा निवाडा करतांना
शेतकऱ्याकडून सावकाराच्या घरांत किती रक्कम गेली आणि त्याने अजून किती देणे योग्य आहे
याचा विचार करणे आवश्यक आहे.

आणखी महत्वाचा मुद्दा म्हणजे यांत सरकारचे कर्ज, को-ऑपरेटिव्ह सोसायटीचे कर्ज यांचा
समावेश सूट देण्यांत केलेला नाही. हे बरोबर आहे. या कर्जांत कपात होणे बरोबर नाही. पण हे कर्ज
परत करावयाच्या पद्धतीमध्ये थोडी सुधारणा होणे आवश्यक आहे. या कर्जाचे व्याज जे असेल
ते कमी प्रमाणांत आकारलें गेले पाहिजे. या कर्जाचे हप्ते पाडलेले असतील तर या कर्जाचे हप्ते
आणि अंतर कर्जाचे हप्ते यांचा बरोबर मेळ बसला पाहिजे. यांत असेहि कलम आहे कीं सरकारी
रक्कम अगोदर चुकविली जाईल. या कायद्याप्रमाणे कर्जफेडीचा काळ बारा वर्षांचा आहे. या
काळांत त्याचे सर्व कर्ज फिटेल अशी व्यवस्था केली पाहिजे. हा काळ वाढला तरी चालेल पण कर्जाचा
अंकंदर हप्ता जो कोर्ट ठरविलो तो जास्त असता कामा नये म्हणजे या कर्जाचे हप्ते अशा रीतीने पाडले
पाहिजेत की तो शेतकरी १२ वर्षांनंतर स्वावलंबी होईल. म्हणून हा कर्जाचा हप्ता त्याच्या
निव्वळ उत्पन्नाच्या किंवा बचतीच्या अंकतृतीयांश किंवा अंकषष्टांश यापेक्षां जास्त नसावा असे
आपण काहीं तरी प्रमाण ठरविले पाहिजे. हप्ते ठरवितांना त्याच्या अंकंदर उत्पन्नाचा विचार
न करता त्याच्या निव्वळ उत्पन्नाचा विचार केला पाहिजे. या बाबतींत फार तर असे करता येईल
की सरकारचे कर्ज फेडत असतांना फार तर त्यांचे बारापेक्षां जास्त हप्ते पाडता येईल पण. ते हप्ते
त्याच्या बचतीच्या किंवा निव्वळ उत्पन्नाच्या अंकतृतीयांश किंवा अंक चतुर्थांशपेक्षां जास्त नसावे.
नाहीं तर तो शेतकरी या बारा वर्षांच्या काळानंतरहि स्वावलंबी बनणार नाही.

दुसरा महत्वाचा मुद्दा असा आहे कीं आमच्या प्रांतांतील शेतकऱ्यावर अंतर प्रांतांतील साव-
कारांचे कर्ज असेल तर काय करावे याचा या कायद्यांत मुळीच विचार केला गेला नाही. हा नवीन
मुद्दा आहे. कारण मी ज्या भागांत राहतो त्या भागांत आपल्या प्रांतांत काहीं भाग मुंबई प्रांताचा
आला आहे. तसेच तेलंगणांत मद्रास प्रांताचाहि आला असेल तेव्हां अशा भागांतील जे शेतकरी आहेत
त्यांचे सावकार दुसऱ्या प्रांतात असणे संभवनीय आहे. अशा शेतकऱ्याबद्दल या बिलांत विचार केला
नाहीं. या बिलांत फक्त हैदराबाद मध्ये झालेल्या व्यवहाराचा विचार केला आहे. म्हणून परक्या
प्रांतांत झालेल्या व्यवहाराबद्दल यांत विचार व्हावयाला पाहिजे. आपण शेतकऱ्यांच्या सर्व सुख-
सोबीचा यांत विचार केला आहे तेव्हां या सुखसोबीचाहि यांत विचार करण्याची अत्यंत जरूरी आहे.

अशा रीतीने हा कायदा भी मुचविलेल्या सूचनांचा समावेश करून गेतकन्यांना अधिकाधिक उपयुक्त केला तर फार चांगले होईल. अतिके बोलून भी आपले भाषण संपवितो.

श्री. देवीसिंग चव्हाण :-आपण इन्क्ल्यूजिव्ह व्हिलेजेस (Inclusive Villages) म्हणता, म्हणजे काय ? हा कायदा जेव्हा स्टेट मध्ये लागू होईल तेव्हा तेथेहि लागू होईल.

श्री. लिंबाजी मुक्ताजी पानसंबळ :-माझ्या म्हणण्याचा अर्थ असा की जे कर्जदार पूर्वी पर-प्रांतात राहात आणि आता त्यांचा समावेश आपल्या प्रांतात झाला आहे, पण त्यांचे सावकार अजूनहि दुसऱ्या प्रांतानच आहेत, अशा सावकारांना आपण या कायद्याप्रमाणे जबाबदार घेऊ शकाल काय ?

श्री. देवीसिंग चव्हाण :-जर कर्जदार आपल्या स्टेटमध्ये असेल तर त्याचा सावकार कोठेही असला तरी त्याला हा कायदा लागू होईल.

श्री. लिंबाजी मुक्ताजी पानसंबळ :-जर असे आहे तर फारच चांगले आहे. शिवाय भी ज्या आणखी काहीं सूचना केल्या आहेत आणि ज्या अडचणी सांगितल्या आहेत त्यांचाहि यांत समावेश केला तर फार चांगले होईल.

श्री. बी रेंद्र पाटील (अलंद) :-अध्यक्ष महोदय, आज जिस असेंब्ली में हमारे सामने अँग्लो-कल्चरिस्ट डेटर रिलीफ बिल आया है। किसी भी मुल्क के मजदूरी हालात वहाँ के जो कास्तकार हैं उनकी खुशहाली परमबनी है। यदि हमारे मुल्क को तरक्की करनी है तो हमारे कास्तकारों के मजदूरी हालात ज्यादा अच्छे होने चाहिये। किसी भी मुल्क में या हमारे मुल्क में तरक्की करनी है और पैदावार बढ़ानी है कास्तकारकी मजदूरी हालात अच्छी होनी चाहिये। हमारे मुल्क में ७५ फीसद लोग कास्तकार हैं। और मैं यदि कहूँ कि ८० फीसद कास्तकार हैं तो भी बेजा न होगा। लेकिन आज हमारे कास्तकार कर्जे के भार के नीचे दबे पड़े हैं और आज कर्जे का काफी बोझा है। वह जो पैदावार आज निकालते हैं उसमें से बहुत सारी तो कर्जे की अदायगी में जाती है। और वे बिलकुल मजदूरी पस्ती में पड़े रहते हैं। उनकी कास्त से जो सालाना आमदनी होती है उसमें से ज्यादातर हिस्सा कर्जे की अदायगी में जाता है। और अपनी कास्त अच्छी करने के लिये उनके पास पैसा नहीं रहता। अपनी पैदावार बढ़ाने के लिये वे नये इन्विस्टमेंट्स बिस्तमाल नहीं कर सकते। और जिसी वजह से आज हमारे मुल्क में पैदावार घट रही है। यह खुशी की बात है कि जिसके मुताल्लुक हुक्मत बहुत गौर से सोच रहें हैं। और काफी सोचकर आजके हमारे मिनिस्टर साहब ने यह कानून असेंब्ली के सामने लाया है। पहले जो डेट्स रिकन्सिलियेशन बोर्ड था वह काम अच्छा नहीं कर सका उसकी बिस्तेहान बजमायशी से मालूम हुआ कि उसका काम फेल्यूर रहा। बोर्ड बनाने में जो हुक्मत का मकसद था कि अँग्लो-कल्चरिस्ट का कर्जा कम हो वह मकसद पूरा नहीं हो सकता था। जिस बोर्ड को बितनाही पाँवर था कि वह डेटर और क्रेडिटर को एक जगह लाकर उनमें कन्सिलियेशन कराने की कोशिश कर सकते थे। जिससे ज्यादा जिस बोर्ड को कोजी पाँवर नहीं था। जिस लिये जिस बोर्ड से बज्जुर्नमेंट का पूरा मकसद हासिल नहीं हो सकता था। यह जो बोर्ड बनाया गया था उसका काम एक जिले के दो या तीन ठाँवके में बेक्सपेरिमेंट के तौर पर किया जा रहा है। लेकिन वह बराबर साबित नहीं हुआ।

हुकूमत यह समझती है कि कास्तकारों के कर्ज का बोझा कम करना बहुत जरूरी है। और ज़िमी ख्याल में यह बिल लाया गया है। जिसमें बहुत कुछ बातें हैं। यह बिल देखने से यह बात साफ़ मालूम होती है कि कास्तकारों के कर्ज का बोझा कम करने के लिये यह बिल लाया जा रहा है। और जिस बात की कोशिश की जा रही है। यह जो बिल आज सरकार की तरफ से यहां पेश किया गया है वह काबिले मुबारकबाद है और यह बिल ऑनरेबल मिनिस्टर साहब ने लाया है। जिस लिये मैं अन्ते पहले मुबारकबाद देता हूं।

यह जो बिल यहां लाया जा रहा है उसके बारे में मैं अपने चंद ख्यालान यहां रखना चाहता हूं। जिसमें जो ४ या क्लॉज हैं वह अँडजेस्टमेंट्स ऑफ़ डेट के बारे में हैं। उसमें यह बतलाया गया है कि सेक्शन ४ के तहत कोऑ डेटर या क्रेडिटर जिस कानून के नाफिस होने के बाद तीन महीने में अपना डेट अँडजेस्टमेंट करने के लिये कोर्ट को दरखास्त कर सकता है। ऐसी दरखास्त आने के बाद फिर कोर्ट जिसके बारे में क्रेडिटर या तमाम क्रेडिटर्स को अतिशय देगी और उसके बाद गव्हर्नमेंट को-ऑपरेटिव्ह मोसायटीज और दूसरों को नोटीस देगी। जिसके बाद डेटर या क्रेडिटर जो भी हो उसे अपने पूरे अकाउंट्स कोर्ट के सामने पेश करेंगे होंगे और तमाम डेट्स का तफसील भी देना होगा। और फिर उनके अकाउंट्स जांचे जायेंगे। और हालात के लिहाज से कर्ज को ३०, ४०, फीसद कम करेंगे। याने पूरे कर्ज में से ३०, ४० परसेंट डिडक्ट करेंगे। कोर्ट को यह अख्तियार है कि वह जिसने अप्लिकेशन दी है उसकी प्रापर्टी देखे और उसका व्हैल्यूअेशन करें और यह बतलाया जायेगा कि जो कर्जा है उसकी आदायगी किस तरह से होनी चाहिये। पहले जो असेट्स है उसकी अंक लिस्ट बनायी जायेगी। प्रापर्टी की जो लिस्ट बनायी जायेगी उसके बाद उसे कितना देना है उसकी भी लिस्ट बनायी जायेगी। और अगर यह देखा गया कि उसके पास काफी जायदाद नहीं है और ५० फीसद जायदाद से कम है तो ऐसी हालत में क्रेडिटर को पैसे कम करने के लिये कहा जाता है। और फिर उसके बाद अँडजेस्टमेंट होगा। जिस तरह कुछ अँडजेस्टमेंट होने के बाद कास्तकार को फिर कर्ज की रकम आदा करनी होगी। कर्जा अदा करने की ज़िम्मेदारी को-ऑपरेटिव्ह बैंक को दी गयी है। जहां तक हो सके गव्हर्नमेंट कास्तकारों का कर्जा कम करने की कोशिश कर रही है।

यह जो कानून लाया गया है वह काफी अच्छा है लेकिन जिसमें कुछ नुक्स नहीं हैं ऐसी बात नहीं है। मुझे तो जिसमें कुछ खामिया नजर आती है वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। जिसका मतलब यह नहीं है कि जो बिल बनाया गया है वह कुछ माने नहीं रखता है। लेकिन जिसमें कुछ डिफेक्ट्स मेरे ख्याल से जरूर रहें हैं। मैं समझता हूं कि मेरे जो ख्याल हैं उसके बारे में और मेरे जो सुबहात हैं उसके बारे में ऑनरेबल मिनिस्टर साहब यदि कुछ बजाहत करेंगे तो अच्छा होगा। सबसे पहले डेट्स की जो तारीफ़ जिस कानून में की गयी है उसमें मुझे ऐसा लगता है कि कहीं डेट की डेफ़िनिशन में रेंट न आ जाय। क्योंकि डेटर की जो तारीफ़ में यह बताया गया है कि लैंड होल्डर याने टेनसी कानून में लैंड होल्डर की जो तारीफ़ बतायी गयी है वही तारीफ़ जिस कानून में भी लागू होगी। जिसमें लैंड होल्डर ही आये है मेरा ख्याल है। कि कर्ज की तारीफ़ में लगान को लाने की जरूरत नहीं है। अगर ऐसे लगान को आपको कर्ज की तारीफ़ में लाना है तो फिर अलग बात है। लेकिन यह जो कानून टेनसी अर्मेंडिंग बिल लाया गया है, मैं देखता हूं कि उसके लिये उसमें बहुत कुछ प्राविजन

रखा है। रेंट्स के बारे में भी इसमें सेक्शन है लेकिन रेंट्स को कर्ज की तारीफ में लाकर तमफिया कर सकते हैं तो मैं समझता हूँ कि ऑनरेबल मिनिस्टर साहब जब जवाब देंगे तो मेरा जो गुवा है उसको रफा करने की कोशिश करेंगे और इसकी वजहात फरमायेंगे।

असके बाद कानून में डेटर का डेफिनेशन आता है। उसमें यह बताया गया है कि जो कर्जदार होगा उसे डेटर कहा जायेगा और जिससे कर्जा लिया गया है उसे क्रेडिटर कहा जायगा। जो सही माने में डेटर हैं वह इस कानून से फायदा नहीं उठा सकते हैं। इसमें डेटर की तारीफ की गयी है। उसकी तारीफ से मुझको कुछ गुबहा मालूम हुआ। उसकी इस तारीफ में लैंड होल्डर को लिया गया है। लेकिन सिर्फ लैंड होल्डर को लेकर हमारा यह जो कानून बनाने का मकसद है वह पूरा नहीं होनेवाला है। इसके बारे में हमारा मकसद यह होना चाहिये कि जो कर्ज का भार आज किसान पर है वह कम होना चाहिये। आज जो ऑग्रिकल्चरल लेबरर्स हैं या दूसरे जो जिरातपर काम करनेवाले हैं उनपर और छोटे छोटे कास्तकार पर कर्ज का भार ज्यादा है। जो बड़े बड़े लैंडलॉर्ड्स हैं उनपर तो कर्ज ज्यादा नहीं है। तो इन लोगों पर जो कर्ज का भार ज्यादा है उसे कम करना चाहिये। यदि हम लैंड होल्डर को उसमें रखेंगे तो भलेही रखे लेकिन फिर बाकी लोगों को इस कानून से फायदा नहीं मिलेगा। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि इसमें टेनंट को किस लिये नहीं रखा है। होल्डर को जो तारीफ इस अक्ट में ली गयी है वह लैंड रेव्यूनु अक्ट में जो तारीफ है वही ली गयी है लेकिन इसमें ऑग्रिकल्चरल लेबरर्स या टेनंट्स की डेफिनेशन नहीं लायी है। इसमें यह डेफिनेशन लाने की जरूरत है। यदि यह नहीं किया गया तो इस कानून का फायदा टेनंट्स (Tenants) को जितना मिलना चाहिये अन्ते वह नहीं मिलेगा।

डेटर की जो तारीफ की गयी है उसमें इंडिबिड्युअल डेटर के लिये तीन शरायत हैं। जो जिन तीन शरायत को पूरा करता है वह डेटर की तारीफ में आता है। उसमें यह बताया गया है कि जो ऑग्रिकल्चरल परपज के लिये जमीन अपने कब्जे में रखता हो और यह जमीन उसके कब्जे में ३० सालों से ज्यादा टाइम तक न हो याने ३० जनवरी १९४५ के पहले ३० तीस साल तक हो ऐसे कास्तकार डेटर की तारीफ में आ सकते हैं लेकिन इससे यह बात जाहिर है कि वे तमाम लोग जो ३० साल से पहले के पुराने हैं वह इस कानून की डेफिनेशन में नहीं आ सकते हैं। और उसी तरह यदि कोअो आदमी इस कानून के एक साल पहले का डेटर है या कोअो गैर जिराती आदमी है तो वह इस कानून में नहीं आता है। जिनकी गैरजिराती आमदनी ३३½ फीसद से ज्यादा न हो और जिनका कुल बिनकम ५०० रुपये से ज्यादा हो तो वे डेटर की तारीफ में आ सकते हैं। इसका मतलब यह है कि किसी को आमदनी यदि ३३½ फीसद से ज्यादा गैर जिराती हो तो वह डेटर की तारीफ में नहीं आ सकते हैं।

इस कानून में यदि कोअो कंडिशन पूरे नहीं होते हैं तो उसे साबित करने की जिम्मेदारी डेटर पर डाली गयी है। और डेटर को यह साबित करना पड़ता है कि ३० साल के पहले मैं इस जमीन पर काबीज था मैंने खुद इस जमीन पर कास्त को भी और मेरी बिगर कास्त आमदनी बँक तिहाजी से ज्यादा नहीं है। यह तमाम डेटर को साबित करना पड़ता है। जब तक यह तमाम साबित न हो तब तक वह बाने नहीं बढ सकता।

क्या आज की हालत में जिन तमाम बरायत को साबित करने की अहमियत कायनकार में है या नहीं इसके मुतालुक आपको सोचना पड़ेगा। अगर यह भार हम कायनकार पर डालेंगे तो मैं समझता हूँ कि कायनकार को जिन बिल का फायदा नहीं मिलेगा। पिछले डेट कन्सिलिअेशन अक्ट में भी डेटर की तारीफ थी। लेकिन मैं अंक सीधीसादी तारीफ चाहता हूँ और वह जिस तरह से होनी चाहिये कि डेटर वह शख्स है जिसके पास जिरायती जमीन है या जो जिरायती जमीन रखता है। जिसको अगर आप और बढ़ाना चाहते हैं तो यह कह सकते हैं कि जो परसनली कल्टिवेट करता है वह डेटर समझा जायगा। लेकिन जिन हद तक शर्त आयद करना मैं मुनासिब नहीं समझता। क्योंकि बहुत से ऐसे पेट्टी लैंडहोल्डर्स (Petty Landholders) हैं जिनके पास ब्रैल वगैरह अस्टोविलिशमेंट की चीजे नहीं होतीं। जिसलिये उन्होंने अपनी जमीन मजबूरन दूसरे लोगों को कायन करने के लिये दी है। जिन लिये जिरायती जमीन रखनेवाले को डेटर में शामिल करना मेरे ख्याल से काफी है। जिसमें जो डेटर की डेफिनिशन (Definition) दी गयी है उसमें अंक के बाद अंक शर्त रखी गयी है जिसमें कभी तरह की पेंचिदगियां पैदा होंगी और सच्चे मकरूज को जिससे फायदा शामिल नहीं हो सकेगा जिसके लिये हम यह कानून बनाने जा रहे हैं। बल्कि जिससे उसका और अक्सप्लायटेशन होगा। जिस डेफिनिशन में जो 'And' 'And' लगाये गये हैं उसमें मुझे डर है कि जिन डेफिनिशन का गलत अइस्तेमाल होगा। जिसमें बरायतें रखी गयी हैं उनमें से अगर वह अंक भी पूरी न कर सके तो वह डेटर की तारीफ में नहीं आयेगा। जिस लिये इसके मुतालुक सोचने के लिये मैं अपने ख्यालात अवान के सामने रख रहा हूँ।

जिन कानून में जो पूरा प्रोसीजर है उसको जड सेक्शन ४ है। अडजस्टमेंट (Adjustment) वगैरह का जो प्रोसीजर है उसकी बिना सेक्शन ४ है। जिससे यह होमा कि सेक्शन ४ के तहत अगर कोई डेटर या क्रेडिटर सामने न आये तो कोर्ट कुछ नहीं कर सकेगी। डेटर अपनी जगह पर, क्रेडिटर अपनी जगह पर और कोर्ट अपनी जगह पर बैठे रहेंगे। सेक्शन ४ में जो अलफाज अइस्तेमाल किये गये हैं उनको अपूर हमको पूर करना पड़ेगा। जिसमें यह कहा गया है कि जिस कानून के नाफीस होने के बाद तीन महीने के अंदर क्रेडिटर या डेटर को कोर्ट में आकर रजू होना चाहिये। मैं समझता हूँ कि यह कलील मुद्दत है। जिस लिये कि आज हमारा कायनकार देहात में रहता है और देहात के अंदर ऐसे अइरिअर पार्ट्स (Interior parts) हैं जहाँ पर आपके कानून की अइत्तिहासिक नाफीस होने के बाद तीन महीने के अंदर पहुंचना मुश्किल है। आपका कानून ज्यादा से ज्यादा जरीदे में शायी होगा। शायद यह कहा जाय कि उनको मौके पर अइत्तिल नहीं हुआ जैसा मालूम पड़े तो इसके लिये बाद में अक्सेटेन्शन दिया जायगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि इसके लिये हमको आज ही अंक साल की मुद्दत देनी चाहिये। आखिर हमने यह बिल जिसी मकसद से लाया है कि मदयून पर जो कर्जे का बोझ है उसको किसी तरह से हलका किया जाय। अगर जिस तीन महीने की कलील मुद्दत के अंदर वह कोर्ट में रजू न हो सके तो उसका मामला बैरून मियाद हो जायगा और जिस तरह से उसको मुकदमेबाजी की कशाकश में मुत्तिला करना ठीक नहीं है। जिस लिये उनको काफी मौका दिया जाना चाहिये। मेरी यह दरखास्त है कि यह मुद्दत अंक साल की होनी चाहिये। दूसरी बात यह है कि जिस बिल के अंदर जो प्रोवीजन्स हैं उसके तहत यह बताया गया है कि जिस तीन महीने की मुद्दत के अंदर ही जिस स्टेट के जितने भी डेटर्स और क्रेडिटर्स हैं

अनुको आना चाहिये। आनरेबल मूव्हर आफ दि बिल (Hon. Mover of the Bill) शायद यह समझते हों कि शायद अिम तरह की शर्त से हम अिम लेनदेन के मामले को वनस फॉर आल (Once for all) खतम कर देंगे। अगर उनका यह मकसद हो तो वान अलग है। लेकिन शर्त यह है कि तीन महीने के अंदर पूरे डेब्टर्स और क्रेडिटर्स को आना चाहिये। फर्ज कर लिया जाय कि कोओ डेटर अिस मुद्दत के अंदर नहीं आया तो अुस सूरत में क्या अिलाज अिस बिल में रखा गया है? क्या अिसमें अिस मुद्दत के बाद आने की गुंजाअिश है?

श्री. देवीसिंग चव्हाण :—फिर अुमके बाद सेक्शन ५ है।

श्री. बीरेंद्र पाटोल :—मुझे जो शुकवा है वह मैं जाहौर कर रहा हूं। और किसान को कोओ नुकसान नही होगा।

श्री. के. व्यंकटरासरव :—अिम कानून के निफाज के बाद, तीन महीने के बाद जो लेनदेन होता है अुसके अॅडजस्टमेंट (Adjustment) के लिये क्या प्रोवीजन अिस बिल में है वह तो अिस बिल के पढने से मालूम नहीं होता। मुझे अॅसा मालूम होता है कि यह तमाम बिल अुन कर्जजात के मुताल्लुक है जो अिम बिल के नाफाय होने के पहले लिये या दिये गये हैं। लेकिन अिसके बाद अगर कोओ कर्ज दिये जायं तो अुसके बारे में अिम बिल में कोओ प्रोवीजन नहीं दिखायी देता। अिम बिल के निफाज के बाद कोओ कर्जा हो न दिया जाय अॅसा तो अिस बिल में नहीं लिखा गया है और न अिस तरह की कोओ पाबंदी हम लगा भी सकते हैं। आज देहांत की माआशी हालत अॅसी है कि अुनको मनीलेंडर्स जोकि ज्यादा सूद खाते हैं अुन्हीं से काश्तकारोंको मजबूरन कर्जा लेना पडता है और यह सही बात है कि गवर्नमेंट आज अिस प्रोजीशन में नहीं है कि वह हरवक्त हर काश्तकार को अपनी तरफ से कोओ कर्जा दे सके। कुछ कोआपरेटिव सोसायटीज अिस दृष्टि से कायम की गयी हैं लेकिन हम देखते हैं कि अिन सोसायटीज की तरफ से काश्तकारों को अॅसी माली अिमदाद नहीं मिल सकती अिससे काश्तकारों को मनीलेंडर्स से कर्ज लेने के लिये मजबूर न होना पडे। काश्तकार के सामने अॅसे मसायल खडे होते हैं कि अुसको रकम की फीरी जरूरत पडती है और अुस वक्त मजबूरी हालत में आअिदा साल में जो पैदावार होगी अुसमें से कर्जा देने के वादे पर अुसको कर्ज लेना पडता है। अुसको बरवक्त रकम मिलने के लिये कोओ अिन्तजाम हमारी तरफ से नहीं है। अिसी लिये भी आअिदा लेनदेन का व्यवहार होगा लेकिन अुसके लिये कोओ मुमानियत अिसमें नहीं है। फर्ज कर लिया जाय कि अिस कानून के नाफीस होने के तीन या छः महीने के बाद किसी क्रेडिटर ने किसी डेटर को कर्ज दिया तो अुसके लिये क्या किया जायगा? मैं समझता हूं कि अिस बिल के अंदर अिसके लिये कोओ अिलाज नहीं है। अिस पर हमको गौर करना चाहिये।

१९३६ के बाद जो ट्रांजाक्शन्स (Transactions) हुये हैं अुनके अकाअुंटस लाकर पेश करने के बारे में बीर कर्ज की अदायगी के अिन्तजाम के बारे में कुछ प्रोवीजन्स अिस बिल में हैं। मुमकिन है कुछ बल्लवध्दों से हो लेकिन मैं अपनी अेक राय अिसके बारे में जाहौर कर देना चाहता हूं। आज हम देखते हैं कि लां बाफ लिमिटेशन्स (Law of Limitations) के तहत कोओ कर्ज दिया गया है तो कर्ज की अदायगी अगर तीन साल के अंदर नहीं हुयी है तो डेटर के मुकाबिले में दायन को राका खाना पडेगा। अगर अॅसा राका वह नहीं लाता तो अुसके राबिटस बीर कर्ज बे-बाक ठगवूर किये जावेंगे। बानी वह मामला बेरून मियाद करार दिया जाता है और फिर तीन साल

के बाद कोअी दायन कोर्ट में जाकर मदयून के खिलाफ दावा पेश नहीं कर सकता। लेकिन अिम बिल में हम यह देख रहे हैं कि १९३६ जनवरी के बाद जो कर्जाजात हैं उनका अंक मिलमिला चला आ रहा है और वे ब्रेकनी मियाद हो गये हैं लेकिन उनको अंदरूनी मियाद नसव्वु कर के अन पुराने कर्जाजात की अदायगी का अंतेजाम किया जा रहा है। असका मतलब यह है कि जो क्रेडिटर अपने कर्जाजात वसूल करने के हक से महरूम होकर बैठ हैं उनको आप फिर से फेश राइट्स (Fresh Rights) देना चाहते हैं। अगर वाकअी हम अग्रिकल्चरल डेबर्स (Agricultural debtors) को उनके कर्ज के बोझ से हलका करना चाहते हैं तो आपको यह समझ लेना चाहिये कि १९३९ से जो कर्ज चले आ रहे हैं उनकी मूल रकम से तिगुनी या चौगुनी रकम क्रेडिटर्स ने हासिल कर ली है, वे लोग फिरसे अदालतों में आयगे-आप डेबर्स को ४० फीसद कन्सेशन देंगे वगैरह मत्र ठीक है लेकिन यह तो हमारा कभी मकसद नहीं होना चाहिये। जिन्होंने असली रकम मे भी ज्यादा सूद अब तक हासिल किया है उनके साथ हमदर्दी हमको वाकअी तौर पर नहीं होनी चाहिये और लॉ ऑफ लिमिटेशन्स भी यही कहता है कि तीन साल के अंदर अगर वह दावा पेश नहीं करता तो उसके लिये बाद में कोअी चारेकार नहीं है। अस लिहाज से हमको ये लिमिटेशन्स डाल देना चाहिये कि १९३५ से जो कर्जाजात हैं उनके अकाउंट्स दिखाने की कोअी जरूरत नहीं है। अिम-लिये में यह मुनासिब समझता हूं कि १९४८ के पहले के जितने भी कर्ज हैं उनकी तरफ कोअी ख्याल न दिया जाय। मेरी यह जाती राय है। अगर आप चाहें तो १९५० के पहले के कर्जों के बारे में कोअी रिआयत न दीजिये। या कम से कम १९४५ के पहले के जो कर्जजात हैं उनके मुताल्लुक कोअी रिआयत क्रेडिटर्स को नहीं मिलनी चाहिये। आखिर हमको कहीं न कहीं जाकर रुकना है। मैं असा कोअी प्रोजेज्न्स इसमें नहीं देखता। लेकिन इसमें यह दिया गया है कि १९४६ के बाद के जितने कर्जजात हैं उनके अकाउंट्स कोर्ट देखेगी। इसके लिये आप ४० परसेंट कन्सेशन देंगे उसके बाद नाइन और सिक्स परसेंट (Nine or six per cent) सूद आयद करेंगे और ट्वेल्ह टाइम्स (Twelve times) के अकसात पर बाकी कर्जा देने के लिये अंन्तजाम करेंगे। यह सब कुछ ठीक है। लेकिन इससे काश्तकारों के साथ नाजिन्साफी होने के अिमकानात हैं। इसलिये अिन प्रोजेज्न्स की तरफ नजरसानी करने की जरूरत है।

अवार्ड देने के बाद अवार्ड के मुताबिक अगर कोअी मदयून कर्जा नहीं देता तो उसकी वसूलीके लिये क्रेडिटर को रेविन्यू कोर्ट की तरफ जाना पडता है और उसके जरिये से वसूली करवानी पडती है। यह कोअी ठीक तरीका नहीं है। साबिका डेट कन्सल्लिअेशन बोर्ड में भी यही रखा गया था कि जो अवार्ड अुनने दिया है उसको माना जाय तो उसकी तामिली तालुकदार से कर दी जाय। लेकिन यहां अब आप कोर्ट को पूरे अंस्तिथारात दे रहे हैं तो यह बेमानो है कि कोर्ट से ये अंस्तिथारात छोन कर रेविन्यू के सुपुर्द किये जायें। असका मतलब ही मेरी समझ में नहीं आता। जिस तरह से बाज यह होता है कि जिस कोर्ट ने फैसला किया वही उसकी तामिली का जिम्मेदार होता है। वह अपनी जिम्मेदारी रेविन्यू कोर्ट के सुपुर्द नहीं करता। उसी तरह से जिसमें भी जो कोर्ट अवार्ड देता है उसकी तामिली भी उसीके जरिये से होनी चाहिये। लेकिन आपने जो तरीका रखा है उससे बहुत से काम्प्लीकेशन्स होते हैं। मान लीजिये कोअी अवार्ड मिला और कोअी शस्स उसको नहीं मानता तो क्रेडिटर को वहां जाकर नकल हासिल करनी पडती है, हलफनामा तकमील करके

जिले में जाना पड़ता है, दरखास्त पेश करनी पड़ती है उसके बाद तहसील को लिखेंगे और उसमें वाद अके चपरासी जायगा और गिरदावर को माथ ले कर तामिली करेगा। यह प्रोसीजर बहुत रही है। कोअी कोर्ट अवाई देता है तो उसके माने यह नहीं है कि उसकी तामिली करने से वह गुरेज करे और उसमें हम तामिली के अस्तियारात छान लें। इसका कोअी खास मकसद में नहीं ममझ रहा हूं। इसलिये मेरी यह राय है कि जिम तरह से कोर्ट को पूरे आस्तियारात अडजस्टमेंट (Adjustment) वगैरह के दिये गये हैं उसी तरह से अवाई की तामिली के आस्तियारात भी उसी कोर्ट को देने चाहिये न कि रेविन्यू कोर्ट को या कलेक्टर को।

असके बाद इसमें यह देखा गया है कि कालतन पैरवी ममनूअ की गयी है। लेकिन असके साथ यह भी सोचना है कि क्या तमाम क्रेडिटर्स वालिग होते हैं या वे अपने पूरे कारोबार करने की अहमियन रखते हैं? ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। बहुत से क्रेडिटर्स ऐसे भी हैं जो नाबालिग हैं, बेवा हैं या औरतें हैं, किसी में कोअी अिनेबिलिटी है। जो खुद अपनी पैरवी नहीं कर सकते उनके लिये क्या तरीका है, क्या प्रोवीजन असमें है? कालतन पैरवी ममनू नहीं होनी चाहिये ऐसा मेरा कहना नहीं है, वह होनी चाहिये। लेकिन उसके साथ साथ जो खुद अदालत में हाजिर नहीं हो सकते उनके लिये कुछ प्रोवीजन रखना चाहिये। चाहे क्रेडिटर हो या डेटर हो अगर वह नाबालिग है या औरत है या उसमें कोअी अिनेबिलिटी है तो उससे यह तवक्को नहीं किया जा सकता कि वह खुद कोर्ट में आकर तमाम कर्जेजात अकाउंटस पेश करे और तमाम चीजें सबित करे।

असमें कालतन पैरवी भी ममनूअ की गयी है। डेट कन्सीलेशन अक्ट में यह ममनूअ थी। लेकिन हमारा तजुब्बा है कि मुस्तारनामा पेश होता था और वकीलों की तरफ से नहीं बल्कि पैरवोकासें की तरफ से पैरवी होनी थी। बहुत से आनरेबल मॅवरान जो कि विकला हैं उनको मालूम होगा कि यहां विकला से ज्यादा पैरवोकार हैं और अन्होंने अच्छी तरह से अपना बंधा कर लिया है और वकीलों से ज्यादा वे कमाते हैं। वे बराबर मुस्तारनामा पेश कर सकते हैं, सिर्फ वकीलों को मुमानियत है। जब आप वकीलों को मुमानियत करना चाहते हैं तो उसका मंशा यह होता है कि असमें कोअी तरीके निकालकर क्रेडिटर या डेटर को परेशान न किया जाय। अगर यह मतलब है तो क्रेडिटर या डेटर को मुस्तारतन पैरवी से या और किसी तरह के रिप्रेजेंटेशन से मुमानियत करना चाहिये। चाहे तो इसमें कुछ शरायत ऐसी रखी जा सकती है कि जो खुद पैरवी नहीं कर सकते जैसे बेवा हैं या नाबा दग हैं तो उनके लिये दूसरों की तरफ से पैरवी की जायगी। लेकिन जहां आप कालतन पैरवी ममनूअ करते हैं वहां आपको मुस्तारन पैरवी को भी ममनूअ करना चाहिये। यह मेरी जाती राय है।

आखिर में मैं यह कहूंगा कि जिस तरह के जो कवानीन हैं जैसे मनीलेंडर्स अक्ट वगैरह, उनसे यह तजुब्बा हुआ है कि बहुत से लोग जिनका पेशा लेन देन का था अन्होंने अपना पेशा तर्क कर दिया है। लेकिन ऐसी कि आज जिरायती पेशा लोगों की हालात है, वे बगैर रकमी की असदाद के अपने पेशे की बूझति नहीं कर सकते। असके लिये भी हमको कुछ न कुछ रास्ता चाहिये। डेट कन्सलिटेशन बोर्ड बायें, अंकाष साल कुछ काम हुआ लेकिन नतीजा यह हुआ कि देहातों में जो लेन देन का काम करते थे अन्होंने अपना काम बंद कर दिया और उसके बाद कास्तकारों को कितनी

मुश्किलों का सामना करना पड़ा। आज हमारी हुकूमत भी वैसी हालत में नहीं है कि जितनी रकमी अिमदाद की काश्तकार को जरूरत है वह हुकूमत की तरफ से दी जा सके। मैं समझता हूँ कि अगर इस बिल को हम सक्सेसफुली (Successfully) अिम्प्लीमेंट (Implement) करना चाहते हैं तो कोआपरेटिव सोसायटीज (Societies) ज्यादा में ज्यादा तादाद में हमको खोलनी चाहिये। आज हम देखते हैं कि ये सोसायटीज कुछ काम करती हैं। लोगों को कुछ तकावी देती हैं लेकिन अुनकी पैरवी के लिये लेनदार का बहुत सा पैसा खर्च होता है। मौ रुपये लिये तो अुसमें से २५ रुपये पैरवी के लिये और अधर अधर देने में ही खर्च हो जाते हैं। ये प्रैक्टिकल डिफिकल्टीज (Practical difficulties) हैं। गवर्नमेंट को इसके बारे में सोचना चाहिये। आज-कल हालत यह हो गयी है कि कोअी कर्जा देने के लिये तैयार नहीं होता, और अुन लोगों ने अपना कारोबार बंद कर दिया है, दूसरी तरफ वही रकम डालकर वे पैसा कमा रहे हैं। लेकिन आज काश्तकार के पास जितना पैसा नहीं है या अुसकी आमदनी भी जितनी नहीं है कि वह खेती करे खुद का खर्चा निभाये और फिर जिराअत की ज्यादा तरक्की के लिये कुछ बचाये। वह ज्यादा से ज्यादा तादाद में मकसूज हैं तो जब हम अुसके कर्ज का भार कम करने के बारे में सोचते हैं तो अुसके साथ साथ अिजिदा अुसको कर्ज लेने की नौबत न आये इसके बारे में भी हमको सोचना चाहिये। अगर यह नौबत आये तो काश्तकार को कम सूद पर नकद कर्ज किस तरह से मिल सकेगा इस पर भी हमको अभी से सोचना चाहिये। अगर एक ही साइड (Side) से हम सोचें तो यह कानून अिम्प्लीमेंट नहीं हो सकेगा। क्योंकि पिछले जितने भी लेजिस्लेशन्स हुआ हैं अुनसे जो एक तबका हमारे यहां था जो बाजारी तौर पर लेनदेन करता था वह खतम हो गया है। अुसके बाद देहातों में ऐसा एक तबका पैदा हुआ है जो खुद खेती करता है, जिसके पास अच्छी जमीन है और जिसने खेती पर काफी पैसा कमाया है वह दूसरे काश्तकारों को अिमदाद दे रहा है। मैं मानता हूँ कि वह ज्यादा सूद खा रहा है। लेकिन कमसे कम वह बरवक्त काश्तकार की अिमदाद करता है। वे लोग भी अगर इस कानून के बाद खतम हो गये तो जिराअत पेशे को अंजाम देने में बहुतसी मुश्किलों का काश्तकारों को सामना पड़ेगा। इस लिये ऐसे काश्तकारों को कम सूद पर बरवक्त कर्जा सप्लाय हो सके इसके बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिये। जिन चंद सजेशन के साथ जो बिल लाया गया है वह वाकयी नेक मकसद के साथ लाया है जितना कह कर मैं अपनी तकरीर खतम करता हूँ।

شری عبدالرحمن (ملک پٹھ) - مسٹر اسپیکر سر - قانون مصالحت قرضہ تیرہ چودہ سال پہلے نافذ ہوا وہ قانون مکمل نہ تھا اسلئے ضرورت تھی کہ ایک مکمل قانون لایا جائے لیکن جو قانون اب پیش کیا گیا ہے اور اس کے جو مقاصد بتائے گئے ہیں اوس سے یہ نتیجہ اخذ نہیں کیا جاسکتا کہ یہ بھی کوئی مکمل قانون ہے تاہم حکومت نے جس نیک نیتی کے ساتھ اس کو پیش کیا ہے اس کے لئے وہ قابل مبارکباد ہے - میں نے اس قانون میں چند نقائص دیکھے جن کو میں پیش کرنا چاہتا ہوں تاکہ حکومت ان چیزوں پر مستحیدگی کے ساتھ غور کرے -

بتایا گیا ہے کہ قانون کے نافذ ہونے کے تین مہینے کے اندر درخواستیں پیش ہونا چاہئے - میں عرض کرونگا کہ تین مہینے کی مدت اتنی کم ہے کہ دارالطبع سے گزرتی

چھپکر شائع ہو کر اضلاع میں پہنچنے اور اسکی تشہیر ہونے تک میں سمجھتا ہوں کہ تین مہینے گزر جائیں گے۔ اس سے قطع نظر ہمارے لاکھوں کسان جو معمولی نوشت و خواند سے تک واقف نہیں ہیں اس انگریزی میں طبع شدہ گزٹ کو کیسے پڑھ سکیں گے اور وہ کیسے واقف ہو سکیں گے۔ مناسب ہوتا اگر کسانوں کی مادری زبان میں اس قانون کی اشاعت کا انتظام کیا جاتا۔ میں مانتا ہوں یہ کہا جائیگا کہ تحصیلدار اسکی اشاعت اس طرح کرائیگا کہ تحصیل کے نوٹس بورڈ پر اسکو چسپاں کریگا۔ لیکن یہ کیا ضروری ہے کہ کوئی کسان تحصیل کے نوٹس بورڈ پر جا کر پڑھے۔ اسکو اپنے موضع سے تحصیل تک جا کر اس نوٹس بورڈ کو پڑھنے کی کیا ضرورت ہے نتیجہ یہ ہوگا کہ اسکو اطلاع نہ ہو سکیگی اور یہ تین مہینے کی مدت یوں ہی گزر جائیگی۔ اسلئے میں کہوں گا کہ یہ مدت بہت کم ہے۔ دوسری چیز یہ ہے کہ اس قانون پر قانون میعاد ساعت کا اطلاق ہوگا یا نہیں پوری طرح واضح نہ ہو سکا۔ مجھے ایک مقدمہ میں کام کرتے ہوئے اسکا اتفاق ہوا ہے۔ میں اس قانون کی ضرورت آج سے آٹھ نو سال پہلے محسوس کیا تھا۔ ایک مقدمہ تھا پریم ناتھ بنام اکتانہ جو سشن میڈک میں چلا تھا۔ بارہ ہزار روپیہ قرض حاصل کیا تھا۔ (۷۳) ہزار روپیہ قرض گیرندہ نے ادا کردئے اسکے باوجود بقیہ کئی ہزار رقم کا دعویٰ کیا گیا تھا اور مدعی پریم ناتھ کو ڈگری مل گئی تھی۔ مدیون ڈگری نے حسابات کی جانچ پڑتال کیلئے کمیشن کے تقرر کی استدعا کی۔ جب اس کی جانچ ہونے لگی تو اوسوقت معلوم ہوا کہ جس وقت قرضہ لیا گیا تھا تو قرض گیرندہ کی عمر ۱۲ سال کی تھی اور قرض کی ادائی کا سلسلہ پچاس سال سے چلا آ رہا ہے اصل سے کئی گونہ زائد ادائی ہونے کے باوجود تیرہ ہزار روپیہ کی یکطرفہ ڈگری صادر ہوئی تھی بعد میں معلوم ہوا کہ یہ دعویٰ بیرون میعاد تھا نتیجتاً اس عذر سے مدیون کو فائدہ پہنچا۔ یہاں یہ قانون کسانوں کے فائدہ کیلئے پیش کیا گیا ہے لیکن قانون میعاد ساعت کا اس میں تذکرہ نہیں ہے۔ اسکا اثر کیا ہونے والا ہے معلوم نہیں۔ اسلئے میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ یہ قانون کسانوں کے نام سے بڑے ساھوکاروں کے دعووں کی میعاد کے تحفظ کیلئے لایا گیا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس قانون سے قانون میعاد ساعت کا تعلق ہونا چاہیئے اور اس چیز کو واضح طور پر ظاہر کرنا چاہئے۔ ایک اور چیز یہ ہے کہ قانون قرض دھندگان کا اس سلسلہ میں کوئی ذکر نہیں ہے۔ قانون قرض دھندگان کے تعلق سے جب عدالت میں مقدمات جاتے ہیں تو کسانوں کو فائدہ پہنچتا ہے۔ بہت سی چیزیں ایسی ہیں جنکی وجہ سے دعویٰ خارج ہو جاتا ہے یا تو وہ لیسنس ہولڈر (License holder) نہیں ہوتے یا تجدید لائسنس نہیں کراتے وغیرہ۔ ہمیں شبہ ہوتا ہے کہ اس قانون سے کہیں ایسے ساھوکاروں کا تحفظ تو مقصود نہیں ہے جس نے لائسنس حاصل نہیں کیا ہے۔ اگر ایسا نہیں ہے تو قانون قرض دھندگان کے اثرات کا بھی اسمیں ذکر ہونا چاہئے۔

اسکے بعد میں عرض کروں گا کہ اس میں ایک چیز جو بہت مضحکہ خیز ہے وہ یہ ہے کہ اسمیں وکالتاً پیروی کی اجازت نہیں دی گئی ہے۔ کیا آپ سمجھتے ہیں کہ یہ (۸۰)

لاکھ کسان ذاتی طور پر مقدمات میں جوابدہی کرنے کے قابل ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ساہوکاروں میں البتہ کوئی شخص ایسا نہوگا جو تھوڑا بہت پڑھا لکھا ہو۔ حساب میں تو وہ ایسے ماہر ہوتے ہیں کہ سود در سود کا حساب لگانا انکے بائیں ہاتھ کا کھیل ہوتا ہے۔ ہاں ساہوکار اپنا دعویٰ آپ پیش کر سکتا ہے اور یہ بتا سکتا ہے کہ اس نے اتنا مجھ سے لیا تھا اسمیں سے اتنا ادا کیا اور اب اتنا باقی ہے۔ لیکن کسان بیچارہ جو انیڑھ ہوتا ہے اسکے لئے یہ بھی مشکل ہے کہ اپنے مافی الضمیر کو صحیح طور پر ادا کر سکے۔ بھلا وہ عدالت میں جا کر کیا کہیگا۔ وہ کس طرح اپنے کیس کو عدالت میں پیش کر سکتا ہے۔ کسانوں کو اگر فائدہ پہنچانا ہے تو ہر قسم کی سہولت انکو ملنی چاہیئے۔ بلکہ میں تو یہ عرض کرونگا کہ جس طرح نابالغین کے مقدمات میں عدالت اپنے طور پر نابالغین کے مفاد کے تحفظ کیلئے ولی کا تقرر کرتی ہے اوسی طرح ان مقدمات میں بھی کسی مختار یا ناظر یا وکیل کا تقرر کیا جانا چاہئے۔ اوسی وقت کہا جاسکیگا کہ واقعی یہ قانون کسانوں کی بھلائی کیلئے لایا گیا ہے۔ مجھے امید ہے کہ میرے دوست جو سرکاری بنچس پر بیٹھے ہوئے ہیں اس سے اتفاق کریں گے۔ یہ کوئی پارٹی کا مسئلہ نہیں ہے۔ سیدھی سادھی سی بات ہے۔ ہم بھی یہی چاہتے ہیں کہ کسانوں کی بھلائی ہونی چاہئے اور آپ بھی یہی چاہتے ہیں کہ کسانوں کی بھلائی ہو۔ جب ایسا ہے تو اسمیں جہاں تک ہوسکے کسانوں کو مدد دینی چاہئے۔ عدالتوں میں ایسے فنڈس مہیا کرنے چاہئیں جن سے کسانوں کی جانب سے پیروی کرنے والے وکلاء کو فیس ادا کی جاسکے۔ اس قانون میں تقاضے کی ایک وجہ یہ بھی ہوسکتی ہے کہ یہ قانون نقل ہے اس طرح چھوڑ چھوڑ کر نقل کی گئی ہو یا ممکن ہے کہ سہو نظری ہوئی ہو۔ میں سمجھتا ہوں کہ حکومت نے چونکہ نیک نیتی کے ساتھ یہ قانون لایا ہے اسلئے منسٹر صاحب اسکے موجودہ تقاضے کو دور کرنے کی کوشش کریں گے۔ ہوسکے تو ان تقاضے کو دور کرنے کیلئے اسکو سلکٹ کمیٹی کو بھیجا جائے۔

شری بھگونت راؤ گاڑھ (عنبڑ)۔ منسٹر اسپیکر سر۔ آج جو بل ہمارے سامنے غور کرنے کیلئے آیا ہے میں اسکے لئے حکومت کو مبارکباد دوں گا کیونکہ یہ ایک ضروری قانون تھا۔ جیسا کہ اس سے پہلے کہا گیا کہ قانون مصالحت قرضہ پہلے نافذ ہوا تھا۔ اس کے تحت چند مقامات پر بورڈس قائم ہوئے لیکن اس سے حقیقی طور پر جو فائدہ پہنچنا چاہئے تھا نہیں پہنچا۔ جن مقامات پر مجالس مصالحت قرضہ قائم ہوئے تھے وہ بھی اب بند ہو چکے ہیں۔ اس میں صرف فریق کو ترغیب دینے کا پراویژن (Provision) رکھا گیا تھا۔ اگر کوئی فریق یا ساہوکار ناراض رہے تو بیج اسکے کہ ترغیب دیجائے اور کسی قسم سے مصالحت نہیں ہوسکتی تھی۔ میرا مشا یہ ہے کہ اس قانون کے مقاصد کو نیک نیتی کے ساتھ اس سے کوئی خاص سہولت مقروض کسانوں کو نہیں ملی۔ یہ جو قانون ہمارے سامنے آیا ہے وہ نہایت موزوں ہے۔ اسمیں کافی پراویژنس رکھے گئے ہیں۔ جو چند اعتراضات کئے گئے ہیں انکا اعادہ کرنا میں ضروری نہیں سمجھتا جو میرے تاثرات ہیں صرف وہی عرض کرونگا۔ جب اس سلسلہ میں دفعہ واری بحث ہوگی اس وقت تفصیلات

پر بحث ہو سکتی ہے۔ اسوقت صرف دو تین چیزیں عرض کرونگے۔ ایک اعتراض یہ کیا جا رہا ہے کہ گورنمنٹ کو ساہوکاروں کا تحفظ منظور ہے۔ یہ اعتراض سراسر غلط فہمی پر مبنی ہے۔ جو شبہ قانون قرض دہندگان کے تعلق سے ظاہر کیا جا رہا ہے وہ بھی صحیح نہیں ہے۔ وہ اپنی جگہ قائم ہے اسدیں اسکے ریپل (Repeal) کی گنجائش یہاں نہیں ہے۔ دوسرا عذر یہ ہے کہ وہ قرضہ جات جو بیرون معیاد ہو گئے ہیں انکو از سر نو اندرون معیاد تو نہیں قرار دیا جائیگا۔ اس شبہ کا اظہار کیا گیا ہے۔ ظاہر ہے کہ جس پر قرض کی ادائی کی ذمہ داری باقی نہیں ہے وہ کیسے رجوع ہوگا۔ یہ چیز قرین قیاس نہیں ہے اسلئے میں سمجھتا ہوں کہ یہ شبہ غلط فہمی پر مبنی ہے۔ دوسری چیز وکالتاً پیروی کے بارے میں ہے۔ میں یہاں وکیلوں کی وکالت کرنا نہیں چاہتا۔ لیکن یہ بات البتہ صاف ہے کہ ہمارے عوام جو مقروض ہیں یا جو کاشتکار مقروض ہیں اون کی تعلیمی حالت۔ اون کا سیاسی شعور۔ اونکی معاشی حالت کے پیش نظر کیا اون سے یہ توقع کی جاسکتی ہے کہ وہ صحیح معنوں میں اپنے نمائندگی کرسکیں۔ اسکے متعلق مجھے شبہ ہے۔ یہ ممکن ہے کہ وہ عہدہ دار جن کے تقویض یہ کام کیا گیا ہو خود بہ حیثیت قرین اون کے حقوق کی حفاظت کریں۔ اتنا اگر وہ خیال رکھیں تو اسمیں کسی قسم کی قانونی پیروی کی ضرورت لاحق نہیں ہوگی۔ یہ دوسری بات ہے لیکن مجھے اس بارے میں شبہ ہے۔ اس لئے ان کو جو قانونی مواقع حاصل ہیں اون کے ثمر سے صحیح طور پر استفادہ کرنے کے سلسلہ میں سختی نہ ہونی چاہیئے۔ یہ کہنا کہ وکیلوں کی وجہ سے لایکیشن بڑھتا ہے اور پروسیدنگس بڑھتے ہیں۔ صحیح نہیں ہے۔ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ وکیلوں کی نہ رہنے کی وجہ سے بنی طوالت کے امکانات پیدا ہوں۔ درخواست پیش کرنے کیلئے تین ماہ کی مدت رکھی گئی جس کے اندر وہ لوگ جو اوارڈ چاہتے ہیں درخواستیں پیش کریں۔ ظاہر ہے کہ یہ مدت ناکافی ہے۔ اس میں اضافہ کی سخت ضرورت ہے۔ مبری ذاتی رائے ہے کہ اس بارے میں تو کوئی مدت مقرر ہی نہ ہونا چاہیئے۔ بلکہ اسمیں وقتاً فوقتاً توسیع ہونا چاہیئے۔ جیسا کہ گزشتہ قانون میں تھا اگر ایک سال مجلس کاروبار ختم نہ کرے تو دوسرے سال توسیع کی جائے۔ اس لئے اس موقع پر یہ کہنا قبل از وقت ہوگا کہ ہم ایک سال کے اندر یا دو سال کی مدت کے اندر یا چھ ماہ کی مدت کے اندر تمام مقدمات کا تصفیہ کرینگے۔ یا مقروض کاشتکار ہمارے پاس آکر رجوع ہونگے۔ البتہ آج کے حالات کے لحاظ سے ہم یہ چڑھے نہیں کرسکتے اس لئے میں یہ سمجھتا کرونگا کہ تین ماہ کی مدت جو رکھی گئی ہے وہ نہ رکھی جائے بلکہ گورنمنٹ یہ اختیار لے کہ اسمیں وقتاً فوقتاً توسیع کی جاسکیگی۔ دوسری چیز یہ ہے عدالتوں کے کام کرنے کے جو طریقے ہیں اور جس طرح مقدمات میں طوالت ہوتی ہے اؤں سے میں سمجھتا ہوں کہ قانون پیشہ حضرات بخوبی واقف ہیں۔ موجودہ کام کے علاوہ اس کام کا بار بھی ہماری ابتدائی عدالتوں پر پڑنے والا ہے۔ اگر اس نقطہ نظر سے غور کیا جائے تو مجھے شبہ معلوم ہوتا ہے کہ اس کے تصفیہ میں بھی کافی طوالت ہوگی۔ اور پھر یہ کہ جب کسی ایک حاکم کے پاس اتنے مقدمات اگر رجوع

ہونگے تو میں سمجھتا ہوں کہ اسکے کام کرنے کی جو صلاحیت اور قابلیت ہوگی وہ اس کے لئے کافی نہ ہوگی۔ اور پھر یہ بھی ہے کہ قانون کا امپلیمینٹیشن پالیسی کے تحت ہونا چاہیئے۔ میں یہ کہنا نہیں چاہتا کہ گورنمنٹ کی پالیسی کو رویہ عمل لانے کے لئے ہماری عدالتیں اہل نہیں ہیں۔ لیکن ان کے جو گونا گوں محرومیتیں ہیں اوسکے لحاظ کرتے ہوئے اس کی تعمیل اور امپلیمینٹیشن میں کافی تاخیر کا اندیشہ ہے۔ اس لئے میں سبجسٹ کرونگا کہ عدالت کی بجائے ایک نان آفیشیل بورڈ قائم کیا جائے جہاں میں ایک عہدہ دار عدالت اور دو ارکان غیر سرکاری ہوں۔ جیسا کہ دوسرے حصوں میں بھی ہے۔ میرا جہاں تک خیال ہے مدھیہ پردیش میں اس قسم کے بورڈس ہیں۔ البتہ اوس کا تصفیہ جو ہوگا اوسکی اپیل ڈسٹرکٹ ججس کے پاس رکھی جائے۔ اس قانون میں بھی ایسا پروویژن رکھتے ہوئے غیر سرکاری و نان آفیشیل بورڈس رکھنے کے متعلق جوسجیشن دیا ہوں اوس پر غور کیا جائے تاکہ ایک طرف مقروض اور دوسری طرف ساہوکاروں کی نمائندگی ہو سکے۔ اور عہدہ دار صحیح نتیجہ پر پہنچ سکیں۔ اسکے بعد ڈیٹر (Debtor) کی تعریف وغیرہ کے سلسلہ میں بھی چند باتیں قابل غور ہیں۔ اس وقت اس کے اوپر ہم تفصیلی غور کریں گے اوس وقت اسکے متعلق بھی کہا جاسکیگا۔ لیکن یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ بہت سے قرضے ساہوکاروں کی ہوشیاری کی وجہ سے باقی رہ گئے ہیں اور قانونی اثرات کو زائل کرنے کے لئے ایسی ایسی چیزیں ساہوکاروں نے کیں کہ جیسا کہ آنریبل ممبرس نے کہا قرضہ کی شکل ہی باقی نہیں رکھی گئی۔ اور معاہدات قرض کو اس طرح تبدیل کر دیا گیا کہ معلوم ہو رہا ہے کہ وہ معاہدات قرض ہی نہیں ہیں۔ ایسی صورت میں دیگر قوانین مثلاً قانون شہادت۔ قانون معاہدات وغیرہ ان کے تعلق سے جو مانعیتیں ہیں اور ثبوت پیش کرنے کے سلسلہ میں۔ نتائج اخذ کرنے کے سلسلہ میں آئیں جیسا کہ قانون انتقال جائداد اراضی زرعی کی دفعہ (۱۰) میں (جو ریپل ہوا اسمیں) جو پروویژن رکھا گیا اوسی طرح صراحتاً اجازت یہاں رکھنا چاہیئے۔ گویا اس چیز کو ٹچ (Touch) ضرور کیا گیا لیکن اس کی صراحت کی ضرورت ہے۔ اسکے بعد مدت کے تعلق سے پھر ایک مرتبہ غور کرنے کی ضرورت ہے اور وہ ہے دفعہ (۲۴) کے تعلق سے دفعہ (۲۴) میں تین مہینے کی جو مدت رکھی گئی ہے میں سمجھتا ہوں وہ کافی نہیں ہے اسمیں اضافہ ہو جائے تو مناسب ہوگا۔ قانون مصالحت قرضہ کے لحاظ سے جو حقوق زائل ہو چکے ہیں یا قانون قرض دہندگان کے تحت لیسنس نہ لینے کی وجہ سے یا اور وجوہات کی بنا پر جو حقوق ساقط ہو چکے ہیں ان کو مکرر تازہ کرنے کی گنجائش نہیں۔ اس لئے جیسا کہ میں نے ابتداء عرض کیا اسکی بھی صراحت ہو جائے تو غلط فہمی کے امکانات رفع ہو جائیں گے۔ یہ چند چیزیں عرض کرنے کے بعد میں یہ عرض کرونگا کہ یہ جو نیک اقدام کیا جا رہا ہے جو کوشش کی جا رہی ہے اسکی تعمیل کے سلسلہ میں بھی اتنی ہی کوشش اگر کی جائے اور ویسے پروویژن رکھے جائیں تو مناسب ہوگا۔ عام طور پر ہمارے یہاں قانونی جو اصلاحات

ہوتی ہیں ان کی تعمیل اور اون پر عمل کرنے کے لئے بعض رکاوٹیں پیدا ہو جاتی ہیں جسکی وجہ سے حقداروں کی بھلائی کرنے میں بعض مرتبہ مشکل ہو جاتی ہے۔ یہ ایسا مسئلہ ہے جو ہر قانون کے تعلق سے سامنے آتا ہے۔ اس واسطے ہمارے ہر قانون میں ایسے ہی پروویژن رکھنا چاہیئے جس میں تعبیر یا تعویق کی بہت کم گنجائش ہو۔ ایک میدھا سادھا پروویژن اس کے اندر رکھنا چاہیئے۔ میں جہاں تک اس نقطہ نظر سے دیکھا ہوں اس قانون میں پیچیدگیاں ضرور نظر آتی ہیں اور ایک خاص امر اس قانون کے تعلق سے یہ ہے کہ جو اوارڈ (Award) عدالت صادر کریگی وہ رجسٹری کیلئے ایک سب رجسٹرار کے پاس بھیجا جائیگا۔ یہ چاہئے کہ چاہئے غیر ضروری معلوم ہوتا ہے کیونکہ عدالت کے احکام جیسا کہ ایک آنریبل ممبر نے کہا ڈگری کی تعریف میں داخل ہوتے ہیں اس لئے جب عدالت ڈگری صادر کرے اور پھر اسکو رجسٹری کے لئے سب رجسٹرار کے پاس بھیجا جائے تو اس میں قانونی نقطہ نظر سے غیر منقولہ جائداد پر بارعائد کرنے کا مقصد ہوتا ہے۔ اسکی ضرورت لاحق ہوگی لیکن جہاں ہم قانون سازی کر رہے ہیں یہ بھی اختیار حاصل ہونا چاہئے کہ اس خاص اوارڈ کی حد تک جو لوازمات قانون رجسٹریشن کے لحاظ سے ضروری ہیں ان سے اسکو مستثنیٰ کیا جائے۔ اور عدالت جس نے اوارڈ صادر کیا ہے اسکو اسکی اجرائی (تعمیل) کے حقوق عطا کردئے جائیں تاکہ اسکی تعمیل میں کوئی رکاوٹیں پیدا نہ ہوں۔ ان خیالات کے عرض کرنے کے بعد آنریبل موور کو اس بل پر مبارکباد دیتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

شریمتی معصومہ بیگم (شاہ علی بندہ)۔ میں آنریبل موور سے وضاحت چاہتی ہوں کہ ڈیٹر کی تعریف کرتے ہوئے (اے) میں انڈیویچول (Individual) اور (ی) میں ان ڈوائڈڈ ہندو فیملی (Undivided Hindu Family) جو بتایا گیا ہے تو کیا دیگر کمیونٹیز (Communities) کے فیملیز (Families) اس ایکٹ سے مستثنیٰ رہیں گی۔

آئی. دے ویلینگن جی۔ :—میں باپ کے سوال کا مطلب سمجھ گیا ہوں۔ میں آپکی جان کا رہی کے لئے کہنا چاہتا ہوں کہ ہمارے یہاں دو قانون ہیں۔ ایک ہندو جائڈٹ فیمیلی لاء (Hindu Joint Family Law) اور دوسرا مسلم لاء (Muslim Law) ہے۔ مسلم لاء کے تحت سب باپداد ایک ہی آبادی کی سمجھی جاتی ہے۔ جب تک اسکا وقت نکال نہ ہو، تب تک وہ باپداد اسکی ہوتی ہے۔ لیکن ہندو لاء میں ایک شخص کے یہاں دو بٹے ہیں تو ان کے لئے اس نے اپنے باپ کے باپداد میں انکا حصہ مانا جاتا ہے۔ اس تئیں پر تصریح کیا گیا ہے اس لئے یہاں پر ہندو لاء کی اس سلسلہ کی وجہ سے اہمیت جویز کرنے کی ضرورت پڑی۔ جو قانون ہندو لاء سٹیت میں راجد ہوگا وہ سب کے لئے لاگو ہوگا۔

శ్రీ గోపాల కృష్ణ

శ్రీమతి అప్పారావు మహారాజు; ఇప్పుడు ఏదైతే ఇక్కడకు పిల్ల లేబండిందా.....

مسوڈیٹی اسپیکر - آنریبل ممبر ہندی میں بولیں تو مناسب ہوگا تاکہ منسٹر صاحب اسے سمجھ سکیں۔

•
श्री. गोपिडिंगारेड्डी :-—मुखिकल यह है कि मैं अपने विचार हिंदी में अच्छी तरह नहीं रख सकता हूँ। अब यह जो बिल हमारे सामने आया है उसका तर्जुमा हमको नहीं दिया गया मैं समझता हूँ कि यहां जो बिल पेश किये जाते हैं उनका तर्जुमा ऐसी भाषा में नहीं दिया जाता है जिसे हम समझ सके। इससे यह जाहिर होता है आप लोग हमारी राय ही लेना नहीं चाहते हैं। इसी लिये हमको तर्जुमा कर के नहीं दिया जाता है। आपने क्या कानून लाया है यह तो आपको खुद को ही मालूम नहीं है। आपको तो कभी सही न बोलने की आदत ही होगई है। आपको यह भी मालूम नहीं है कि या आप के सिर पर टोपी है आया नहीं और फिर दूसरों को पूछते हैं कि मेरे सिरपर टोपी है या नहीं। यह जो बिल आज लाया जा रहा है उसका असर देहातोंपर ज्यादा होनेवाला है। यह तो एक देहातों का मसला है। देहातियों की जो तकलीफें हैं वह यहां आलेशान अमेंबली में बैठकर आपके सामने नहीं आ सकती है। यह जो बिल लाया जा रहा है वह देहातोंकी हालत देखकर नहीं लाया जा रहा है।

इस बिल का विचार करते समय पहले हमें यह देखना चाहिये की देहातियों का जो कर्जा है वह यह लोग जो व्यवसाय करते हैं उसके लिये लिया जाता है। ज्यादातर हम यह देखते हैं कि यह जो कर्जा है वह शादी व्याह के लिये लिया जाता है और वह भी बालक विवाह के लिये लिया जाता है। यह कर्जा लेकर नाबालिक शादियां की जाती हैं और इस के लिये वह सावकार के पास कर्जा लेने के लिये जाते हैं।

यह जो बिल है वह इसके कर्जों को कम करने के लिये लाया जा रहा है लेकिन यह नहीं देखा जाता है कि इस कर्जों की जड़ क्या है यह कर्जा वास्तव में होताही क्यों है। कर्जा कम कैसे किया जाय यह सोचने के पहले यह कर्जा लेना बंद कैसे हो इसके बारे में सोचना चाहिये। साहूकार जो मनमाना सूद लेकर कर्जा देता है उसके बारे में कुछ नहीं किया जाता है और फिर बंबई में ऐसा है, मद्रास में ऐसा है, इस तरह कहकर उनकी नकल की जाती है, अमेरिका की भी नकल की जाती है।

किसान ज्यादा तर लावती के वक्त कर्जा लेता है। जो कर्जा देता है वह १ रुपया सेकड़ा सूद लेता है और इस तरह धान्य लेकर वह किसान अपनी लावती करता है लेकिन २ रुपये फी मन से वह और अलग पैसे लेता है और धान्य देता है। सूद तो आपको दिसाने के लिये सेकड़ा १ रुपया ही देता है। और चोरी छिपे और रुपये उसे देने पछते हैं ताकि वह कानून में नहीं आसके। जो साहूकार होता है वह किसान को धीरेधीरे से कहता है फला फला आदमी ३ रुपये मनसे ले गया है तू भी ३ रुपया मनसे ले जा। लेकिन मैं सूद का दर तो १ रुपया सेकड़ा लिखूंगा।

बाज कल ऐसे साहूकार होगये हैं कि यदि कोई १०० रुपये का कर्जा मांगता है तो उसे १५० रुपये लेजाने के लिये कहते हैं और आजकल के कास्तकारों को लगता है कि यह सुन कर कितना अच्छा है हम जितना कर्जा मांगते हैं उससे भी ज्यादा कर्जा देने के लिये वह राजी होता है। लेकिन

वह कर्जों का मूद कितना लेता है यह तो आपको मालूम नहीं होता है। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि आपने कर्जा कम करने का तो बिल लाया है लेकिन अभी तक साहूकारी अवॉलिशन का तो कोई बिल नहीं लाया है मेरा यह कहना है कि आपने अभी जो यह कानून लाया है वह भी उन पूंजी पतियोंकी इमदाद करने के लिये लाया है। हमारे घर्म ग्रंथ में यह बताया गया है कि ५० फीसद से ज्यादा मूद लेना तो पाप है। इससे ज्यादा मूद तो कभी नहीं होना चाहिये। दुगने से ज्यादा मूद तो कभी नहीं लेना चाहिये। यह जो कानून बनाया जा रहा है उसमें यह नहीं बताया जा रहा है कि कर्जा हो ही नहीं इसके लिये क्या किया जाय। आपको जब जरूरत होती है तब आप देहात की तरफ जाते हैं लेकिन इस कानून के बनाते समय उनको नहीं पूछा गया है। देहानियों को कर्जा ही न हो इसकी कुछ गुंजायश इस कानून में नहीं रखी गई है। साहूकार जो कर्जों का हिसाब करता है वह तो कर्जा लेने वाला नहीं जानता है। कई ऐसे लोग होते हैं जो कि शादी के लिये बड़ी मूद पर कर्जा लेते हैं। नाबालिग शादी के लिये कर्जा लेते हैं। अगर किसान साहूकार के पास जाता है तो वह साहूकार से और कर्जा लेता है और उसके लिये उसे १२ मन ज्वार देनी पड़ती है। उसको पूरी तौर पर साहूकार पर आश्रित रहना पड़ता है।

यह बतलाया जाता है कि हमने यह जो बिल लाया है वह बॉम्बे सिस्टम से लाया है और बंबई के रिवाज से लाया है। बंबई सिस्टम वहां के लिये अच्छा होगा लेकिन वही सिस्टम हमारे लिये भी कैसे ठीक हो सकता है। बड़े आदमी बंबई में रहते हैं इस लिये हमें भी बंबई में ही रहना चाहिये ऐसी कोई जरूरत नहीं है। हम तो बस बंबई कि नकल नहीं तो मद्रास कि नकल करते हैं लेकिन जो हालत बंबई में या मद्रास में है वह जुदा है वह हालत हमारे यहां नहीं है। यह सौंचने की बात है जो बातें बंबई में अच्छी होगी वह हमारे यहां भी कैसे अच्छी हो सकती है। जिन्होंने यह बिल यहां लाया है वह भी नहीं जानते हैं कि इस तरह कानून की नकल कर के यदि बंबई जैसा या मद्रास जैसा कानून यहां लाया गया तो क्या नतीजा होगा। सारे कामों में बंबई, मद्रास की नकल करके हम कुछ बहुत अच्छा काम कर रहे हैं ऐसा बतलाने ने की कोशिश की जाती है। बंबई में इतने बच्चे पैदा होते हैं और हैदराबाद में इतने बच्चे पैदा होते हैं तो हमारे यहां भी उनकी नकल क्यों नहीं की जा सकती है। कहने का मतलब यह है कि इस तरह दूसरे स्टेटों की नकल करके आप के कानून किसनों की भलाई का कोई काम नहीं कर सकेंगे। बंबई की हवा और बंबई का माहोल कैसा है यह हमें पहले देखना चाहिये अगर हम यह बात ध्यान में रखेंगे तो फिर दूसरे की जंघ नकल करने की कोशिश नहीं करेंगे।

Shri Devi Singh Chauhan : I would appeal to the intelligence and intuition of the hon. Member to suggest new things.

శ్రీ గొర్రెడి గంగారెడ్డి :— అయ్యో, మీరు ఏమీ చెబుతున్నారోగాని, అయినా ఈ తరేయను. అదే మొట్టమొదట స్పీకరుగారు రూపొందించారు. మరీ ఇప్పుడు ఇట్లా ఇంకో భావనా మార్పుదీలే ఎట్లా? మీ డోలు మీరు కొడుకున్నారు. నా డోలునేను కొడుకున్నాను అందుకే ఎక్కడెక్కడి పొంతుల వారినీ అక్కడక్కడ చేర్చాలని అంటున్నాను. ఇంకా ఇప్పుడు.....

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - آپ اگر ہندی میں تقریر فرمائیں تو زیادہ مناسب ہوگا اور آنریبل منسٹر بھی اسکو سمجھ سکیں گے۔

श्री. गोपीडी गंगारेड्डी :—बात यह है कि मैं तेलुगु में बात करता हूँ और ऑनरबल मिनिस्टर साहब अंग्रेजी में बात करते हैं। मैं उन्होंने ने क्या कहा कुछ नहीं समझ सका अगर वह ऐसी ज़बान में बोले जिसे मैं समझ सकूँ तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री. देवीसिंग चौहान :—मैं ऑनरबल मॅबर से यह दरखास्त करना चाहता हूँ कि वह यदि कुछ नई चीजें सुझाना चाहें तो सुझायें।

श्री. गोपीडी गंगारेड्डी :—नया तो कुछ नहीं है और मैंने नया कुछ बतलाया भी नहीं है। कर्ज कैसे कम करें इसके बारे में तो आप ने कानून लाया है। लेकिन कर्जा ही न हो इसके लिये तो आपने कुछ नहीं सुझाया है। आपने तो उनको जन्म से ही कर्ज से विमुक्ती दी है। जब इसकी फ़र्स्ट रीडिंग ख़तम होगी और अमेंडमेंट्स आयेंगे तब मैं कुछ नयी चीजें बतला सकूंगा जैसे की ऑनरबल मिनिस्टर साहब ने फरमाया है।

Mr. Deputy Speaker : Now it is almost time. We will now take up half-an-hour debate. Shri G. Hanumantharao.

Half-an-Hour Debate

Shri G. Hanumanth Rao : Clarification Sir :

“ It has been brought to my notice that staff are misinterpreting the phrase ‘ The intention of Government in this connection ’ at the beginning of the second sentence in paragraph one of the order.

It is the expressed intention of Government to employ in the service of the Road Transport Corporation, on exactly the same terms and conditions as are now obtaining to them, the entire staff, gazetted and non-gazetted, now working in the R.T.D. who are willing to accept service under the Corporation; and in this connection this may be taken as a definite decision of Government, which will not be altered.

(Sd.)

Road Transport Superintendent.

Most of them chose to join the R.T.D. after that when the problem of R.T.D. brought in the State Assembly the Minister concerned declared that it was being run as a corporation.

and hence no estimates were submitted to the House. But in his reply to my question he declares R.T.D. is a Government Department. As an employer in the year 1950-51 and 1951-52 the Government was bound to refer the demand of bonus to the Industrial Tribunal along with other demands. But the Minister replied that it is a matter of policy.

Further certain demands are accepted one of which, promises to de-casualise casual labour after 6 months and appoint them as temporary but still some casual labour is discharged after the strike. The Government in their press note which hon. the Minister concerned referred to and through their spokesman promised that there will be no victimisation but still cases are going on in the court, and casual labour is discharged as stated above.

In view of this it has become necessary to get all these points clarified and hence half an hour discussion is necessary.

I shall now lay on the table of the House the office order and the option form also.

Now, I shall read out my questions :

1. Whether option forms were given to R.T.D. workers at the time of separation of the R.T.D. from N.S.R. railway, and whether R.T.D. became a corporation since then ?
2. Whether the R.T.D. workers enjoy the privileges of the Government servants ?
3. Whether the Government were justified in refusing to refer the demand of bonus to the Industrial Court ?
4. Whether some cash payment was assured to the R.T.D. workers ?
5. Whether the Government have accepted some demands of the R.T.D. workers and given some assurances but is still taking recourse to victimisation.

After this, the workers have given a memorandum also to the Government.

I want a clarification on all these points, and after the hon. Minister gives his reply, if further questions arise, I shall put them, later.

منسٹر فرہوم (شری دگمبر راؤ بندو) - آنریبل ممبر نے جس پریس نوٹ وغیرہ کا حوالہ دیا ہے وہ بالکل صحیح ہے۔ یہ واقعہ ہے کہ فنانشیل انٹی گریشن (Financial Integration) کے بعد جب اسٹیٹ کی ریلوے کو سنٹرل گورنمنٹ نے اپنے قبضہ میں لے لیا تو اس وقت آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو بھی سنٹر کے تحت لے لیا گیا۔ کیونکہ یہ بھی ریلوے کا ایک جزو تھا۔ اسکے بعد آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے بارے میں اسٹیٹ گورنمنٹ اور سنٹرل گورنمنٹ میں مراسلت ہوتی رہی کہ آیا اسکو ایجنسی یسز پر چلایا جائے یا کیا۔ آخر سنٹرل گورنمنٹ نے یہ طے کیا کہ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ چونکہ پراونشیل سبجیکٹ (Provincial Subject) ہے اسلئے اسٹیٹ گورنمنٹ کے تحت اسکو چلانا چاہئے۔ اسلئے ایجنسی سسٹم ختم ہو گیا اور آر۔ ٹی۔ ڈی۔ پھر حیدرآباد گورنمنٹ کے قبضہ میں آ گیا۔ اس وقت حیدرآباد گورنمنٹ نے ارادہ کیا کہ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو کارپوریشن بنا کر چلانا چاہئے۔ اسی وقت پارلیمنٹ میں کارپوریشن ایکٹ (Corporation Act) پاس ہوا۔ کارپوریشن بنانے کے بارے میں آر۔ ٹی۔ ڈی۔ ورکرز سے پوچھا گیا اور یہ بتایا گیا کہ انہیں ان ہی شرائط و مراعات کے تحت کام کرنا پڑیگا جو ریلوے کے تحت رہنے کے زمانے میں نافذ تھے۔ میں سمجھتا ہوں کہ کارپوریشن بنانے کا فیصلہ غلط فہمی کی بناء پر کیا گیا تھا، کیونکہ کارپوریشن ایکٹ جو پارلیمنٹ سے منظور ہوا تھا اس وقت تک حیدرآباد پر لاگو نہیں ہو سکتا تھا، جب تک کہ پریسیڈنٹ اسکو حیدرآباد سے متعلق کرنے کی منظوری نہ دیدیں۔ چنانچہ موجودہ گورنمنٹ کے وجود میں آنے کے بعد میں نے پھر اس سلسلے میں کوشش کی کہ کارپوریشن ایکٹ حیدرآباد پر اپلائی (Apply) کیا جائے۔ چنانچہ اسٹیٹ منسٹری کی کوششوں سے گزشتہ دسمبر میں یہ ایکٹ حیدرآباد پر اپلائی ہو گیا جسکو ایک سال کا عرصہ ہوتا ہے۔ اس دوران میں اسٹیٹ گورنمنٹ نے متصلہ صوبہ جات کے اتھارٹیز (Authorities) سے مشورہ کیا جنہوں نے کارپوریشن کے بارے میں تجربہ حاصل کیا تھا۔ بمبئی گورنمنٹ سے بھی کارپوریشن بنانے کے بارے میں مشورہ کیا گیا۔ وہ خود مطمئن نہ تھی۔ بمبئی گورنمنٹ نے ہمیں مشورہ دیا کہ ہم کارپوریشن کے جھگڑے میں نہ جائیں۔ ان حالات میں ہم نے یہ مناسب سمجھا کہ اس بارے میں کلوزلی اسٹڈی (Closely study) کریں۔ چنانچہ ہم نے اپنے آفیسرز مختلف مقامات کو بھیجے جہاں کارپوریشن یہ کام چلا رہی تھی۔ بالآخر حیدرآباد گورنمنٹ اور فرہوم ڈپارٹمنٹ اس نتیجہ پر پہنچے کہ اس سے کم از کم گورنمنٹ کو تو کوئی مفید چیز حاصل نہو گی۔ اور نہ انتظامات میں وہ خوبی دیکھی جو اب ہے۔ رہا یہ سول کہ ورکرز کے بارے میں کیا کیا جائے؟ اس سے پہلے جب تک کہ کارپوریشن ایکٹ لاگو نہیں ہوا تھا گورنمنٹ نے یہ فیصلہ کیا تھا کہ کارپوریشن بناتے تک اس آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو گورنمنٹ ڈپارٹمنٹ کی طرح چلایا جائے۔ اور ملازمین پر بھی وہی رولز اپلائی ہونگے جو ریلوے کے زمانے میں تھے۔ یا سیول سروس رولز لاگو ہونگے۔ ان دو صورتوں کے سوا کوئی تیسری صورت نہ تھی۔ ایسی صورت میں ورکرز (Workers) کے تعلق سے کسی قسم کے شبہ کی گنجائش نہ تھی۔ ہماری یہ رائے تھی کہ جب تک گورنمنٹ کے قبضہ میں آر۔ ٹی۔ ڈی۔ نہ آئے اس وقت تک ریلوے کے

نہ شدہ فیسلیٹیز (Facilities) جو تنخواہوں وغیرہ کے بارے میں ہیں وہی برقرار رہیں۔ اس کی خلاف ورزی کی کوئی شکیت آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے ملازمین کی جانب سے پیش نہیں ہوئی۔ اسکے بعد جو گورنمنٹ آئی تو اس نے گورنمنٹ رولس کے بموجب عمل کیا۔ اور ابھی بھی عمل جاری ہے۔ گورنمنٹ اس بارے میں تصفیہ کریگی کہ ریویو کے لئے جس صرح انتظامی بورڈ ہے اسی صرح اسکے لئے بنی قائم کیا جائے اور اوں ہی لائنس (Lines) پر آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو ڈیولپ (Develop) کیا جائے۔ جہاں تک میرٹ معلومات ہیں دوسری جگہ بھی ایسے بورڈس ہیں۔ یو۔ پی۔ میں بھی اسکے لئے ایک بورڈ قائم ہے جو آر۔ ٹی۔ ڈی کا انتظام کرتا ہے۔ اسکے بعد جس طرح میں نے کہا اگر سیول سروس رولس (Civil Service Rules) لاگو ہوں تو اسکے لحاظ سے بھی امپلائز کا کوئی نقصان نہیں ہوتا۔ کیونکہ انکو وہی سہولتیں اور طائیت حاصل ہوتی ہے جو دوسرے گورنمنٹ امپلائز کو حاصل ہیں۔ ایج بار (Age-bar) کے بارے میں مستثنیٰ کرنے کے آرڈرس دیدئے گئے ہیں۔ کیونکہ وہ پہلے ہی سے امپلائمنٹ میں ہیں اور کام کر رہے ہیں۔

اسکے بعد بونس (Bonus) کا مسئلہ تھا۔ بونس کا عام طور پر یہ اصول ہے کہ کسی صنعت یا کاروبار میں کیپٹل (Capital) اور لیبر (Labour) دونوں شامل ہوتے ہیں۔ اور اس سے جو نفع ہوتا ہے اس میں سے جس طرح کیپٹل کو حصہ ملتا ہے اسی طرح لیبر کو بھی کچھ حصہ ملنا چاہئے۔ یہ ایک واجبی اصول ہے۔ لیکن آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے بارے میں گورنمنٹ کا یہ نظریہ ہے کہ اس سے جو آمدنی ہوتی ہے کوئی پرافٹ (Profit) نہیں ہے بلکہ گورنمنٹ کے دوسرے ریونیوز (Revenues) کی طرح ہے۔ جس طرح دوسرے ریونیوز اسٹیٹ کے چلانے میں کام آتے ہیں اسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا منافع بھی ریونیو میں شمار ہوگا۔ یہ منافع جب ریونیو کی شکل میں اسٹیٹ کے کام میں لگے گا تو ظاہر ہے کہ اس کا فائدہ پوری پبلک کو پہنچے گا۔ بونس کے سلسلے میں جو ورکرس مجھ سے ملنے آئے تھے میں نے انہیں بھی یہی سمجھایا۔ میں نے انہیں بتایا اگر آپ کو آمدنی روٹی ملتی ہے تو آپ اس پر بھی غور کیجئے کہ دوسروں کو آمدنی بھی نہیں ملتی۔ ہم تو یہ چاہتے ہیں کہ زیادہ سے زیادہ لوگوں کو روزگار فراہم ہو اور بیروزگاری دور ہو۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ سے جو منافع آئیگا تو وہ روڈس کنسٹرکشن (Roads Construction) اور بسیں کی تعداد بڑھانے میں صرف ہوگا۔ اس طرح اگر ۱۰۰ بسیں کا اضافہ ہو تو اس سے ۳۰۰ افراد کو روزگار ملے گا۔ میں نے ان سے کہا کہ وہ اپنے دل کو کشادہ کریں اور اپنے جو بھائی بیروزگار ہیں انہیں بھی روزگار دلانے میں حکومت کی مدد کریں۔ اسلئے حکومت نے یہ طے کیا کہ بونس کا مسئلہ نہ اٹھایا جائے۔ البتہ جیسا کہ میں نے پہلے بھی طائیت دی ہے اور اب بھی میں اس پر قائم ہوں کہ سروس کنڈیشنس (Service conditions) اچھے رہیں جس سے ان کی افیشنی بڑھے۔ اس سلسلے میں جو بھی مسائل درپیش ہونگے انہیں آہستہ بات چیت کے ذریعہ حل کیا جاسکتا ہے۔ اسکے باوجود بھی کوئی چیز تصفیہ طلب رہ جائے تو اسے ٹریبونل

(Tribunal) کر رفر (Refer) کیا جاسکتا ہے - بونس کے تعلق سے بھی یہ کہا جاتا ہے کہ یہ مسئلہ کیوں نہ ٹریبونل کے سپرد کیا جائے - اس بارے میں میں یہ کہہنا کہ کوئی بھی مسئلہ کیوں نہ گورنمنٹ کو یہ حق رہتا ہے کہ وہ اس کے تصفیہ کو رد کرے - یہ عجیب بات ہوتی اگر ہم بونس کا مسئلہ پہلے تو ٹریبونل کو رفر (Refer) کرتے اور بعد میں اسکے تصفیہ کو ماننے سے انکار کرتے - کیونکہ یہ گورنمنٹ کا اختیاری ہے - اسلئے ہم نے یہ طے کیا کہ اس کو ٹریبونل کے سپرد نہ کیا جائے - باقی چیزیں جو مان لی جانی تھیں مان لی گئی ہیں - ایک مسئلہ فیکٹری ایکٹ کے لاگو کرنے کا تھا - ریلوے نے بھی اب تک فیکٹری ایکٹ کو چھوٹے چھوٹے کارخانہ جات میں جہاں ریپرنگ وغیرہ کا کام ہوتا ہے لاگو نہیں کیا ہے - اسکے بارے میں بہت سے لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ آر - ٹی - ڈی - کے ڈپوز میں فیکٹری ایکٹ لاگو کرنے میں ہم سے بھول ہوئی ہے - مگر میں سمجھتا ہوں کہ فیکٹری ایکٹ (Factory Act) سے ہمارے لیبرس (Labourers) کو فائدہ ہوگا - انکی افیشینسی (Efficiency) بڑھیں گی - اسکے بعد کیٹرول لیبرس (Casual Labourers) کا مسئلہ ہے - کیٹرول لیبرس دو طرح کے ہوتے ہیں - ایک تو وہ کہ آج آئے اور کل چلے گئے - اور دوسرے وہ کہ جنکو کچھ مدت کیلئے رکھا جاتا ہے - آر - ٹی - ڈی - میں کچھ کیٹرول لیبرس ایسے بھی ہیں کہ جن کے لئے ایک جگہ کام ختم ہوا تو دوسری جگہ کام نکل آتا ہے - اس طرح ان کے لئے مسلسل کام رہتا ہے - ایسے لیبرس کے متعلق یہ کہنا کہ وہ کیٹرول لیبرس ہیں میں سمجھتا ہوں کہ صحیح نہ ہوگا - اس اصول کو گورنمنٹ نے مان لیا ہے کہ ایسے لیبرس کو جو مسلسل کام کرتے آتے ہیں اور پرمیننٹ سروینٹس کے ساتھ کام کئے جارہے ہیں انکی حیثیت ٹمپری گورنمنٹ سروینٹس (Temporary Govt. Servants) کی ہوگی - وہ اوس تعریف میں نہیں آئیں گے جو کیٹرول لیبر کی ہے یعنی چار آٹھ دن جو کام کر کے چلا جاتا ہے، اوس مزدور کی تعریف میں وہ نہیں آئیں گے - اس طرح عمل کیا جاتا ہے کہ جو شکایتیں اس سلسلہ میں وصول ہوئی تھیں انکے بارے میں دریافت کیا گیا تو معلوم ہوا کہ وہ جملہ لیبرس جو اسٹرائک کے ختم ہونے کے ساتھ ہی رجوع بکار ہو گئے انکو اوسی بیس (Basis) پر لیا گیا ہے جیسا کہ فیصلہ کیا گیا تھا - البتہ تین چار کیس ایسے ہیں جو آرڈر کے مطابق رجوع بکار نہیں ہوئے - صرف ان دو چار کیس کو ملحوظ رکھ کر یہ کہنا کہ آر - ٹی - ڈی - نے تصفیہ کی خلاف ورزی کی ہے صحیح نہیں ہوگا - یہ چیز ایسی نہیں ہے کہ اسکو میں مان سکوں - انڈیویچول کیس (Individual Cases) کے بارے میں علیحدہ علیحدہ سوچنا چاہئے - میں نے ریکارڈ کو دیکھ کر یہ نتیجہ اخذ کیا کہ اس بارے میں کوئی غلطی سرزد نہیں ہوئی ہے - اسکے بعد کہا جاتا ہے کہ اب تک وکٹیمائزیشن (Victimisation) ہے - اگر وکٹیمائزیشن اس لئے سمجھا جا رہا ہے کہ جن لوگوں پر مقدمات چلائے جانے چاہئے تھے ان پر مقدمات چلائے جا رہے ہیں تو میں بھی اسکو تسلیم کرتا ہوں کہ ہاں واقعی ان معنوں میں وکٹیمائزیشن ہو رہا ہے - لیکن اسکا تعلق اسٹرائک سے نہیں ہے بلکہ یہ اصول کا فرق ہے جہاں کہیں خلاف ورزی

ہوتی ہے اور جو کوئی خلاف ورزی کرتا ہے چاہے وہ کانگریسی ہو یا کمیونسٹ ، یا کسی اور پارٹی سے تعلق رکھتے وہ ہو چاہے کسی لیول (Level) کا آدمی ہو چاہے کسی نارٹی کانٹری (Label) اوس نے لگایا ہو چاہے وہ کوئی ٹریڈ یونینسٹ (Trade Unionist) ہو اوس نے جس کسی قانون کی خلاف ورزی کی ہو خواہ تعزیرات کی ہو یا ضابطہ فوجداری کی اوسکے خلاف برابر مقدمہ مان چلائے جائینگے ۔ ہمارے پالیسی یہی ہے اور ہم اس پر سختی سے کاربند رہینگے ۔ بسے مہمات جب عدالت میں جاچکیں تو ہم انہیں واپس نہیں لینگے ۔ ہم نے اس بارے میں اسکی کونسل کی ہے کہ بلا لحاظ پارٹی کے عمل کیا جائے ۔ جب ایک مرتبہ کیس عدالت میں چلا جائے تو اسکا تصفیہ وہیں سے ہونا چاہئے ۔ اگر ملزم بیگناہ ہے تو یقیناً وہاں سے بری ہوگا ۔ اوسکو اپنی بیگناہی کے ثابت کرنے کا وہاں موقع ہے ۔ اگر آپ ان چیزوں کو وکٹی مائیزیشن (Victimisation) سمجھتے ہیں تو میں مجبور ہوں ۔ میرا خیال تو یہ ہے کہ اسکو وکٹی مائیزیشن نہیں کہا جاسکتا ۔ وکٹی مائیزیشن اسکو کہہ جائیگا کہ محض اس بنا پر کسی ملازم کی تنخواہ میں کمی کیجائے کہ اوس نے اسٹرائک میں حصہ لیا یا اسکو کسی اور قسم کی سزا دیجائے یا ایسا کوئی عمل اسکے ساتھ کیا جائے جسکے نتیجہ پر وہ ٹھیک طور پر کام نہ کرسکے ۔ ایسی کوئی شکایت میرے پاس نہیں آئی کہ ایسا کوئی عمل ہمارے لیبرس کے ساتھ کیا گیا ہے ۔ اگر ایسی کوئی شکایت ہو تو میرے سامنے لائی جائے ۔ میں ضرور اسکی تحقیقات کرونگا ۔ یہی وہ چیزیں ہیں جنکے بارے میں باہر بھی بہت کچھ کہا گیا اور یہاں بھی بیان کیا گیا ۔ مجھے یہ کہنا ہے کہ ہم یہ چاہتے ہیں کہ جس طرح آل انڈیا ریلویز آرگنائیزیشن (All India Railways Organisation) ہے اوسی طرح کا ایک بورڈ یہاں بھی آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے تعلق سے تشکیل دیا جائے ۔ یہ مسئلہ کیبنیٹ (Cabinet) میں زیر غور ہے ۔ بورڈ کی تشکیل کے بعد جس طرح کا آرگنائیزیشن ریلوے میں ہے اوسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی۔ میں بھی ہوگا ۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے ملازمین کے ساتھ بھی اوسی طرح کا عمل ہونا چاہئے جس طرح ریلوے کے ملازمین کے ساتھ کیا جاتا ہے ۔ یہ چیز زیر غور ہے ۔ میں نے ان تمام امور کی اسلئے وضاحت کردی ہے کہ اسکے بعد غلط فہمی باقی نہ رہے ۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس بارے میں مزید کچھ کہنے کی مجھے ضرورت نہیں ہے ۔ اسکے بعد بھی اگر آپ مجھ سے مزید کچھ دریافت کرنا چاہیں تو پوچھ سکتے ہیں ۔

Shri M. S. Rajalingam (Warangal) : I would like to know whether the Government is contemplating to create a Bonus Equalisation Fund for labourers just as they have got a dividend equalisation fund for shareholders, as a permanent solution?

شری دگمبراؤ بندو۔ آر۔ ٹی۔ ڈی کے تعلق سے ایسا کوئی مسئلہ میرے سامنے نہیں آیا ۔

Shri G. Hanumanth Rao : "Whether some cash payment was assured to the R.T.D. workers?"

اسکا جواب نہیں دیا گیا اور اسکے بعد ایم (ہ) کا بھی جواب نہیں دیا گیا ہے۔

شری دگمبر راؤ بندو - پریس نوٹ میں اسکی وضاحت کر دی گئی ہے۔ یہ واقعہ ہے کہ بونس کے طور پر نہیں بلکہ اسطرح اگر کچھ رقم مانگیں کہ ہم نے اکسٹرا ورک (Extra work) کیا ہے اسلئے انعام کے طور پر کچھ رلیف (Relief) دیا جائے تو میں نے کہا تھا کہ اسطرح رلیف دینے پر ہمدردانہ غور کیا جائیگا بشرطیکہ اسٹرائیک نہ کی جائے۔ اگر اسٹرائیک نہ کیجاتی اور گورنمنٹ کا تقریباً چھ سات لاکھ کا مالی نقصان نہ ہوتا تو اس پر اس نقطہ نظر سے جیسا کہ میں نے کہا تھا غور کرنا آسان تھا لیکن اب جبکہ گورنمنٹ کے مالی نقصان کا اندازہ (کیونکہ ابھی ڈیفینٹ (Definite) طور پر معلوم نہیں ہوا ہے) تقریباً ۶-۷ لاکھ ہے اگر یہ ہوتا تو کچھ نہ کچھ رلیف دینے پر غور کیا جاسکتا تھا۔ تاہم گورنمنٹ نے جس حد تک وعدہ کیا ہے وہ برابر عمل میں آئیگا۔

شری جی۔ہنمنت راؤ۔ ایم (ہ) کا جواب نہیں دیا گیا ہے یعنی

“Whether the Government have accepted some demands of the R.T.D. workers and given some assurances, but is still taking recourse to victimisation?”

شری دگمبر راؤ بندو۔ ہاں وکٹی مائیزیشن (Victimisation) کے بارے میں تو میں نے کہا ہے کہ ہمارے پاس اس قسم کی کوئی شکایت نہیں آئی۔ اگر انڈیو بچول کیس کے بارے میں گرفتاریوں اور سزاؤں کو وکٹی مائیزیشن سمجھا جاتا ہے تو یہ اور بات ہے۔ اس قسم کا وکٹی مائیزیشن تو برابر رہیگا۔

شری جی۔ہنمنت راؤ۔ کیا جو ڈیمانڈ ایکسپٹ (Accept) ہوا ہے اسکا امپلی منٹیشن (Implementation) ہوا ہے؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ ہاں امپلیمنٹیشن ہوا ہے۔

شری جی۔ہنمنت راؤ۔ کیا آپ نے یہ نہیں کہا تھا کہ فینانس منسٹر یہاں نہیں ہیں جب وہ باہر سے آئیں گے تو بونس کا کوئسچن ڈیل (Deal) ہوگا؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ میں نے کہا تھا کہ جانچ ہو رہی ہے اسکے بعد جو تصفیہ ہوگا اسکے مطابق عمل ہوگا۔

شری وی۔ڈی۔دیشپانڈے۔ جب لیبرس کی پوزیشن صاف ہو گئی کہ وہ سنہ ۵۱ و ۵۲ میں امپلائیز (Employees) تھے تو جسطرح دوسرے فیکٹریز کے امپلائیز نے بونس کا مطالبہ کیا ہے انہوں نے بھی کیا تو پھر اسکو قبول نہ کرنے کی وجہ کیا ہے؟ اگر قبول نہیں کیا گیا تو جسطرح دوسرے فیکٹریز کے امپلائیز کے مطالبہ کو قبول نہ کرنیکی صورت میں انکے کیس کو انڈسٹریل کورٹ (Industrial Court)

کے سپرد کیا جاتا ہے اسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی کے ایمرس کے مطالبہ کو بھی انڈسٹریل کورٹ کے سپرد کرنا چاہیے تھا ایسا نہ کرنے کی کیا وجہ ہے؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ اگر اس ڈپارٹمنٹ کی حیثیت ایک کارپوریشن کی ہوتی تو آنریبل ممبر جیسا کہہ رہے ہیں وہ درست ہوتا لیکن گورنمنٹ نے آر۔ ٹی۔ ڈی کو ایک ڈپارٹمنٹ کی حیثیت سے چلایا ہے ایسی صورت میں یہ سوال پیدا نہیں ہوتا کہ کسی فیکٹری یا کارپوریشن کے جیسا سلوک اسکے ساتھ بھی کیا جائے۔

شری وی۔ ڈی۔ دشیانڈے۔ آپ سے ریلوے رنگ اسٹاف (Railway Running Staff) کی تنخواہوں اور جوسہولتیں انکو دی گئی ہیں انکا حوالہ دیتے ہوئے یہ مانگ کی گئی تھی کہ وہی سہولتیں آر۔ ٹی۔ ڈی کے اسٹاف کو بھی مہیا کی جائیں۔ ریلوے کے افسروں کی پے (Pay) بھی بتائی گئی تھی۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا بجٹ ہمارے سامنے کیوں نہیں لایا جاتا۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ اس سلسلہ میں فنانس منسٹر جواب دے سکتے ہیں کہ کیوں اسکو شریک نہیں کیا گیا۔ میں نے دوسرے پراونس میں دریافت کیا تو معلوم ہوا کہ جس طرح ریلوے کا بجٹ ہاؤز کے ٹیبل پر رکھا جاتا ہے اسی طرح آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کا بجٹ بھی ہاؤز کے ٹیبل پر رکھا جاتا ہے اور عام طور پر اس پر ڈسکشن کیا جاتا ہے۔ جو عمل دوسری جگہ ہے یہاں بھی ہونا چاہیے۔ میں سمجھتا ہوں کہ فنانس ڈپارٹمنٹ آئندہ سال اس کا بجٹ بھی پیش کریگا یا کوئی اور طریقہ ہو سکتا ہے تو وہ اختیار کریگا۔ لیکن اس سے یہ نتیجہ نہیں نکالا جاسکتا کہ کارپوریشن نہ بننے پر بھی یہ تصور کر لیا جائے کہ وہ بن گئی ہے اور اسکے ساتھ وہی سلوک کیا جائے جیسا کہ کارپوریشن کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ جب تک اسکی پوزیشن ڈپارٹمنٹ کی ہے اسکے ساتھ ڈپارٹمنٹ کا سا سلوک کیا جانا ضروری ہے۔ گورنمنٹ اپنی اس پالیسی کے تحت اسکو چلائگی۔ البتہ گورنمنٹ یہ ارادہ ضرور رکھتی ہے کہ ریلوے رنگ ڈپارٹمنٹ (Railway Running Department) کی طرح اس کو چلایا جائے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چناکنڈور)۔ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے ملازمین پر مقلدات چلانے کے سلسلہ میں کیا آپ ایک امپلائر کی حیثیت سے اس پر سوچنے کیلئے تیار نہیں ہونگے کہ آپ کے ملازمین جو مقلدات کی پیروی کے سلسلہ میں جائینگے تو اس سے انکی کارکردگی اور افیشنس پر برا اثر پڑیگا اور انکی کارکردگی متاثر ہوگی؟ ان حالات میں کیا آپ مقلدات کو واپس لینے کے بارے میں نہیں سوچتے؟ یا آپ یہ سوچتے ہیں کہ چونکہ ایک مرتبہ معاملہ عدالت میں چلا گیا ہے اس لئے اپنی بات کو نبھانے کے لئے مناسب ہے کہ جو تصفیہ ہو وہ عدالت ہی سے ہو۔ لیکن تین سو ملازمین کا وقت واحد میں رخصت لینے سے جو نقصان ہو سکتا ہے اس پر غور کیا جاتا تو میں سمجھتا ہوں کہ ان مقلدات کو واپس لینے کے بارے میں سوچا جاتا۔

شری دگمبر راؤ بندو - اس نقطہ نظر سے نہ حکومت غور کر رہی ہے اور نہ غور کریگی - ہم یہ سمجھتے ہیں کہ جب کوئی آدمی جرم کا ارتکاب کرتا ہے تو ہر ایسے شخص کا مقدمہ عدالت میں جانا چاہیئے - اگر اس مقدمہ میں اصلیت نہیں ہے تو ظاہر ہے کہ وہ وہاں سے بری ہو جائیگا - عدالت اس کا فیصلہ کریگی - اور میں سمجھتا ہوں کہ یہی کارکردگی اور افیشینسی کو بڑھانے کا طریقہ ہے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ - ان تین سو ملازمین کے بار بار پیروی کے سلسلہ میں بھرنے سے آر - ٹی - ڈی - کا جو نقصان ہوگا اس کا ذمہ دار کون ہوگا ؟

شری دگمبر راؤ بندو - اس کے لئے گورنمنٹ ذمہ دار ہے -

شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ - اس کو بجٹ میں کیوں نہیں شریک کیا گیا ؟

شری دگمبر راؤ بندو - اس کا فیصلہ گورنمنٹ نے ابھی نہیں کیا ہے - گورنمنٹ تو یہ سمجھتی ہے کہ کارپوریشن بنانے سے کوئی فائدہ نہیں ہے بلکہ ایک بورڈ بنایا جائے - اس مسئلہ پر کمیٹی لیول (Cabinet level) پر غور کیا جا رہا ہے جو فیصلہ ہوگا اس کے مطابق عمل کیا جائیگا -

شری جی - ہنمنت راؤ - یہ کہا گیا تھا کہ اسٹرائک ختم ہوتے ہی غور کریں گے لیکن اب تک نہیں کیا گیا -

شری دگمبر راؤ بندو - میں اوس وقت ایسے پوزیشن میں نہیں تھا کہ میں ایسا کوئی اشورنس (Assurance) دیتا - میں نے مجبوری ظاہر کی اور یہ کہا کہ جب تک میں فنانس منسٹر سے کنسلٹ (Consult) نہ کر لوں اور وہ ایگری (Agree) نہ کر لیں میں کچھ نہیں کہہ سکتا - میں یہ نہیں بتا سکتا کہ فنانس منسٹر اس سے ایگری کریں گے یا نہیں اس لئے میں کچھ نہیں کہہ سکتا -

شری جی - ہنمنت راؤ - میں فنانس منسٹر کے بارے میں نہیں پوچھ رہا ہوں - آپ کے بارے میں پوچھ رہا ہوں کہ آپ نے وعدہ کیا تھا یا نہیں ؟

شری دگمبر راؤ بندو - ہوم سیکریٹری کے لیٹر میں جو اشورنس دیا گیا ہے اور اسٹرائک کے بعد جو اشورنس نوٹیفیکیشن کے ذریعہ دیا گیا ہے اس میں ان وعدوں کی وضاحت موجود ہے - اس اسٹرائیک کی وجہ سے گورنمنٹ کو کتنا نقصان آیا ہے اس نقطہ نظر سے بھی تو ہمیں غور کرنا ہے -

شری وی - ڈی - دیشپانڈے - کیا آپ نے نہیں فرمایا تھا کہ تین ڈیمانڈس (Demands) ر انٹرنل کوٹ کو پیجے گئے ہیں ان کو وٹھ ڈرا کر کے ہم آپس میں ہی غور کر لیں گے -

شری دگمبر راؤ بندو - ہاں - یہ تو اب بھی ہو سکتا ہے -

شری وی۔ ڈی۔ دیشیا نڈے - کیا آپ نے نہیں کہا تھا کہ یہ کیس عدالت سے واپس لئے لئے جائیں گے اور ہم خود اس میں طے کر لیں گے -

شری دگمبر راؤ بندو - ہاں - ہاں آج بھی یہ ہو سکتا ہے - لیکن اسمبلی میں سوالات کرتے رہنے سے یہ مسائل حل نہیں ہو سکتے تاوقتیکہ اس کے حل کرنے کے مناسب طریقے اختیار نہ کئے جائیں -

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Tuesday, the 6th October, 1953.